अक्षयरुद्रस्य समाधान सरिता

शंकराचार्यांश ब्रह्मानन्द अक्षयरुद्र

समर्पण

परब्रह्मस्वरूप

परमयोगेश्वरी माँ भुवनेश्वरी आद्यशक्ति

एवं

परम रसिकेश्वरी, प्रेममूर्ति,आनन्द स्वरूपा

एवं श्रीकृष्णप्राणाधिष्ठात्री श्रीराधा जी

के

श्री चरणकमलों में अद्वैत ज्ञानदाता

(श्री महादेव) प्रीत्यर्थे परम श्रद्धा सह

समर्पित

अक्षयरुद्रस्य

समाधान सरिता

श्रीशिवा चरणपादुका किंकर

शंकराचार्यांश ब्रह्मानन्द अक्षयरुद्र

(अंशभूत शिव राघौगढ़)

ॐ गुरवे नमः

गं गणपतये नमः

ॐ

नमो नीलकण्ठाय

तापत्रयाग्नितप्तानां अशान्तप्राणीनां भुवि।

गुरुरेव परा गंगा तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

....ॐ....

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै

बुधजनन्यै स्वाहा

माता पिता के श्री

श्रीचरणों में

अक्षयरुद्र अंशभूतशिव का

कोटी–कोटी नमन्।

यदि इस लेख को योग्य समझें तो ....

मैं क्या कहूं **शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी** और उनकी कृतियों के विषय में, वे तो स्वयं ही अद्वितीय हैं क्योंकि ऐसे महान व्यक्तित्व को पहली बार (जीवन में) निकटता से जानने का मौका मिला है। हमने ईश्वर को बुलाया था कुछ वर्ष पहले कि– ''आप आइए हमारे जीवन में, जिससे इस जीवन को पूर्णता प्राप्त हो सके'' जो कि हे शिवांश! आपके सान्निध्य से ही संभव हुआ है। उसी प्रार्थना का फल हैं **हमारे प्रभु! श्रीशंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी।**

जिन्होंने इंजीनियरिंग कॉलेज के थर्ड ईयर में मृत्यु से न डरकर सलकनपुर के घने वन में मध्यरात्रि में जाकर शिवजी के दर्शन व साक्षात्कार के लिए विषपान कर लिया हो और एक घडी की अर्धरात्रिवनमयी अश्रूधरा से दर्शन भी किए वह भी सतत् 4–5 घंटे...........अतः वे क्या होंगे और उनके कार्य क्या होंगे? आप भी समझ सकते हैं। वास्तव में हमें तो उनके प्रत्येक कार्य में प्रभु के कार्यों की महा सुगंध की अनुभूति होती है। यह हम पहले भी प्रजा को बता चुके हैं पुनः कह रहे हैं कि कृपया उनकी उपस्थिति का भरपूर लाभ उठायें। उनको एक पैसे का भी स्वार्थ नहीं वे बी.ई , एम.एससी. और बी.एड. होते हुए भी धन की इच्छा न करके ज्ञान विज्ञान, ईश्वर और हमारी सेवा में रात दिन लगे हैं। उनको पुस्तकों से जो भी लाभ होता है वह भी वे अध्यात्मिक कार्य में ही प्रयोग करते हैं उनके समाधान 24 घंटे ही हम सबके लिए उपलब्ध हैं। उन जैसा मिलनसार व्यक्तित्व दुर्लभ है। इस कृति में हम सबकी जिज्ञासाओं का सम्यक् समाधान प्रस्तुत है **प्रभु श्री शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी** की यह 20वीं कृति है जो अद्भुत और अद्वितीय है। इसमें बहुत गहराई से समग्र चिंतन प्रस्तुत किया है जिससे हर नर नारी उस चिंतन से लाभान्वित हों और अपने जीवन को धन्य बनाएं इस प्रार्थना के साथ

आपका

भगवंत दयाल बड़ोनिया गुना

समाधान सरिता

कोई जन्मजात वैराग्यवान होता है जैसे सनत्कुमार और शुकदेव आदि। कोई 50–55 की आयु के बाद संसार के कर्ममार्ग से इस्तीफ़ा देकर वानप्रस्थ सा जीवन जीता है वह भी अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक तथा हरि हर को समर्पित होकर मुक्त हो जाता है या कोई जनकल्याण के साथ भक्ति व जप तप भी करता है। कोई भयंकर नास्तिक होता है, पर प्रभु कृपा से किशोर काल में ही चमत्कारिक घटना से सदा के लिए ही विवेकानंद सा अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने वाला दिव्य और महान ऋषि के तुल्य बनकर विश्व का मंगल करता है। पर जो कोई भी हो उसके मन में अनेक प्रश्न उठते ही रहते हैं वे शान्त भी नहीं होते। और जीवन ही बीत जाता है। इस पुस्तक (अक्षयरुद्रस्य समाधान सरिता) में ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर हैं जिनके उत्तर जानकर जिज्ञासु निश्चित ही शान्त होंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

आपके और भी अनेक प्रकार के प्रश्न पहले ही अंतःकरण में उठ चुके थे जिनका समाधान हमने ईश्वर की कृपा से "आपके प्रश्न" पुस्तक तथा ""जिज्ञासा और समाधान" में यथासंभव किया है व भैरव गीता के माध्यम से भी अद्‌भुत नीलकंठ समाधान है। अब नवीन प्रश्नों के लिए एक और पुस्तक की रचना अनिवार्य जान पड़ी जो आपके समक्ष प्रस्तुत है। अतः सभी जिज्ञासु अपने अपने उत्तरों को जानें और विश्रान्तिसुख पावें।

दिनांक 19.09.2024

आपका शुभ चिन्तक

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र अंशभूतशिव

मध्यप्रदेश जिला गुना, तहसील राघोगढ

(9340–53–7971)

प्रश्न 1

अ.पहला मानव– महाराज जी ! मेरा मन संसार में नहीं लगता मैं विवाहित हूँ दो बच्चे भी पर अब शान्ति से तीर्थ स्थल पर रहकर भजन करना चाहता हूँ।

आ.दूसरा युवक – अक्षयरुद्र अंशभूतशिव जी ! मैं किशोर हूँ पर मोक्ष प्राप्त करने के लिए सब कुछ छोड़कर जाना चाहता हूँ विवाह भी नहीं करना चाहता पर इकलौता हूँ क्या करूँ यदि संत या गुरु की सेवा हेतु छोड़कर गया और माता पिता को कष्ट हुआ तो क्या पाप तो नहीं लगेगा ?

इ. तीसरी नारी–ब्रह्मानंद जी ! मैं एक नारी हूँ पर विवाहित हूँ मेरा मन अब संसार में नहीं लगता पर शुरु शुरु में शादी की बहुत इच्छुक थी , विवाहित हो गई एक पुत्री है पर मैं अब वृन्दावन जाकर मीरा सी सेवा भक्ति करना चाहती हूँ , पति भी मेरा सही नहीं शराब पीता है और परनारी भोग में लिप्त है क्या करूं ?????ये लगभग समान भाव लिए तीन भक्तों के 3 अनिवार्य महाप्रश्न हैं।

उत्तर– ऐसी स्थिति में आप घर में रहकर ही सुबह और शाम 1–1 घंटा भजन करें दिन को 5–6 घंटे परिवार संतान या बूढ़े माता पिता के लिए धनार्जन करें इस धनार्जन में आपका 1प्रतिशत भी स्वार्थ नहीं कहलायेगा । क्योंकि लक्ष्य माता पिता या बच्चें होंगे न कि स्वयं। हे गृहस्थ मनुष्य! जब आपकी आयु 48 के लगभग होगी तो वे माता पिता देह को छोड़ देंगे यह सुनिश्चित जान लो ......बस कुछ वर्ष उन दोनों में ही गौरी शंकर या गुरु संत आदि को देखकर सेवा करें। और जो पति हैं वे पुत्र पुत्री के लिए अपना दायित्व निभाएं पर पत्नी व संतान को छोड़कर न भागें। धनार्जन के साथ घर पर ही दो समय भजन के साथ में माता पिता की केयरिंग भी करें। जब आपके बच्चे बड़े हो जायें तो बच्चों की शादी करके निकल जाना। भले ही फिर कभी भी अक्षयरुद्र को कभी भी शक्ल मत दिखाना ऐसी गुफा में तप करना ..... जहाँ जाना हो चले जाना तब आप स्वतंत्र हो जाओगे। । बड़े ही आश्चर्य की बात है कि सब बूढ़े मैया बाप को या बच्चों को छोड़कर वृन्दावन या काशी भागना चाहते हैं। यह किसने ज्ञान दे दिया कि आधी रात में गृहस्थ आश्रम पर कुल्हाड़ी चलाकर भाग जाओ। जबकि छोटे छोटे बच्चे भी हैं। संतान पैदा करने का तो दैहिक सुख भोग डाला अब भोग का परिणाम (संतान) सामने आ गया तो काहे पलायनवाद सिद्धांत को अपना रहे हो। मन हो या न हो पर उनके लिए दायित्व निभाना ही होगा। शासन के कार्य रूपी सेवा सब चाहते

हैं , प्राईवेट नौकरी भी मिले तो कर लेते हैं और जो वैराग्य को प्राप्त हो जाये वह पत्नि या ब्रह्मचारी पुत्र तीर्थ की ओर भागते हैं अर्थात तीर्थ की सेवा भी अच्छी लगती है। पर पिता या बच्चों की सेवा ही बेकार लगती हैं। तथा पत्नी भी जो यह कह रही है मै तो हरिद्वार जा रही हूँ बच्चों को तो पति पाल लेगा यह भी महापाप है। ये पत्नी और किशोर पुत्र आजकल संतों की सेवा सदा करने को उत्सुक है पर घर पर रहकर पति या पिता की सेवा में आनाकानी करते हैं। यह अनुचित है।

हे किशोर ! यदि तुम्हारे दो तीन भाई हैं या एक भी अन्य भाई हो तो शौक से अपने वैराग्य को सार्थक करो जा सकते हो पहाड़ी पर तप करने ध्रुव की नाई....... घर पर अन्य भाई केयरिंग कर ही लेगा। पर अकेले ही हो तो मत जाओ। बाद में जाना । कब .... ? जब कि आपके माता पिता चिता की ढेरी पर सो जायें।

जिन्होनें इतने जतन से 18–19 साल तक पाला पोशा उनको दर दर ठोकर खिलाने के लिए छोड़कर जाना कौन से शास्त्र में पढ़ डाला । लगता है कि

1. इन लोगों का मानना है कि जॉब से धन मिलेगा ....

2. संत सेवा से भगवान प्रसन्न होकर खुशियां और परमधाम या मोक्ष देंगे। ....

3. पर पति या बाप की सेवा से कुछ नहीं मिलने वाला ये माता पिता या पति तो नाचीज या गौण हैं । ऐसा वे मुर्ख सोच बैठे।

✍——————————————————————

लेकिन इन लोगों को पता नहीं कि पति की सेवा से भगवान हरि साक्षात दत्तात्रेय बनकर पुत्र रूप में ही आंगन में खेलते हैं और पिता की सेवा से मनुष्य गणपति पद के समान प्रथम पूजित हो जाता है। त्रिदेव भी उस पुत्र को पूजते है।

✍——————————————————————

1. अरी नारियों ! आपका पति जब तक जीवित है तब तक संत के पास कभी कभार तो जा सकती हो पर पति और बच्चों को छोड़कर सदा के लिए नहीं जा सकती; पति मर जाये तो शौक से संतों या तीर्थों की सेवा में जाओ।
2. पति पातकी है पर संतान भी पैदा हो गई है ऐसे में संतान को छोड़कर जाना हमारे अनुसार पाप है,

3. यदि संतान न होती तो पति को छोड़कर जा सकती थी अथवा धनार्जन कर सको, बच्चों को अच्छी तरह पाल पोष सको साथ मे कमाई भी कर सको तो संतान को साथ लेकर अन्यत्र जा सकती हो ।
4. पातकी पति को छोड़कर जाने में दोष नहीं ऐसी भागवत जी की भी आज्ञा है।
5. पर जिनका पति ठीक ठाक औसतन ठीक हो और एक दो बच्चें हो तो उस घर को छोड़कर जाना पाप ही है। ऐसी नारी मीरा बनने का न सोचे। घर संभालो। और पति बच्चों की सेवा करो।
6. तीर्थ में रहने का जो फल है वही फल स्त्री को पति व संतान के साथ रहकर यथासंभव सेवा से मिल जाता है।
7. पति व बच्चे हो तो तीर्थ में अकेले सदा के लिए जाना अपराध ही है। मीरा का तो पति ही मर गया था और बच्चे थे नहीं।
8. और हे किशोरों! युवकों ! पुनः सुनों –आपने यदि संन्यास का संकल्प न लिया हो और घर में ही हो तो सुनें – यदि आप इकलौते हैं तो भले ही विवाह मत करो पर जब आपके माता पिता मर जायें तो ही नारद की भांति घर–परिवार सब कुछ दान में करके चले जाना। तब हम नहीं टोकेंगे............
9. और जो विवाहित जीवन में आ गए उनको घोर वैराग्य आ जाये तो भी बच्चों की शिक्षा व विवाह कराकर ही पलायन करें तदोपरांत भले ही तप करें या अखंड ब्रह्मचर्य के साथ 15–20 पुरश्चरण।

पर धर्म को संकीर्ण मत समझो। माता पिता बहुत से बहुत कितने साल तक जियेंगे अधिक से अधिक 70–75 तक ; तदोपरान्त कौन मने करेगा आपसे जो भी अच्छा लगे करना।

प्रश्न 2–

एकाध कटु सच्चाई बतायें कृपा करके ?

उत्तर–

इस अध्याय से दोनों विचारपंथी रो सकते हैं पर भयंकर कटु सच्चाई बता रहे हैं इस कारण सांझ ढलेगी तेरी भी पुस्तक में इस अध्याय का नाम अश्रु अध्याय है। जो लोग ब्राह्मण से ईर्ष्या करके समदर्शी शब्द का प्रयोग करते हैं और कहते हैं कि सब कुछ समान है ..

वे क्या इन दो बातों का पालन कर सकते हैं?

1.........अपने वर्ण या अपनी जाति से अन्य हीन जाति या अन्य समाज में अपनी बेटी की शादी कर सकते हैं क्या ? कर सकते हैं तो अपनी पुत्री के प्रेमी को धमकाते क्यों हैं जबकि वह प्रेमी (अच्छी खासी जॉब भी

कर रहा होता है) क्यों नहीं करवा देते प्रेम विवाह...... जब आप लोग जात पात या वर्ण मानते ही नहीं और ब्राह्मण शब्द भी मात्र कर्म से मानते हो तो इस समय जातपात की याद काहे आ जाती है।

2........20–25 साल तक विप्रो की निन्दा करेंगे पर 26 साल बाद अपनी संतानों की शादी में उत्तम पंडित व उत्तम वामन ढूंढते हैं न कि अन्य से मंत्र पढ़वाते हैं।.. ऐसा काहे... करते हो भैया !!! किसी भी वर्ण के विद्वान से वेदमंत्र काहे नहीं पढ़वा लेते ....

है न आश्चर्य। ।।।देखिए भाई हम भी सम्यक् भावी हैं पर यह भी जानते हैं कि जिस काम में जो दक्ष हो उससे ही कार्य कराना चाहिए अतः कर्मकांड का भयंकर अभ्यास अधिकांशतः ब्राह्मणों को ही होता है और वे ब्राह्मण गायत्री का एक पुरश्चरण अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक करके तथा संध्यापूत होने से कर्मकांड के अधिकारी व महान फल देने वाले हो जाते हैं। पर यदि वह ब्राह्मण महामूर्ख या अपात्र हो .... तो ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार उसे न बुलाये यह भी शास्त्र विधान है।

पर...........अपात्र ब्राह्मण कौन ?

उत्तर–

1. जो कम से कम तीन दिन से अधिक संध्या का लोप कर चुका हो।
2. जो मदिरा पान करता हो।
3. जो किसी की पत्नी से रतिभोग करने में मस्त हो।
4. जिसे गायत्री के 24 अक्षरों के देवताओं और ऋषियों का भान न हो।
5. जो सूर्योदय तक भी खर्राटे मारकर सोता हो।
6. जो कंठी व शिखा या यज्ञोपवीत से हीन हो।
7. जिसे संस्कृत पढ़ना ही न आता हो ऐसा ब्राह्मण अशुद्ध उच्चारण से यजमान को नरक ले जाता है।
8. अपात्र ब्राह्मण को दान देने से उसके परिवार का नाश होता है कैसे होता है यह हम हमारी पुस्तक ब्राह्मण गीता में लिख चुके हैं। और उसमें यह भी लिखा है कि कौन सा ब्राह्मण अपनी 101 पीढ़ी को नरक में डालता है और कौन सा 1000 पीढ़ी को मोक्ष दिलवाता है।

प्रश्न– 3

हे अक्षय रुद्र जी ! एक वैकेंसी निकली थी उसे वैकेंसी में 200 पद थे परंतु मेरा सिलेक्शन क्यों नहीं हुआ ? मैं भगवान नारायण को बहुत सारी वस्तुओं का चढ़ावा भी बोल चुका था और सत्यनारायण कथा की तर्ज पर भी कहा था कि मैं ऐसा करूँगा वैसा करूँगा पर....लगता है कि भगवान सत्ययुग या त्रेतायुग में ही सुनते थे। और दूसरी बात मेरी प्रेमिका का विवाह भी किसी अन्य पुरुष से हो गया पर मैने राधा रानी को बहुत कुछ समर्पित करने का वचन दिया था।

उत्तर–

200 पद थे और पाँच लाख बंदकपकंजमे सोचो सब क्या मूर्ख थे जो उन लोगों से चढोत्तरी न बोली हो। 500000 विद्यार्थियों ने ही सत्यनारायण कथा के बल पर बोला था कि मैं 10 ग्राम सोना या 100 ग्राम सिल्वर मंदिर में दूंगा किसी ने कहा 1000 गायों को 4–4 रोटी खिलाऊँगा किसी ने बोला नौकरी के 4साल होने पर एक गरीब कन्या का कन्यादान करूँगा....... सबने कुछ न कुछ बोला था। अब बताओ जगन्नाथ ही कन्फ्यूजन में पड़ गए कि किसको फैल करें ताकि 200 बच्चें ही बचे।

तब लक्ष्मी देवी से पूछा कि – देवी ! मैं धर्म संकट में फंस गया हूँ 200 पद हैं और मनोकामना या अनुष्ठान का वचन देने वाले 500000 । अब तुम ही बताओ मैं जिसको बाहर कर दूँगा वह मुझे गाली ही देगा। और उन सभी में से 200 की चढोत्तरी तो कन्फर्म हो ही चुकी। मैं कुछ करूँ या न करूँ 200 बेरोजगार तो रोजगार पाने से धर्म का आंशिक कार्य (जो भी बोला गया था) निश्चित ही करेंगे और जो 200 नौकरी के बाद भी वचन को विस्मृत कर वचन भंग करेंगे उनको दण्ड विधान है ही फिर भले ही मैं उनकी सुनूँ या न सुनूँ। पर वचन देकर वचन पालन तो उनको करना ही होगा तथा 200 का चुनाव होना ही है बताओ हे चिक्लीत की माता ! मैं क्या करूँ ? हे अक्षयरुद्र अंशभूतशिव द्वारा पूजित महालक्ष्मी स्वरूपा मैं क्या करूँ ?

तब देवी ने कहा – यह पृथ्वी लोक है भगवन्! उनके अनुष्ठान के बल पर या चढ़ावे का सोचकर आप किसी पात्र और महापुरुषार्थी बच्चे को अनुत्तीर्ण करोगे तो उसका दण्ड भी आपको किसी न किसी रूप में भोगना होगा कर्मफल मनुष्य या 33 देवता तो क्या त्रिदेव भी भोगते हैं अतः जो जो पुरुषार्थ किये हैं आप उस पुरुषार्थ पर ही ये सब छोड़ दो । पर ये 200 यदि सेलेक्ट होते हैं तो वे यदि यह समझें कि हम नारायण के बल पर सेलेक्ट हुये हैं तो उनको भक्ति भी प्रदान करें तथा उत्तरोत्तर प्रगति भी । तथा जो असफल हो जायें और गाली दें आपको तो वे निश्चित ही महास्वार्थी जानें जायेंगे वे आपकी कर्म व्यवस्था पर शक संदेह से पाप का फल भागेंगे वे मूर्ख यह क्यों नहीं समझते कि – ईश्वर आपके चढ़ावे की वस्तु के लोभ में तो नहीं आ सकते , वे भगवान किसी बुद्धिमान या परम पुरुषार्थ करने वाले 7–8 घंटे पढने वाले बच्चे को लात मारकर सूची से बाहर तो नहीं कर सकते। या पूर्व जन्म के सुप्रारब्ध वालों को धक्का तो नहीं दे सकते। अतः उन मंदभाग्य वाले लोगों को यह समझना होगा। कि 5 लाख बच्चों में सफल 200 बच्चों का भी परम प्रारब्ध भी हो सकता है।

पर हाँ यदि वे इस जन्म में घोर तप या छः माह अथवा एक वर्ष की साधना विधि विधान से करें तो मैं निश्चित ही कुछ पद (10–20) उन अति महत्वपूर्ण साधकों के लिए बड़ा सकता था। पर सभी ने चड़ी चोट पर मांगा न कि पहले से ही साधना की और न ही पुरुषार्थ किया।

और रही प्रेमिका की बात तो सुनो–

प्रेमिका की प्राप्ति हेतु आप दोनों में से जिसका भाग्य अधिक प्रबल था उसको मिल गई अतः कुछ भी पाना हो तो भाग्य को बलिष्ठ बनाओ। बिना बलिष्ठता के रोते ही रहोगे।

प्रश्न 4

आज कुछ यथार्थ पराविज्ञान दीजिए हे शिव स्वरूप अक्षयरुद्र जी ?

उत्तर – सुनें अब यथार्थ– जिस स्त्री या पुरुष को आत्मबोध हो जाए और जिससे वह शिवोऽहम् में स्थित हो गया हो उस पुरुष या नारी रूप को व उसकी आत्मा को कोई भी कर्म शेष नहीं रह जाता। पर ऐसे नर नारी न तो किसी देवता के दर्शन चाहते हैं न ही देवी के न ही जप तप व्रत–उपवास करते हैं न ही पत्थर मिट्टी कि मूर्ति बनाते हैं न ही अर्चना करते हैं न ही किसी के वियोग में रोते हैं न ही किसी भी रूप के दर्शन के लिए तड़पते हैं। वे न तो ब्राह्मण हैं न ही शूद्र। वे तो वर्णातीत ब्रह्म ही हैं वे तो गुणातीत ब्रह्म ही हैं। ऐसे ब्रह्मज्ञानी न तो किसी की अर्चना करते हैं न ही स्वयं की पूजा चाहते हैं। न ही किसी को नमस्कार करते हैं न ही उनको द्वैत भासता है। पर हाँ इस लौकिक जगत में झूठमूठ लीला अवश्य करते हैं। ऐसे अवधूत ही कहे जाते हैं और अवधूत उपनिषद के अनुसार वे परब्रह्म ही हैं वे चाहे शिखा काटकर फेंक दें या जनेऊ गंगा में स्वाहा कर दें वे चाहे धारण करें या न करें वे मुक्त ही हैं।

अतः ऐसी स्त्री चाहे वेद की ऋचा रचे (देवी सूक्त जो ऋग्वेद का है वह भी ऐसी ही नारी आवरण वाली आत्मा ने रचा है न कि उसे आकाश में दिखा) चाहे लोक कल्याण के लिए सुलभा सा अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन यापन करें .. वह मुक्त ही है वह कुछ भी कर सकती है और न भी करे तो उसे करने की आवश्यकता है भी नहीं।

नोट – इस विश्व में जो जो इस पराविज्ञान के कारण सोऽहम् महावाक्य से अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ हो गए उन ब्रह्मनिष्ठों को लौकिक नर नारी न समझें। इसी में चारों आश्रमों के लोगों की भलाई है। चुपचाप अपनी साधना पर फोकस करे। हम फलाने गौत्र के या फलाने वंश के हैं यह कुटिचक्र संन्यास धारक हैं और तुम स्त्री या वर्णसंकर आदि आदि...... यह सब ओछी सोच न रखें

कोई आपको   नमस्कार करे यह भाव भी न रखें। – सोऽहम्

प्रश्न 5

गाय के घी व दूध से कौन तृप्त होता है?

1.इनके दहीसे समस्त देवता,

2.दूधसे भगवान् शंकर,

3.घृतसे अग्निदेव तथा

4.खीरसे पितामह ब्रह्मा तृप्तिका अनुभव करते हैं।

5. इनके पञ्चगव्यके प्राशनसे अश्वमेधयज्ञका पुण्य प्राप्त होता है।

प्रश्न 6

राज्य प्राप्ति मंत्र और आयुष्य प्राप्ति मंत्र बताएं ?.

उत्तर–

ॐ नमो भगवते वराहाय भूर्भुवः स्वः पतये भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा।'– यह वराह भगवान् का मन्त्र है। इसका पञ्चाङ्गन्यास इस प्रकार है –

'ॐ नमो हृदयाय नमः ।

भगवते शिरसे स्वाहा।

वराहाय शिखायै वषट् ।

भूर्भुवः स्वः पतये कवचाय हुम्। भूपतित्वं मे देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट् ।'

इस प्रकार पञ्चाङ्ग– न्यासपूर्वक वराह–मन्त्रका प्रतिदिन दस हजार (10,000 अर्थात 100 माला नित्य) बार जप करनेसे मनुष्य दीर्घ आयु तथा राज्य प्राप्त कर सकता है ॥

प्रश्न 7

क्या ब्रह्मविद , प्रवचन आदि सौम्य कर्म ही स्वभाविक रूप से करते हैं अथवा किसी भी तरह के कर्मो में प्रवृत्त हो सकते है ?

उत्तर–

ब्रह्मनिष्ठ पात्रता देखकर अपनी शरण में आये जिज्ञासुओं को शान्त करते हैं। यह ब्रह्मनिष्ठता परम लक्ष्य है पर इस पर पहुंचने के लिए 99.999 प्रतिशत लोगों को द्वैतात्मक पथ पर कदम रखना पड़ता है तभी उसका चित्त इतना निर्मल हो पाता है कि वह समझ सके कि हरि या शिव क्या सोचते हैं या उनका तद्भाव कैसा है अन्यथा सभी मात्र दास पद तक ही सीमित रहते हैं। पर दासत्व को अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक लगभग 12 वर्ष हो गया हो तो जीवत्व के क्षय के लिए अवधूत उपनिषद या अवधूत गीता या अष्टावक्र गीता जैसे महाग्रंथ मनुष्य को समझ में आने लगते हैं। कामकामी, अतिभोगी , स्त्रीलम्पट पुरुष या परपुरुष गामी कुलटा नारियाँ यथार्थ पराविज्ञान कभी भी नहीं समझ पाते। उनकी पूजा पाठ भी मात्र धन पद या यश तक सीमित होता है। वे अपने आत्मबोध से अनभिज्ञ ही रहते हैं। दुखालय जगत के कारण मुमुक्षुत्व या संसार से उपरति होने पर ही यथार्थ अध्यात्म का श्रीगणेश होता है शेष सब बाते एल.के. जी. यूकेजी के बच्चों के पाठ्यक्रम की तरह हैं।

वे साधारण मनुष्य को पहले निष्पाप करने के लिए जप तप व्रत–उपवास की आज्ञा देते हैं या संतों की सेवा की आज्ञा। नैष्ठिक संत या ब्रह्मनिष्ठ की सेवा से अतिशीघ्र पापों का क्षय होता है पर तीर्थ स्थल पर रहकर जप तप व्रत–उपवास से देरी से। अतः मनुष्य को श्रीमद्देवीभागवत महापुराण की देवी गीता के श्लोकों के सम्यक् ज्ञान को समझना चाहिए जिसमें ब्रह्मनिष्ठ का माहात्म्य है। वे ब्रह्मनिष्ठ मुमुक्षु को ही स्वबोध कराते हैं। सकामी को नहीं।

प्रश्न 8

ब्राह्मण कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर– ब्राह्मण अनेक प्रकार के होते हैं सभी समान भी नहीं होते।

एक पुराण में आठ प्रकार के ब्राह्मणों का वर्णन है जो सभी जन्मजात होते हैं पर अलग अलग कर्म व अलग अलग तपस्या या कम ज्यादा जप तप व्रत–उपवास के कारण अलग अलग फलदायक हैं पर इन आठों प्रकार के ब्राह्मणों में जो संध्यापूत न हो उसको शूद्र समझकर प्रणाम भी न करें न ही कर्मकांड के लिए बुलाऐं ऐसा भी वर्णन ब्रह्म वैवर्त पुराण व पद्म पुराण में है। और संध्यापूत होने पर भी जो क्षणभंगुर दैहिक सुख के लिए परायी नार के साथ हमबिस्तर हो चुका वह भी महापापी और पतित ब्राह्मण की संज्ञा पाने से नमस्कार के योग्य नहीं। पर जो ब्राह्मण 1 वर्ष तक अखंड ब्रह्मचर्य व हविष्यान्न भक्षण पूर्वक गायत्री की नित्य 10 माला कर चुका हो वह श्रेष्ठ है इससे भी अधिक श्रेष्ठ वह है जो 2 वर्ष अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक यह जप कर चुका हो इसी क्रम में वह ब्राह्मण अद्भुत और महान है जिसने कम से कम 6 वर्ष से लेकर 12 साल तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक गायत्री का जप किया हो जैसे – उदाहरण– (किसका नाम लें आप ही समझ जाओ) ऐसे ब्राह्मण का आशीर्वाद ही फलता है। कामी , क्रोधी , शिखाहीन, संध्याहीन व परनारलम्पट ब्राह्मण को तो आशीर्वाद का अधिकार ही नहीं । पद्म पुराण और स्कन्द पुराण में तथा श्रीमदेवीभागवत महापुराण में ब्राह्मणों की अत्यधिक महिमा है पर जिस ब्राह्मण ने धर्म का त्याग कर दिया हो वह ब्राह्मण चाण्डाल से भी नीच गिरा हुआ अधम ब्राह्मण है। चाण्डाल ब्राह्मण, शूद्र ब्राह्मण, वैश्य ब्राह्मण और क्षत्रिय ब्राह्मण तथा ब्राह्मण ये भी ब्राह्मण के भेद हैं।

संध्यापूत ब्राह्मण पिता और पतिव्रता ब्राह्मण स्त्री की संतान ही ब्राह्मण कहलाती है। पर जो पिता संध्यापूत न होने से शूद्र पद को पा गया हो वह भले ही पतिव्रता पत्नी से संसर्ग करके संतान को उत्पन्न कर ले पर वह संतान ब्राह्मण नहीं कहलायेगी क्योंकि ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार उस संतान का पिता मदिरापान या परस्त्रीगमन या संध्याहीनता से गर्भाधान के समय

ब्राह्मण न होकर शूद्र हो गया था । अतः उत्तम ब्राह्मण का आशीर्वाद ही लें। पतित ब्राह्मण के आशीर्वाद से नष्ट हो जाओगे वह संध्यापूत न होने से स्वयं नवग्रह का शिकार है।

प्रश्न 9

क्या पशु भी गंगा स्नान से निष्पाप होते हैं?

उत्तर– हाँ , और यदि किसी पशु या पक्षी की तीर्थो में मृत्यु हो तो वे मोक्ष भी अवश्य ही पा लेते हैं इसमें संदेह नहीं! इसका एक कारण है कि वे पक्षी या पशु शापित साधक होते हैं जो किसी गलती के कारण

तीर्थो में पशु बन जाते हैं और उच्च स्तरीय शापित साधक पक्षी तीर्थ में मरते हैं और सामान्य पक्षी अन्य क्षेत्र की मौत को प्राप्त होते हैं।

लोगों को यह कहते बहुत सुना है कि व्रत से यदि पाप नष्ट होते तो बकरी ऊंट आदि पत्र भक्षी या फलभक्षी पक्षी निष्पाप हो जाते और कुछ मूर्ख यह भी कहते है कि यदि भस्म या मिट्टी लगाने से शिव जी प्रसन्न होते तो सभी बैल या गधा मोक्ष पा जाते पर सत्य तो यह है कि जल थल आदि में रहने वाले साधारण प्राणियों को सामान्य क्षेत्र में पुण्य नहीं मिलता पर पाप कभी नही लगता।

प्रश्न 10

इस भूमि पर कब गंगा स्नान सर्व श्रेष्ठ है?

उत्तर– कृष्णपक्ष में षष्ठी से लेकर पुण्यमयी अमावास्या तक दस दिन, गंगा पूजन व स्नान के लिये सर्वश्रेष्ठ हैं।

1. पक्षों के आदि अर्थात् कृष्णपक्ष में षष्ठी से लेकर पुण्यमयी अमावास्या तक दस दिन गङ्गाजी इस पृथ्वी पर निवास करती हैं।
2. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से दस दिन तक वे स्वयं ही पाताल में निवास करती हैं फिर
3. स्वर्ग में, शुक्लपक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पञ्चमी तक जो दस दिन होते हैं, उनमें गङ्गाजी सदा स्वर्ग में रहती हैं इसलिये इन्हें 'त्रिपथगा' कहते हैं,

सत्ययुग में सब तीर्थ उत्तम हैं। त्रेता में पुष्कर तीर्थ सर्वोत्तम है, द्वापर में कुरुक्षेत्र की विशेष महिमा है और कलियुग में गङ्गा ही सबसे बढ़कर है। कलियुग में सब तीर्थ स्वभावतः अपनी–अपनी शक्ति को गङ्गाजी में छोड़ते हैं, परंतु गङ्गादेवी अपनी शक्ति को कहीं नहीं छोड़तीं। गङ्गाजी के जलकणों से परिपुष्ट हुई वायु के स्पर्श से भी पापाचारी मनुष्य भी परम गति को प्राप्त होते हैं। नारद पुराण उत्तर भाग अध्याय 38 में आगे बताया गया है कि–गङ्गाजी के जल से एक बार भक्तिपूर्वक कुल्ला कर लेने पर मनुष्य स्वर्ग में जाता और वहाँ कामधेनु के थनों से प्रकट हुए दिव्य रसों का आस्वादन करता है। जो शालग्राम शिला पर गङ्गाजल डालता है, वह पापरूपी तीव्र अन्धकार को मिटाकर उदयकालीन सूर्य की भाँति पुण्य से प्रकाशित होता है। जो पुरुष मन, वाणी और शरीर द्वारा किये हुए अनेक प्रकार के पापों से ग्रस्त हो, वह भी गङ्गाजी का दर्शन करके पवित्र हो जाता है इसमें संशय नहीं है।

जो सदा गङ्गाजी के जल से सींचकर पवित्र की हुई भिक्षा ग्रहण करता है, वह केंचुल का त्याग करने वाले सर्प की भाँति पाप से शून्य हो जाता है। हिमालय और विन्ध्य के समान पापराशियाँ भी गङ्गाजी के जल से उसी प्रकार नष्ट हो जाती हैं, जिस प्रकार भगवान् विष्णु की भक्ति से सब प्रकार की आपत्तियाँ। गङ्गाजी में भक्तिपूर्वक स्नान के लिये प्रवेश करने पर मनुष्यों के ब्रह्महत्या आदि पाप 'हाय–हाय' करके भाग जाते हैं। जो प्रतिदिन गङ्गाजी के तट पर रहता और सदा गङ्गाजी का जल पीता है, वह पुरुष पूर्वसंचित पातकों से मुक्त हो जाता है। जो गङ्गाजी का आश्रय लेकर नित्य निर्भय रहता है, वही देवताओं, ऋषियों और मनुष्यों के लिये पूजनीय है। प्रभासतीर्थ में सूर्यग्रहण के समय सहस्र गोदान करने से मनुष्य जो फल पाता है, वह गङ्गाजी के तट पर एक दिन रहने से ही मिल जाता है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

प्रश्न 11

अक्षय रुद्र जी ! की कितनी बार संभोग करने पर समाधि लगेगी क्योंकि ओशो ने कहा है कि संभोग से समाधि लगती है? मैं हर 15 दिन में ओशो की आज्ञा का पालन करने का प्रयास कर रहा हूँ और 25 वर्ष से पालन कर रहा हूँ पर रजनीश ओशो ने निश्चित संख्या नहीं बताई। पर संदेह हो रहा है कि संभोग से समाधि लगती है । क्योंकि मेरी पत्नी को भी समाधि नहीं लगी और मेरे दादा जी भी गृहस्थ थे वे भी मर गए पर उनमें समाधि का एक लक्षण भी नहीं दिखा। यदि अष्टांग योग रूपी मार्ग पर चलने से समाधि लगती है तथा योनी भोग अर्थात सहवास (संभोग)से भी ; फिर कठोर नियम(रूपी यम नियम धारणा प्रत्याहार आदि) कौन करें ?संभोग ही सरल और सहज है और क्षणभंगुर दैहिक सुख भी देने वाला है।

चक्रधर सिंह (परिवर्तित नाम) आयु 48 वर्ष

उत्तर– हम तो नैष्ठिकब्रह्मचर्य का पालन कर रहे हैं महादेव की आज्ञा से तथा रुद्र पद के लिए अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक 3 करोड़ बार पंचाक्षरी का महा पुरश्चरण भी करना है।

हमें संभोग से समाधि अभी नही लगाना। न ही पता है कि संभोग की किस विधि से समाधि लगती है हमारा मानना है कि हरि चरणों का सतत् दर्शन से या शिव रूप को देखने से ही समाधि लगती है तथा अद्वैतात्मक सिद्धांत पर एकत्व ही यथार्थ समाधि है या योगवसिष्ठ से ज्ञान की पंचम भूमिका ही समाधि है। हम अविवाहित हैं अतः आप किसी कॉलोनी में सर्च अभियान चलाओ कि – इस कालोनी में 3000 लोग रहते हैं जिनमें 400–500 पति हैं तो किन किनको संभोग से समाधि लगी।

भाई ! हमारे मोहल्ले में भी सभी गृहस्थ हैं पर वे 99 फीसदी लोग 55 के होने पर भी सम्यक् आत्मदर्शन नहीं कर पाये और गृहस्थ हैं तो संभोग भी करते ही होंगे और अधिकांश चिता पर भी लेट गये पर हमसे किसी न नहीं बोला कि बेटा ! अक्षयरुद्र! तू संभोग के साधन अर्थात् नारी की योनी का वरण कर तभी समाधि लग पायेगी।.......... अपितु सबने यही बोला कि – हे अक्षयरुद्र हम जीवन से थक गए हैं अतः हमारा उद्धार करो हे नैष्ठिकब्रह्मचारी! हम अशान्त चित्त हैं हम घर गृहस्थी के सारे भोग विलास भोग चुके इसमें सुख और दुख सब कुछ मिला पर हे शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र! हमें तद्भाव नहीं मिला और न ही यह समझ आया कि – अपरोक्ष ज्ञान क्या होता है। अतः हे शिवांश लगता है कि अखंड ब्रह्मचर्य ही सब कुछ है यही तपोलोक या महर्लोक सहज देगा।

प्रश्न 12

जप शब्द कैसे बना ?

उत्तर–

ज =जकारो जन्मविच्छेदः

प =पकारः पापनाशकः ।

तस्माज्जप इति प्रोक्तो जन्मपापविनाशकः ॥

'जन्म और जन्मके हेतु पापका नाश करनेके कारण 'जप' कहा जाता है।'

(आग्नेयपुराण)

प्रश्न 13

महाराज जी! क्या आप शिष्य बनाना शुरू कर दिए है?

उत्तर–शिव या अद्वैतवादी परात्पर ब्रह्म के लिए क्या शेष और क्या अशेष । पर

हम दीक्षा नहीं देते।यह महा बंधन है; लेकिन कोई अति से भी अति बार बार प्रार्थना करे तो यह शिव रूप अक्षयरुद्र देवताओं को भी शाम्भवी दीक्षा दे सकता है और मंत्र दीक्षा भी।

पर हमसे दीक्षा लेना इतना आसान नहीं। हम 99प्रतिशत प्रयास करते हैं कि लोग हमसे दीक्षा न लें। और 10–15 कठोर नियम भी बताते हैं पर वे सब मान्य हो उसके द्वारा तो अंत में श्रीशिव नीलकण्ठ गुरु देव से आज्ञा लेकर दे ही देते हैं। अभी तक 400–500 भक्त दीक्षा का आग्रह कर चुके पर मुश्किल से 40–41 शिष्य ही दीक्षापद के अधिकारी हुए। वैसे हम अधिकांशत पुरी पीठाधीश्वर या स्वामी श्री राजेन्द्र दास महाराज के पास जाने का कहते हैं। ये महान गुरु हैं। और भी हैं पर हमारे प्रसार प्रचार में ये दो नाम ही सबसे अधिक हैं।

प्रश्न–

स्वामी जी। एक प्रश्न है। क्या कोई तपस्या की परम पराकाष्ठा पार करके कृष्ण बन सकता है। मतलब जितनी शक्ति कृष्ण मे है उतनी शक्ति उस प्राणी में प्रकट हो सकती है। –बी.के.एस. जी !

उत्तर– बी.के.शुक्ला जी ! शक्ति तो आ जाती है एक गुप्त विद्या भगवान ने ही कही है कि इस विद्या से मेरे समान बल पराक्रम और संपूर्ण आध्यात्मिक वैभव और ऐश्वर्य आदि आ जायेगा और मैं जब तक रहूँगा तब तक वह (विद्या सिद्ध करने वाला) रहेगा। और साक्षात् ब्रह्मस्वरूप कहलायेगा। लेकिन–लेकिन वह सिद्ध भक्त (उनका संपूर्ण वैभव पाकर भी) भी सदा तक इन परब्रह्म श्री कृष्ण का शिष्य ही कहलायेगा।

क्योंकि वह विद्या देने वाले ये साक्षात् श्रीकृष्ण ही हैं अथवा वह मंत्र उनका ही था। पर हां वह अनेक सृष्टियों की रचना कर सकेगा । पालन और संहार भी। उसके हृदय की बात यही होगी कि वह श्रीकृष्ण जी का दास ही है । पर हाँ जगत के लिए वह साक्षात ईश्वर ही होगा। (यह रहस्य कि मैं भगवान श्रीकृष्ण जी का दास हूँ ....यदि वह अनेक कल्पों के बाद किसी को बतायेगा भी तो भी लोग उसको अपनी लीला ही समझेंगे कि –"आप हे अक्षयरुद्र

और श्रीकृष्ण एक ही हैं”पर हमको पता है कि हम यथार्थ में यह सब उनकी ही परम कृपा से पाये हैं।

पर जगत नहीं मानेगा।

आज भी सभी का सामर्थ्य

गुरुता में समान नहीं।

पर लोग सभी देवों की शक्ति समान देखकर सभी को एक ही समान गुरुत्व धारी समझते हैं पर यथार्थ में इनका भी क्रम भेद है। सभी के पास समान पावर नहीं। पर विशेष भक्त निश्चित ही वही सब कुछ पा लेता है जो ब्रह्म के साकार रूपों के पास है ।

एक भक्त का प्रश्न– क्या स्वर्ग में भी स्त्री–संग्रहण या स्त्रीसुख होता है।

उत्तर– बिल्कुल होता है।

स्वर्ग में सकामी पुण्यात्मा भोग के लिए ही जाते हैं। पर वैकुण्ठ और शिवलोक में स्त्रीसुख (संसर्ग सुख) कभी नहीं मिलता वहाँ इसी कारण मात्र जितेन्द्रिय संन्यासी या जितेन्द्रिय गृहस्थ ही पहुंच पाते हैं जो भोगभाव वाले हैं वे एक दो कल्पों के बाद (उनकी मनोदशा देखकर भगवान द्वारा) वापस धरती पर भेज दिये जाते हैं पर एक क्रम होता है पहले ब्रह्मलोक, फिर जनलोक और तपोलोक आदि फिर नीचे के दस स्वर्गीय मंडल में भोग तदोपरान्त धरती के अन्य द्वीपों में 10000 वर्ष वाले महामानव तदोपरान्त जम्बूद्वीप के भोगिक देश उसके बाद भारत में पुनः ब्रह्मनिष्ठ और बिना नारी संसर्ग के आजीवन और सतत् रहने बनने का मौका।

जो गृहस्थ लोग भी यदि संयोगवश वहाँ पहुँच जायें तो वहाँ दोनों को आजीवन अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना पड़ता है भोग की यदि इच्छा जाग्रत हुई तो समझ लिया जाता है कि इसके पुण्य फल या सेवा फल इतना ही था। (बिल्ववृक्ष सेवा या बिल्वपत्र या तुलसीदल चढ़ाकर सेवा या घंटादान या मंदिर निर्माण या ईश्वर के निमित्त व्रत–उपवास या राधावल्लभ या काशी विश्वनाथ आदि की सेवा, इनसे हरि हर सेवा का भी एक निश्चित समय तक फल है)

नोट – हाँ तीर्थ स्थल पर मरन वाले भी वहाँ तभी तक रहते हैं जब तक शुद्ध हैं। वहाँ कभी भी कोई भी विकार आया तो समझ लें कि गिरने का समय आ गया।

सरस्वती, श्रीदामा और देवी स्वधा की तीन बेटी को भी गलती के लिए क्षमा नहीं किया तो आपको कौन माफ करेगा; ब्रह्मा के बेटे दक्ष को भी पुनर्जन्म लेना पड़ा , कठोर तप वाले नारायण भक्त नारद का वीर्य एक बार एक सभा में (कामवश) नारी देखकर गिर गया था तो नारद जैसे मुक्त को भी दासी का पुत्र होकर यहाँ पैदा होना पड़ा।

अतः सोच लो मुक्ति या परम धाम में सतत् स्थिति इतनी सरल नहीं। देवताओं के बाप कश्यप और अदिति को भी दण्ड मिला वे ही धरती पर वसुदेव और देवकी बने।वहाँ तो साक्षात विष्णु को भी एक बार लक्ष्मी ने शाप दे दिया था कि मुझ पर क्यों हंस रहे हो जाओ तुम्हारा मुख एक कालखण्ड तक घोड़े जैसा हो जाये । और देवी दक्षिणा , विरजा राधा जी के भय से नदी हो गई। धरती पर जन्मी। वहाँ गलती पर राधा तक को शाप मिल जाता है । श्री दामा का शाप इसका उदाहरण है तब श्री राधा ने क्षमा मांगी (इसका वर्णन भी गर्ग संहिता या ब्रह्म वैवर्त पुराण में स्तोत्र सहित है)

अतः सोच लो सब कुछ छोड़कर मात्र ब्रह्म से अभिन्न होने से ही दुख खत्म होता है।

अतः सम्यक् ज्ञान विज्ञान पाओ।

प्रश्न—

क्षमा चाहता हूं छोटी मुंह बड़ी बात होगी। परंतु आपने यहां हनुमानजी का उल्लेख किया है। तो हनुमानजी साक्षात परब्रह्म हीं है उनके लिए गुण अवगुण क्या? आपके द्वारा लिखी प्रस्ताव में ब्रह्म को जानने अथवा पाने के लिए ब्रह्मचारी या अविवाहित, स्त्री प्रसंग से दूर रहने की सलाह दी गई है तो क्या हमारे पारंपरिक ऋषि दाम्पत्य जीवन धारण करते हुए ब्रह्म ऋषि का पद नहीं पाया है अथवा उन्होंने ब्रह्म तत्व का साक्षात्कार नहीं किया है? वास्तव में परिस्थिति के उचित विश्लेषण की जरूरत है न कि कल्पना में जीना उचित होगा?

उत्तर—

संतान उत्पन्न करके आजीवन अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले गृहस्थ ही ब्रह्मनिष्ठ होते हैं अतिभोगी नहीं।वराह पुराण में भगवान श्री वराह स्पष्ट कहते हैं —कि हे पृथ्वी ! जो विवाहित मनुष्य प्रत्येक चतुर्मास को अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक व्यतीत करता है उस 66 हजार वर्ष तक क्षीरसागर में सुख प्राप्त होता है पर मुझसे तद्भावित होने के लिए वंश परंपरा हेतु संतानोत्पत्ति के बाद रतिभोग वर्जित मानना चाहिए। और विवाह के बाद संतान की उत्पत्ति के लिए भी ऋतुकाल नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।पर आजकल के गृहस्थ लोग विवाह को बलात्कार का लाईसेंस मान बैठे या आजकल के मनुष्य पूर्व गृहस्थ ऋषियों को यदि बार बार स्त्रीमर्दन करने वाले भोगियों के समान समझते हैं तो वे अनुचित समझते हैं।

प्रश्न—धनवर्षा कल्प का उपाय बताएं ?

उत्तर—

वान्त (श),

वह्नि (र),

वामनेत्र (ईकार) और

दण्ड (अनुस्वार) – इनके योगसे 'श्रीं' बीज बनता है,जो 'श्री' देवीका मन्त्र है और सब सिद्धियोंको देनेवाला है।

(इसका अङ्गन्यास इस प्रकार करना चाहिये—)

(प्रथम प्रकार—)

●महाश्रिये महाविद्युत्प्रभे स्वाहा, हृदयाय नमः।

● श्रियै देवि विजये स्वाहा, शिरसे स्वाहा।

●गौरि महाबले बन्ध—बन्ध स्वाहा, शिखायै वषट्।

●धृतिः स्वाहा, कवचाय हुम्।

●महाकाये पद्महस्ते हुं फट्, अस्त्राय फट्।

(दूसरा प्रकार—)

'श्रियै स्वाहा, हृदयाय नमः।

श्रीं फट्, शिरसे स्वाहा।

श्रीं नमः' शिखायै वषट्।

श्रियै प्रसीद नमः । कवचाय हुम्।

श्रीं फट्, अस्त्राय फट्।'

(इसी तरह अन्यान्य प्रकार भी तन्त्र ग्रन्थोंमें कहे गये हैं।)

– इस प्रकार 'श्री'–मन्त्रके नौ अङ्गन्यास बतलाये गये हैं। उनमेंसे किसी एकका आश्रय ले।

■ पद्माक्षकी मालासे पूर्वोक्त मन्त्र का 3 लाख या एक लाख बार जप ऐश्वर्य प्रदान करनेवाला है।

■ साधक लक्ष्मी अथवा विष्णुके मन्दिरमें श्रीदेवीका पूजन व जप करके धन प्राप्त कर लेता है।

भाग्यहीन पुरुषों को आँसू बहाने से या प्रारब्ध को कोसने से कोई लाभ नहीं। अतः भौतिक पुरुषार्थ से सफलता न मिले तो अक्षयरुद्र अंशभूतशिव यही कहता है कि मंत्र या स्तोत्र का आश्रय लो।

■ खदिरकाष्ठसे प्रज्वलित अग्निमें घृतमिश्रित तण्डुलोंकी एक लाख आहुतियाँ दे। इससे राजा वशीभूत हो जाता है तथा लक्ष्मीकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

■श्रीमन्त्रसे अभिमन्त्रित जलसे अभिषेक करनेपर सब प्रकारकी ग्रहबाधा शान्त होती है।

■एक लाख बिल्वफलोंका होम करनेसे लक्ष्मीकी प्राप्ति और धनकी वृद्धि होती है।

साधक चार द्वारोंसे युक्त निम्नाङ्कित 'शक्रवेश्म' का चिन्तन करे। (यह यंत्र है शक्रवेश्म)

● पूर्वद्वारपर क्रीडामें संलग्न दोनों

भुजाओंको ऊपर उठाये हुए श्वेत कमलको धारण करनेवाली श्यामवर्णा वामनाकृति बलाकी का ध्यान करे।

●दक्षिणद्वारपर ऊपर उठाये हुए एक हाथमें रक्तकमल धारण करनेवाली श्वेताङ्गी वनमालिनीका चिन्तन करे।

●पश्चिमद्वारपर दोनों हाथोंको ऊपर उठाकर श्वेत पुण्डरीकको धारण करनेवाली हरितवर्णा विभीषिका नामवाली श्रीदूतीका ध्यान करे।

●उत्तर द्वारपर शाङ्करीकी धारणा करे।

■ 'शक्रवेश्म 'के मध्यमें अष्टदल कमलका निर्माण करे।

■कमलदलोंपर क्रमशः शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्धका ध्यान करे।

✍□✍□उनकी अङ्गकान्ति क्रमशः अञ्जन, दुग्ध, केसर और सुवर्णके समान है। वे सुन्दर वस्त्रोंसे विभूषित हैं।

✍□✍□उस अष्टदल कमलके आग्नेय आदि दलोंपर गुग्गुलु, कुरण्टक, दमक और सलिल नामक दिग्गजोंकी धारणा करे।

✍□✍□ये चारों स्वर्ण–कलशोंको धारण करनेवाले हैं। कमलकी कर्णिकामें श्रीदेवीका स्मरण करे। वे चार भुजाओंसे युक्त हैं। उनकी अङ्गकान्ति सुवर्णके समान है। उनकी ऊपर उठी हुई दोनों भुजाओंमें कमल है तथा दक्षिणहस्तमें अभयमुद्रा और वामहस्तमें वरमुद्रा सुशोभित हो रही है। वे शुभ्र एवं सुवासित वस्त्र तथा गलेमें एक श्वेत माला धारण करती हैं। उन श्रीदेवीका ध्यान एवं सपरिवार पूजन करके मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

✍□✍□उपासना के समय द्रोण पुष्प, कमल और बिल्वपत्र सिर पर धारण करें।

✍□✍□ पंचमी और सप्तमी को धन के इच्छुक लोग नमक और आँवले का सेवन न करें।

✍□✍□ नित्य श्रीसूक्त भी जपे।

✍□✍□ श्रीसूक्त से ही देवी का अभिषेक हो

✍□✍□ आवाहन से विसर्जन तक सभी उपचार अर्पण भी श्री सूक्त की ऋचाओं से हो।

✍□✍□ होम हेतु गौघृत, कमल , खीर, बिल्व साथ में या अलग अलग प्रयोग हों।

यह देवी लक्ष्मी जी की साधना है। देवी यमुना भी 14 दिन में निहाल कर सकती हैं इन यमुना देवी का अनुष्ठान 90 दिन का भी होता है।

एक स्तोत्र श्रीराधाकृत श्रीकृष्ण स्तोत्र भी है जो शीघ्र संपत्ति दायक है। वह स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम के हरि खण्ड में हमने संकलित किया था।

दारिद्रय दाहक स्तोत्र को सप्तमुखी रुद्राक्ष धारण करके जपें तो शीघ्र लाभ हो।

तथा देवी गायत्री के अनेक प्रयोग भी धनदायक हैं जो हम इस महाग्रंथ के भाग प्रथम में वर्णन कर चुके। पर लगता है कि भक्तों ने देवी रहस्य मंगवा तो ली पर पढ़ी नहीं। और पुस्तकों के प्रकाशनार्थ कार्य के लिए इनमें से एक सरल उपाय हम भी पहले कर चुके हैं।

इनके फल का प्रमाण हमारी 23 Published Books हैं।

– शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र 'अंशभूतशिव'

प्रश्न– एक शिव भक्त – शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी बडे आश्चर्य की बात है कि सारे ग्रंथ काशी की सर्वोत्तम महिमा बखान कर रहे है और शंकर के भक्तों को काशीलाभ न मिल कर वृदावंन मिल रहा है.... ऐसे ही वृन्दावन के एक पीलेबाबा को भी शंकरजी ने (आपकी तरह) वृदावंन पहुंचाया था । मुझे यह सब वैष्णवो की खुरापात लगती है। काशी कामाख्या का महत्व कम करने की नहीं तो आदिशंकराचार्य से लेकर रामकृष्ण तक काशी लाभ के इच्छुक रहे पर इन्हे ललितांबा या महाकाली ने वृंदावन न भेजा खैर पिलुआ बाबा के अनुसार तो काली को तो वृदावंन मे झाडू लगाने तक का अधिकार नहीं है।ये बाबा क्या काली तत्व को न जान पाये अभी तक। रुकमणीवल्लभ की जय, गौरीवल्लभ की जय

उत्तर–

देवी काली ,पार्वती ,राधा व श्री आदि देवी में भेद नहीं अतः भेद कोई भी न मानें। काशी की सर्वोपरी महिमा सदा सर्वोपरी ही रहेगी। आप शायद संकुचित शैव हो आपको मात्र स्थान ही काशी नजर आता है। गुरुगीता के अनुसार तो काशीक्षेत्रं निवासश्च.......अर्थात् जहां परमगुरु का निवास है वहीं काशी क्षेत्र है। साक्षात् श्रीराम जैसे शैव को भी विशेष प्रयोजन के लिए काशी छोड़कर चित्रकूट या अन्य जगह जाना ही पड़ता है श्री कृष्ण को भी काशी छोड़कर द्वारका जाना ही पड़ता है अतः वक्त , परिस्थिति व शिव आज्ञा से सब कुछ होता है। अतः अन्य क्षेत्रों पर जाना संबंधित विचार को गलत न समझा जाये।जब स्त्रीलम्पट पुरुष काशी छोड़कर योनी सुख देने वाली स्त्री को लाने के लिए या बच्चों के लिए अपनी भार्या को लेने अपनी सास के घर जाकर कुछ दिन रह सकता है तो अयोध्या या वृन्दावन में रहना भी उचित ही है। काशी परमतीर्थ है पर अन्य स्थान पर जाना भी शिव इच्छा से कर्तव्य बन सकता है। अतः हे मनुष्य गणों ! अपनी बुद्धि को व्यापक करें।

शिव आज्ञा या रुद्र आज्ञा से यदि कोई शैव हरि या लक्ष्मी का प्रचार करने जगन्नाथ पूरी चला जाये तो भी वह शिव आज्ञा से काशी निवास का फल पा लेगा।

000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–महाराज जी ! सुना है कि वेद , पुराण या अन्य ग्रंथ का उच्चारण हो रहा हो या आरती हो रही हो तब तत्काल खड़े होकर नमस्कार की मुद्रा बना लेना चाहिए और रामायण या रामचरित की ध्वनि आये तब रतिभोग भी वर्जित है। पर हमारे गांव में अधिकांशतः राम चरित होती ही रहती है। मैं धार्मिक प्रवृत्यात्मक हूँ अतः कुछ माह पूर्व मेरा नया नया विवाह हुआ था तब ससुराल से उनकी पुत्री की विदाई के बाद वह हमारे घर आई । पर रातभर भी

लगातार (कुछ दिन रात ही लगातार) राम चरित की आवाज चलती ही रही अर्थात राम चरित मानस का गायन लगातार चलता ही रहा उसमें उस दिन सुन्दर काण्ड का प्रसंग चल रहा था पर मैं अपने आपको नियंत्रित न रख पाया क्या मुझे पाप लगेगा अर्थात मैं जो कह रहा हूँ शायद आप समझ गए होंगे अब मुझे बहुत दुख हो रहा है कि मैं उस दिन संयम से नहीं रह पाया क्या मैं पापी हूँ ? अथवा उन ध्वनियों के बीच मल मूत्र का त्याग भी मजबूरी हो जाता है तो ....???

उत्तर–

देखिए!!!!! रात में 10 के बाद लाऊड स्पीकर बंद कर देना चाहिए अन्यथा यजमान को पुण्य के साथ पाप भी लगेगा ऐसा हमारा मानना है। आपके क्षेत्र में सभी अखंड ब्रह्मचारी तो होते नहीं फिर जबरदस्ती उनको कथा सुनाने की उत्कंठा कौन सा धर्म है ???

और गृहस्थ लोगों का कर्तव्य मात्र भजन ही नहीं होता धनार्जन, संतानों को सुख देना और ऋतुकाल को सार्थक करना भी होता है या अन्य अनिवार्य स्त्रीसुख संबंधित विचार भी होते हैं अतः आपको पाप लगा या न लगा यह तो पता नहीं पर यजमान को जबरदस्ती कथा सुनाई की इच्छा से पाप की संभावना अवश्य लगती है।

बिना इच्छा के प्रसाद , ज्ञान , कथा आदि परोसना पाप ही होता है न कि पुण्य दायक। पर दिन को तो ठीक है लेकिन रात को 10 के बाद सभी लोगों को **High speed sound @ loud speakers etc closed** कर देना चाहिए। और आपको भय है तो आप अग्निपुराण का पाप नाशक स्तोत्र मात्र एक बार पढ़ लीजिए। जिसका नाम पापप्रशमन है और आप देवी के भक्त हैं तो हमारे ग्रंथ देवी रहस्य में देवी का स्तोत्र (पापनाशक) भी है वह भी पढ़ सकते हैं।

0000000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–आचार्य क्या उपनिषद से होने के कारण नारी और ंनत शूद्र व्यक्ति अथवा जनेऊ हीन द्विज को इसको जपने या पढ़ने का अधिकार प्राप्त है ?

उत्तर– कुमार सौरभ!

कुछ कुछ ऋचाएं मात्र प्रार्थना है। कुछ ऋचाएं अच्छे पति को पाने की प्रार्थनाएं नारी के लिए ही वेदव्यास जी ने वेदों में शामिल की हैं। उसे नर पढ़कर अचार डालेगा क्या ?

कुछ ऋचाओं के अर्थ को देखो – हे देव ! मुझे अच्छा पति मिले इस कारण मैं आपको नमन करती हूँ।

हे देव ! मेरे पति की रक्षा करो मेरे परिवार की रक्षा करो।

हे देव! कोई भी अतिथि मुझ स्त्री और मेरे पति से दुखी न हो।

अन्य जगह – हे देव ! मेरे ब्रह्मचर्य की रक्षा करो ....

क्या नारी , शूद्र या चाण्डाल को कामी ही रहना चाहिए????

इन चारों वेदों में हर द्वापर में श्लोक बदल जाते हैं।

इसमें इस मन्वन्तर के यम व यमी की कथा भी है जिसमें बहन ने भाई से कहा कि मुझे काम सुख दो भैया !!!!तब यम देव ने बहन को धर्म का पाठ पढ़ाया अब बताओ यह कथा क्या स्त्री न पढ़े। अतः समझो। हर ऋचा पर हर ब्राह्मण का अधिकार नहीं । और कुछ ऋचाएं मात्र और मात्र नारी के लिए हैं। और अतिथि सत्कार के चार पांच सूक्त हर वर्ण के लिए। अर्थात

अतिथि सत्कार और ब्रह्मचर्य संबंधित ऋचाएं सभी को पढ़ने का अधिकार है।

पर अति संकीर्ण और विक्षिप्त लोगों ने इसको सीमित रखने की कोशिश की है।

श्रीमद्भागवत महापुराण 7/11/35 के अनुसार महाजिज्ञासु या कल्याण का दृढ़ इच्छुक सारे बंधनों से मुक्त और ब्राह्मण ही मानने योग्य है। और ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार परस्त्रीगमन करने वाले , चोरी व हिंसा में लिप्त, संध्याहीन ब्राह्मण तथा गुरुद्रोही द्विज चाण्डाल व शूद्र के समान हैं ऐसे लोगों को वेद पाठ का अधिकार (प्रायश्चित न करने तक) नहीं।

और यदि मनुष्य उपनिषदों को स्वीकार ही करे तो जो शूद्र या चाण्डाल अथवा वर्ण संकर हैं वे यथार्थ पराविज्ञान के लिए (यदि मुमुक्षु हों तो) बंधनों से रहित हैं और वे भी वर्ण से परे।

वर्ण के अधीन मात्र कामी , मोहित और जीवभावी लोग ही मानें जायें।

अनन्य भक्त (वर्ण का शूद्र या वैश्य) यदि ब्राह्मण शब्द में श्रृद्धा रखे तो उसे जितेन्द्रिय ब्राह्मण व शिखा जनेऊ व संध्यापूत ब्राह्मण को ही दान करना चाहिए अन्यथा शिखा और यज्ञोपवीत हीन ब्राह्मण के दर्शन से चाण्डाल के दर्शन का फल मिलता है।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

कुमार सौरभ – 10.9.2024

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी ! तो गुरुदेव ये प्रार्थना मंत्र उपनिषद का सब कर सकते हैं ?? स्त्री, शूद्र , जनेऊ रहित द्विज भी ?? जो कि भगवान भव और शर्व नामक दों महान रुद्रों को अर्पित है तथा आपकी पुस्तक शास्त्रों के अद्भुत रहस्य में है।

– कुमार सौरभ

उत्तर– जिसने अधर्म छोड़ दिया जो कल्याण को चाहते हैं और वैराग्यवान हैं वे अधिकारी हैं। द्विज तो यज्ञोपवीत धारण करते ही हैं पर वे यदि दुराचारी है परनार को भोगना चाहते हैं या संध्याहीन हैं तो तत्काल उनके यज्ञोपवीत खंडित मानने योग्य हैं। और वे शूद्र कोटी के हैं।

पर जो हीनवर्णी छल कपट परस्त्रीगमन, चुगली आदि विकारों से युक्त हैं वे शिवाय नमः या नमः शिवाय ही जपें। पर हीन वर्णी भी किसी पूर्व जन्म के पुण्य से मुमुक्षा या वैराग्य पा लें तथा धर्मपरायण (अधर्म कार्य बंद)हो जायें तो वे भागवत 7.11.35 के अनुसार परिशुद्घ ब्राह्मण ही हैं।

0000000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–अक्षयरुद्र आचार्य जी ! वंदन, नमन!! संसारिक जीवन में सालों साल तक कैसे ब्रह्मचर्य का पालन कर सकते हैं यदि साधनापरायण होना हो या पुरश्चरण आदि करना हो ?

– एन. एम .मान्द्रे

उत्तर –

पत्नी अच्छी हो तो ही पति कुछ हो पायेगा। मात्र पति अकेला क्या करेगा। इस कारण ही कर्दम जी ने महान पत्नी के लिए अनुष्ठान किया था और उनके पिता ने भी आज्ञा दे दी थी पर आजकल 99.999 प्रतिशत पिता अनुष्ठान साधना भजन कीर्तन पुरश्चरण को बकवास समझते हैं वे स्वयं औपचारिक पूजा करते हैं और डरते हैं कि भजन से मेरा लाल " पीला" या "लाल " न हो जाए। और अधिकांश पुत्र भी शादी के लिए उतावले रहते हैं वे तो ऐसे होते हैं जैसे कि लोहपथगामिनी छूट न जाए। अब अति कामी व अति महत्वाकांक्षी के पल्ले आप पड ही गए तो अक्षयरुद्र क्या करे। आप प्रेम से समझाकर देख लो यदि आपके पुण्य उदय होंगे तो वह 6 माह ,1 साल या 3 से 6 साल तक संयम से रह लेगी।

0000000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न— हम प्रभु का नाम न जपे तो क्या वे नाराज होंगे?

उत्तर —

कुछ भी कामनाएं (धन ,पद स्त्री, विवाह ,संतान, कीर्ति आयु आदि की कामनाएं या शत्रु नाश की इच्छा, जितेन्द्रिय बनने की चाह या रुद्र बनने की चाह जैसा कि इस अक्षयरुद्र की इस पुस्तक के लेखन के समय हो रही है। आदि आदि कामनाएं) न हो पर अभिन्न भाव भी प्रकट हो गया हो तो इस अभेदता पर देवी देवताओं को पूजने की आवश्यकता नहीं।

अद्वैत पर कौन दूसरा?

कौन तीसरा?

शिव पुराण में भी पराविज्ञान संवाद में महादेव ने देवी से कहा ही है कि उस पराविज्ञान पर मेरा अर्चन भी आवश्यक नही। परंतु गृहस्थजन 99.99999 प्रतिशत जीवभावी होते हैं। अर्थात् जिस क्षण में द्वैत जाग जाए तब पूजने से वे प्रभु या ग्रह नक्षत्रादि धन धान्य समृद्धि व कीर्ति के अलावा अपने लोक में स्थान भी देते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार की जननी माता की सेवा न करने पर वह कभी शाप नही देती पर पूजने पर वरदान अवश्य देती है । उनको जितना अधिक ध्याओगे उतना ही उच्च पद आपको वैकुण्ठ में मिलेगा। कम ध्याओगे तो औपचारिक पद। यह एक व्यवस्था मात्र है। इसके लिए भगवान भी विवश है। अधिक का फल अधिक देना ही पड़ता है।

दिन के 11 से शाम 5 तक ही अक्सर (छः घंटे) मानसिक कार्य से हम सब धनार्जन करते हैं पर शेष 18 घंटे में मन की फिल्म देखकर ही भगवान चित्रगुप्त आपको आध्यात्मिक तरक्की देते हैं। चाहे गृहस्थ हो चाहे वानप्रस्थ सबकी फिल्म चित्रगुप्त जी देखते हैं।

मन और मस्तिष्क में ऊटपटांग हरकतें या अच्छी बातें चल रही हो तो उसी के अनुसार फल मिलेगा।

प्रश्न — मैंने तीन बार श्रीकृष्णभागवत पढ़ ली है हे अक्षय रुद्र ! अब तो क्या मेरा उद्धार हो जाएगा न ।

उत्तर— यदि आप स्वाध्याय करके भी निन्दा , छल कपट, हिंसा , मदिरा , परस्त्रीगमन, रिश्वत आदि पाप में संलग्न हो तो आपको इन सबका दण्ड भी मिलेगा और साथ में कुछ काल तक पुण्य कर्म का फल या स्वाध्याय का फल भी। परम कल्याण (वैकुण्ठ या शिवलोक वह भी सतत् सदा के लिए) के लिए धर्मपरायण तथा पराभक्तियुक्त भी होना पड़ता है मात्र पढ़ना

पर्याप्त नहीं। स्वाध्याय का तात्पर्य मात्र पढ़ना ही नहीं अपितु उसका सार समझकर स्थितप्रज्ञ बनना है। स्वयं का अध्ययन ही स्वाध्याय कहलाता है। स्वाध्याय फल का तात्पर्य शम दम युक्त होना है अधिक गहराई से कहें तो साधन चतुष्ट्य संपन्न होना ही होगा (ये साधन चतुष्ट्य क्या है ये आप किसी अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने वाले संत से समयानुसार समझें) तभी परम उद्धार हो पायेगा। उद्धार भी अनेक प्रकार का होता है। पाठ करके आप निष्पाप तो हो सकते हो पर साधन चतुष्ट्य संपन्न नहीं। ये समझ न आये तो गीता की टीकाएं पढ़कर या अवधूत दत्तात्रेय जी की अवधूत गीता समझो कि भगवान आपसे क्या चाहते हैं।

शम दम का अर्थ भी समझो और पालन करो। मात्र रट्टू तोता बनने से , मात्र पढ़ने से या घास काटकर फास्टली अध्ययन से कभी भी तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ नहीं हो सकते आप। जीवन्मुक्त अवस्था के लिए ही भगवान ने गीता भागवत आदि लिखे हैं पर उसको ध्यान से समझना होगा। भले ही कम पढ़ो पर अधिक समझो। कुछ काल तक ईश्वर का धाम (सालोक्य पद) पाना हो तो भले ही मात्र पढ़ते रहें समझने की आवश्यकता नही और 66000 वर्ष तक क्षीरसागर पाने के लिए एक चौमासा दोनों को अखंड संयम अनिवार्य है पर वो न माने तो उससे विद्रोह न करें और उसे कुछ तिथियों को छोडकर तृप्त करें यदि वह अन्य के पास चली गई तो आप नरक जाओगे। और चार चार मास आजीवन संयम से महाहित होगा।

000000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– कन्या पूजन का फल क्या क्या हो सकता है? स्वामी जी!!!

उत्तर–छोटी सी कन्या या कन्याओं की सेवा से अतुलनीय फल मिलता है,यह सत्य है। बार बार सत्य है। अब श्रवण करें और समय हो तो इसका वीडियो बनाकर यूट्यूब पर अपलोड करके महापुण्य कमायें यह शास्त्रों की ही वाणी है। हम तो माध्यम मात्र हैं।

1. मात्र दो वर्ष या सात वर्ष की कन्या को पूजने पर शीघ्र ही दरिद्रता का नाश हो जाता है तथा आयुष्य लाभ भी। अतः मंगलदेव का पाठ करने वाले भी 1000 पाठ के बाद दो वर्ष की आयु की ही कन्या की पूजा करके उसे भोजन कराये और वस्त्र दक्षिणा आदि।
2. तथा राजनीति में सफलता व विजय पाना हो तो चार साल की कन्या की पूजा हो। और उसकी पूजा के समय यह मन में कहें कि –" हे श्री कल्याणी देवी आप मेरी पूजा से तृप्त हो और विजय व सफलता देकर अनुग्रह करें मैं विजय के लिए आपकी शरण में हूँ।"

3. और जिस मनुष्य को शत्रु अधिक परेशान करें उसको छः वर्ष की कन्या में देवी कालिका को देखकर ही पूजा करना चाहिए अथवा काली मंदिर में देवी काली को श्रृंगार व पूजा अर्पित करके त्रैलोक्य विजयी भद्रकाली स्तोत्र का 11 बार पाठ करें तदोपरान्त आसपास की छः वर्षीय कन्या के चरणकमल पूजकर भोजन वस्त्र और दक्षिणा से सेवा करें। यह पाठ आपको हमारी पुस्तक देवी रहस्य महाग्रंथ में मिल जायेगा।
4. नोट– 11 वर्ष की अपनी बेटी हो जाये तो माता पिता कृपया अपनी पुत्री को कन्याभोज पंक्ति में न भेजें अपितु आपको आमंत्रित किया हो तो ही साथ ले जाएं। श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार दो वर्ष से 10 साल की बच्चियाँ ही पूजने के योग्य हैं। पर अन्य समय (कन्याभोज के अतिरिक्त समय कभी भी) किशोरी, पतिव्रता , विधवा इनकी सेवा और दान का माहात्म्य भी है। ये शायद हमने शास्त्रों के अद्भुत रहस्य या कालखंड पुस्तक में लिखा होगा ऐसा लगता है। इन किशोरी व पतिव्रता आदि के विषय में उसी में विस्तृत मिलेगा।
5. अतः धन चाहिए तो कन्याभोज भी एक अनुष्ठान ही समझा जाये। हर माह की अष्टमी को या चतुर्दशी को भी गृहस्थ जीवन के नर नारी इस कन्याभोज नामक अनुष्ठान को अपनाये तो सब कुछ पा सकते हैं।
6. संग्राम या युद्ध में विजय के लिए सैनिक,पुलिस , वन विभाग या राजनेता को विशेष रूप से आठ साल की कन्या की सेवा करना चाहिए (उसमें शाम्भवी देवी के नाम का उच्चारण करके) ।
7. जो लोग आप पर मारण,मोहन, उच्चारण या अभिचारात्मक प्रयोग करते हैं उनसे सुरक्षा के लिए हर अष्टमी को तथा हर चतुर्दशी को 11–11 पाठ दुर्गनाशन स्तोत्र के करके एक चण्डी कवच भी करें तथा नौ साल की कन्या की ही सेवा करें। यह दुर्गनाशन स्तोत्र ब्रह्मवैवर्त पुराण में है तथा हमने स्तोत्र निधिवन में शक्तिखंड में इसे संकलित किया है।
8. सभी तरह की कामनाओं को सिद्ध करना हो तो अष्टमी या चतुर्दशी को सप्तशती का पाठ (संपूर्ण 13 अध्याय) करवाकर व हवन आदि भी। फिर 10–10 साल की पांच, सात या 11 कन्याओं की सेवा करें। संपूर्ण सप्तशती का सामर्थ्य न हो तो उस अष्टमी को मध्यम चरित्र के बाद शक्तिपीठमयी 108 नामों का एक बार पाठ करके भी 10 वर्ष की कन्या की सेवा (श्री सुभद्रायै नमः कहकर) करें। यह हमने अति संक्षिप्त कहा विस्तार के लिए आप हमारी पुस्तक कालखण्ड देखें। व शक्तिपीठमयी 108 नामों को देवीभागवत में या हमारे ग्रंथ देवी रहस्य में। कालखंड पुस्तक में हर माह , हर तिथि हर नक्षत्र का अलग अलग अध्याय है। यह प्रसंग आपको पेज नंबर 71–72 के लगभग मिल जायेगा। इसे आप अमेजन या फ्लिपकार्ट से मंगवा सकते हो या गूगल

पर अंग्रेजी में ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र बुक्स टाईप करके आर्डर करें। वक्त का भरोसा नहीं कि क्या हो जाए इस कारण ऐसा लिखा अन्यथा मत लेना हम वैसे भी अध्यात्म का एक रुपये भी नही खाते।

9. हर कन्या देवी का रूप होती है अतः उसे पवित्र भाव से देखने पर भी कृपा होती ही है। ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए देवी दुर्गा को ही हर कन्या में या हर नारी में निहारें। पत्नि के अलावा सबमें एकमात्र देवी पराशक्ति को ही देखें। रामजी के भक्त सीता मैया को तथा कन्हैया के भक्त राधा या यमुना या रुक्मिणी को देखें।

प्रश्न– भय का मंजर कैसे दूर होगा? वनवास का सेवन किसे आवश्यक नहीं,

उत्तर–

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा,

ब्रह्मज्ञान से निश्चित होगा।

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

गुरूसेवा से अमृत होगा,

अमृत निश्चय ज्ञान ही होगा।

कर विश्वास देवी गीता पर,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

गुरूभक्ति ही पराभक्ति है,

जानना एक दिन सबको होगा।

इससे पाकर तत्त्व अद्वैत,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

नारी रूप है दीप शिखा,

पंतगा बनकर नाश ही होगा।

तत्त्व का ही करके चिंतन,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

देवी रहस्य में स्नान करके,

कुंभ, मकर से भी अधिक तू पावन होगा।

भुवनेश्वरी की कृपा से बंदे,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

अक्षय आनन्द के चिंतन से,

भव रोग से मुक्त तू होगा।

हे गुरूगीता का अवतरण प्यारे,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

भ्रांति से केवल बंधन होगा,

सर्वमय क्षणों में तू एक मात्र,

साक्षात् तत्त्व 'वह' ही होगा।

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

दान–दया तो अंशमात्र है,

अनुष्ठान ब्रह्मचर्य से शीघ्र ही होगा।

उत्थान, सबका निश्चित होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

अपरिग्रह रहित जीव तू होगा,

दुःख–तनाव से ग्रसित होगा।

गुरूभक्ति का करके पालन,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

महाकाल का करके सुमिरन,

अकाल मौत से दूर तू होगा।

निष्पापता और सर्वमयता से ही,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

व्रत, क्रिया से जप बड़ा है,

जानकर तू आनन्दित होगा।

समाकर मात्र शिव चरणन् में,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

गीता से परम लाभ ही होगा,

अंशभूत कहता, आज ही होगा।

पाकर सान्निध्य ब्रह्मज्ञानी का,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

साधने से तू साधु होगा,

अनंत को पाकर संत ही होगा।

तत्त्व दृष्टि से हंस ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

निष्पापता से रक्षा बीज बोगा,

भक्त से क्रमशः ज्ञानी होगा,

सत्संग से ही निवृत्त होगा।

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

प्राणी अकर्मण्येव निशदिन रोगा,

भयंकर प्रमादी नित्य ही सोगा।

कर याद अपने सद्‌गुरु की,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

जो होगा' वह अच्छा होगा,

गीता सार ही सच्चा होगा।

ब्रह्मविद्या का करके पालन,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

गुरूभक्ति–अपरिग्रह से मेरे प्यारे!

असंभव भी संभव होगा।

पाप–पुंज के क्षरण से निश्चय,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

करता जा ब्रह्मरस का पान,

अंशभूत सत्य ब्रह्म ही होगा।

आत्मज्ञान से होकर निर्भय,

भय का मंजर दूर ही होगा,

भय का मंजर दूर ही होगा।

अर्थात्

जो परम गुरु की शरण से अभिन्न ज्ञान से संपन्न हो गया उसी का भय दूर होगा। अब दूसरे प्रश्न का उत्तर सुनें–

एक एवाद्वितीयोऽहं गुरुवाक्येन निश्चितः ।

एवमभ्यास्ता नित्यं न सेव्यं वै वनान्तरम् ।।

अभ्यासान्निमिषणैव समाधिमधिगच्छति।

आजन्मजनितं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।।

गुरुदेव के वाक्य की सहायता से जिसने ऐसा निश्चय कर लिया है कि मैं एक और अद्वितीय हूँ और उसी अभ्यास में जो रत है उसके लिए अन्य वनवास का सेवन आवश्यक नहीं है, क्योंकि अभ्यास से ही एक क्षण में समाधि लग जाती है और उसी क्षण इस जन्म तक के सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न– संपत्ति के कितने प्रकार होते हैं और पुण्यों के फल बताएं ?

उत्तर–

संपत्ति के 2 ही मुख्य प्रकार हैं सुनें –

रुपया रूपी सांसारिक धन दौलत और साधन चतुष्ट्य रूपी महासंपत्ति ये ही संपत्ति के दो प्रकार हैं। दूसरी अध्यात्मिक है जिसकी सिद्धि सत्संग, उपनिषदों व गीतादि के स्वाध्याय,सेवा पूजा पाठ आदि से होती है। विवेक वैराग्य मुमुक्षा शम दम आदि महासंपत्ति से ब्रह्मज्ञान रूपी परम लक्ष्य प्राप्त होता है । भविष्य पुराण के अनुसार स्त्रीसुख और संतानसुख की कामना से पहले धन रूपी संपत्ति प्राप्त कर लेना चाहिए अन्यथा उस पति या वर का गृहस्थ आश्रम अति दुखालय हो जाता है फिर प्रारब्ध को दोष देने से क्या लाभ। और ब्रह्म वैवर्त पुराण कहता है कि प्रारब्ध चाहे जैसा भी हो वह साधना के आश्रय से ईश्वर को प्रसन्न करके सब कुछ सहज ही प्राप्त कर सकता है। सकामी जीव भजन से पद और धन भी पा लेता है। जिससे वह इहलोक में सुखी हो सकता है।

पर परलोक, आंतरिक शुद्धि व आंतरिक शान्ति के लिए चित्त की शुद्धि अनिवार्य है। धन , पद और ऐश्वर्य की अपनी एक सीमा है। ये मरने तक ही साथ व कीर्ति देते

हैं तदोपरान्त (दान भी किया हो तो) स्वर्ग मात्र।

●●रुपयों से गृहस्थ जीवन के अधिकांश बाह्य दुख दूर हो जाते हैं। पर

●●अध्यात्म से मन और चित्त की शान्ति मिलती है।

शिक्षा, स्वास्थ्य जल , बिजली , विवाह, अन्न ,शास्त्र , कलम , पेज , वस्त्र और घर आदि सुविधा के लिए धन रूपी संपत्ति अनिवार्य है लड्डू गोपाल की छोटी सी पोशाक भी मुफ्त में नहीं मिलती तथा विप्र गृहस्थ को भी नित्य 100 की भिक्षा भी लोग देने मे आजकल लोग

आनाकानी करते हैं , शिवजी के अभिषेक के लिए एक किलो दूध भी धन से ही मिलता है अक्षयरुद्र का यह मोबाइल डाटा भी धन से ही कंपनी देती है अतः धन बहुत महत्वपूर्ण है पर धन होते हुए भी यदि विवेक,ज्ञान और वैराग्य न हो तो मनुष्य की बुद्धि में कचरा होने से उसी धन से वह पाप भी करने लगता है अतः दोनों संपत्ति अनिवार्य हैं।

पर जिसको मात्र देश की सेवा (ज्ञानदान से या तपोबल से) करना है वह नैष्ठिकब्रह्मचर्य का पालन करे और नौकरी या धंधे में न फंसे। इससे समाज का अभ्युदय निश्चित ही होता है क्योंकि गृहस्थ आश्रम के पुरुष का दिनभर का समय ऑफिस या दुकान या मजदूरी में ही निकलता है (पार्षद, सांसद या मंत्रीपद की बात अलग है पर इनकी सेवा भी तभी फलीभूत होती है जब ये लोग 1प्रतिशत भी शासन की योजनाओं का धन न खाएं अन्यथा सब सेवा धन लूटने का जरिया मात्र समझी जाए) पर ये लोग भी यदि शम दम से युक्त न हों या परायी औरतों पर नजर डालें तो इनकी ऑफिसियल सर्विस पोषण का अड्डा मात्र समझने योग्य है न कि सेवा। सर्विस या धंधा तो इनकी मजबूरी मान लो न कि सेवा का उद्देश्य। आदर्श सेवक धर्मनिष्ठ होता है।

जो दरिद्र है वह देवी के अष्टोत्तरशतनाम के 1000 पाठ या दुर्गा द्वात्रिंशन्नाममाला के 30हजार पाठ से अचल संपत्ति पा लेता है जो वैष्णव है वह चाहे तो यह आराधना करे या देवी के लक्ष्मी रूप के अष्टक स्तोत्र की साधना करे या देवी यमुना की विद्या के 90 दिन तक डैली 110 पाठ इससे उसकी दरिद्रता मिट जाती है तथा श्रीराधाकृत एक शीघ्र धनदाता स्तोत्र भी हमने स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम पुस्तक में संकलित किया था वह भी अतुलनीय धनदायक है। और भी ऐसे ऐसे स्तोत्र हमने देवी पराम्बा की कृपा से स्तोत्र निधिवन में लिखे हैं जो अलग अलग माहात्म्य वाले हैं जैसे जन्म जन्मान्तरों की खोई हुई शक्ति और पूर्व जन्म की पत्नि की प्राप्ति के लिए श्रीकृष्ण स्तोत्रम् तथा अग्नि का भय कभी भी घर में नहीं होगा ऐसा पाठ या विषभय नाशक स्तोत्र आदि। पर करने वाला इनका प्रयोग करे तो ही लाभ होगा। तथा देवी रहस्य महाग्रंथ भाग प्रथम में अभिचारात्मक प्रयोग नष्ट करने की भी विद्या है। पर यह साधना अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक करे। पर देवी की विशेष कृपा के लिए यथार्थ पराविज्ञान अनिवार्य है धन या मनुपद तो राजा सुरथ ने भी साधना से अतुलनीय पा लिया (पा लेगा) पर उसकी बुद्धि को ठीक नहीं माना गया क्योंकि वह सकामी था पर वैश्य को ही उत्तमोत्तम माना गया।

अतः गरीब हो तो गरीबी अवश्य मिटाओ (ताकि परिवार में क्लेश न हो) पर धन आ जाये तो अपने धन का ठीक ठाक इस्तेमाल के लिए बुद्धि अच्छी होना चाहिए। आजकल हम देख रहे हैं कि धनी ही अधिक कंजूस होते जा रहे हैं वे भूमि या प्लॉट या महल के लिए लाखों या करोड़ो खर्च कर देते हैं पर अतिथि या भिक्षुक के साथ कंजूसी से पेश आते हैं यह इन दुर्भाव इन लोगों को अगले जन्म में फिर से दरिद्र कोख देता है।

अतः देवी की कृपा से सब कुछ मिल जायेगा पर उत्तम बुद्धि भी अनिवार्य है। हमने देवी की कृपा से देवी रहस्य महाग्रंथ भाग प्रथम में अनेक उपाय बताये हैं जिनसे दरिद्रता देवी चली जाती है और प्रेम पूर्वक वह अपनी छोटी बहन लक्ष्मी देवी को भेज देती है जिससे आप अतुलनीय राजपाट और यश कीर्ति पाने लगते हो।

पर चरित्र भी सुधारें ।

पुण्यों के फल –

पुण्य – (दान, दया, अतिथि सेवा या सुदृष्टि) का फल धन धान्य व स्वर्ग

महापुण्यफल– वैराग्य, संसार से उच्चाटन , मुमुक्षा आदि

परम पुण्य फल– अपरोक्ष भाव

प्रश्न–तिलक के बारे में बताएं हम कोई सी भी अंगुली से तथा किसी भी पदार्थ से लगाा देते हैं।

उत्तर–

●अनामिका उंगली से तिलक करने से शांति मिलती है,

●मध्यमा से तिलक करने आयु बढ़ती है,

●अंगूठे से तिलक करना पुष्टिदायक माना गया है, तथा

●तर्जनी उंगली में जिनक करने पर मोक्ष प्राप्त होता है।

(अनामिका शांति..... अंगुष्ठः पुष्टिदः.... तर्जनी मोक्षदायिनी ..)

विष्णु संहिता के अनुसार –

■देव कार्य में अनामिका सर्वोत्तम है।

■ पितृ कार्य में मध्यमा उत्तमोत्तम है।

■ पर ऋषि कार्य में कनिष्ठिका (एक जगह अनामिका तथा अंगुष्ठ उत्तम)

तथा

■ तांत्रिक कार्यों में प्रथमा उंगली का प्रयोग करना चाहिए।

■■■■मिट्टी तथा भस्म ■■■■

1. मृत्तिका से ऊर्ध्वपुण्ड्र तथा भस्म से त्रिपुण्ड करना चाहिए।
2. चंदन से दोनों प्रकार के तिलक किये जा सकते हैं।
3. वृन्दावन में इसी कारण मृत्तिका से ऊर्ध्वपुण्ड्र लगता है तथा काशी में भस्म से। पर जिनके पास चंदन मात्र हो वह उसी से लगा सकता है।
4. गणपति जी की परम कृपा के लिए हरिद्रा चन्दन सर्वोत्तम।। पितृ कार्य में लाल चन्दन
5. विष्णु कार्य सिद्ध हेतु पीला चन्दन उत्तम मानें।
6. रुद्र, महेश या सदाशिव इन तीनों की पूजा में भस्म सर्वोत्तम है अथवा सफेद चंदन ।
7. ऋषि पूजन में श्वेत चंदन उत्तम है न कि मनचाहा चंदन।
8. लक्ष्मी देवी की महान कृपा चाहिए तो हे अक्षयरुद्र! केसर से तिलक करें।
9. तांत्रिक प्रयोग में सिन्दूर सर्वोत्तम है।

किसी श्रेष्ठ मानव की पूजा में चंदन और केसर दोनों उत्तम है।

प्रश्न–हे अक्षयरुद्र! आश्चर्य!!! तू वही है पर संसार के दुखी लोगों को देखकर कभी कभी अश्रु बनकर नयन मार्ग से जल नदियाँ क्यों बह जाती है।

उत्तर–श्रीहरि के अवतार का कारण भी यही है फिर अक्षयरुद्र क्या करेगा अर्थात् पृथ्वी के दुख का दर्शन करके दुख दूर।

ज्ञाननिष्ठ होकर भी हे कृष्णा!

द्वैत सी दया क्यों आती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती हैं।

ज्ञाननिष्ठ होकर हे कृष्णा!

जल नदियाँ बह जाती है।

सर्वमय तीर्थ का मैं ही प्राण,

याद फिर भी क्यों आती है।

क्या बुलाने को वे आतुर,

क्या पवन यही कह जाती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती है।

सर्वज्ञता का मैं स्वरूप,

निज लीला क्यों मुझे भाती है।

करता फिरता स्वाध्याय मैं,

क्या बात समझ नहीं आती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती है।

साक्षात् मैं हूँ वही जो तुम,

फिर भक्ति 'भाव' क्यों उमड़ाती है।

क्यों नहीं रहता सदा में स्थित,

रूप से क्या चूक हो जाती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती है।

स्वयं ही होकर भिन्न रूप में,

क्यों घटना घट जाती है।

बन्धु, बान्धव क्या है लीला,

जीव को ये रुलाती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती है।

भूख, ठंड मय क्या जगत है,

माता की याद दिलाती है।

स्वयं शिव की रचना अनोखी,

एक आत्मा अनेक हो जाती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती है।

जीव कैसा भी मेरे प्यारे,

गीता ज्ञान दे जाती है।

दुःख, तनाव से पिण्ड छुड़ाती,

क्या गजब काम कर जाती है।

अश्रु बनकर नयन मार्ग से,

जल नदियाँ बह जाती है।

प्रश्न–एक भक्त की जिज्ञासा –मुझे भक्ति और ज्ञान दोनों चाहिए?

उत्तर–

1. भक्तियोग और ज्ञानयोग दो अलग अलग हैं। साथ में कभी नहीं मिलते।

2. प्रभु के दर्शन की उत्कंठा वाले भक्ति–योग पर आरुढ हैं और अभिन्नभाव वाले ज्ञानयोग पर स्थित।
3. भक्तियोग चाहिए तो अपने आपको दास समझने वाले भक्तों का संग करो।
4. और पराविज्ञान (अपरोक्ष ज्ञान) चाहिए तो ब्रह्मनिष्ठों का संग करो।
5. इस विश्व में 99.999प्रतिशत भक्त मिल जायेंगे पर ज्ञानयोगी(अभिन्न भाव में रमण करने वाले एकत्व युक्त जो तत्त्वमसि और अयमात्माब्रह्म जैसे महावाक्यों से अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ हो चुके और तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ संज्ञा को पा चुके। दुर्लभ हैं।
6. हरि भक्ति चाहिए तो भागवत, गर्ग संहिता या ब्रह्म वैवर्त पुराण, विष्णु पुराण आदि वैष्णव शास्त्र पढ़े।
7. और शैव भक्त (शिव जी के लिए अनन्य भक्ति युक्त) होना है तो इस अक्षयरुद्र अंशभूतशिव की तरह शिव पुराण, स्कन्द पुराण , लिंग पुराण की कथाओं तथा हमारा ग्रंथ शिव चरित मानस, भैरव गीता का अवलोकन अनिवार्य है।
8. यथार्थ पराविज्ञान प्राप्त करना हो (पर ब्रह्मनिष्ठ तद्भावित न दिखे , यह अति दुर्लभ हैं) तो शिव गीता , अवधूत उपनिषद, अवधूत गीता ,विवेक चूडामणि,देवी गीता, रामगीता या हमारी पुस्तक मैं ब्रह्म हूँ का पठन–चिन्तन व अभ्यास आदि करो। इन गीताओं में यथार्थ संभाषण है ।

प्रश्न– कार्तिक मास में तुलसियों या हर सावन में बिल्वपत्र अर्पित करने पर क्या फल है।

उत्तर–बिना पराविज्ञान के हर कार्तिक मास में तुलसियों या हर सावन में बिल्वपत्र अर्पित करने पर भी तीन युगों तक वैकुंठ / कैलास मिलता है। पर पुनः जन्म होता है– ब्रह्म वैवर्त और देवीभागवत अतः ये फूल पत्ता दिया बाती को ही मुक्ति दाता मत मान लेना ये सहायक मात्र हैं पर इनका निष्काम सेवन करने पर जो अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ (तद्भावी गुरु) प्राप्त होता है या सीधे ही वेदान्त श्रवण या पठन से जो अपरोक्ष भाव मिलता है वही मुक्ति का कारक (सर्टिफिकेट) है।

प्रश्न–ब्रह्मचर्य पालन से क्या होता है?

उत्तर– आनन्द की प्राप्ति व महापद के लिए ब्रह्मचर्य का पालन होता है। अब आगे सुनें– जो आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करता है या जो अष्टमी, चतुर्दशी को स्त्री संग नहीं करता, दूसरे के अन्न को खाकर निंदा नहीं करता वह बैकुण्ठ जाता है या जो माता–पिता की सेवा (उनमें मुझे देखकर) करता है वह भी मेरे लोक में जाता है या जो निःस्पृह है वह भी मेरे लोक में आनन्द करता है। ब्रह्मचर्य की महान महिमा है। बताया गया है कि चारों वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण (वेदवेत्ता) यदि जितेन्द्रिय है तो वह पृथ्वी का भूदेव माना जाये पर वह ब्राह्मण दुराचार, मांसभक्षण व लोभ आदि पापों में रत है तो वह शूद्र से भी हीन व निकृष्ट है

और जो केवल अग्निहोत्र तथा ब्रह्मचर्य (दान्त) का पालन कर्ता हो वह भले ही वेद नहीं जानता परंतु महान व परम ब्राह्मण है ही। जो अजितेन्द्रिय हो व परनारीभोगी भी वह ब्राह्मण नहीं वर्ण संकर है पर है। –महा. वन 3/3/111 और महा. सौ. 3.20 आदि विस्तार के लिए हमारी पुस्तक हे वीर ब्रह्मचारी देखें।

हर रात ही सावन है

छोड़ इंद्रिय सुख,

आठ पहर ही आनन्द है।

रति सुख त्यागकर,

जीवन ही पावन है।

दिव्य फल है सत्संग का,

दिन की तो बात क्या?

हर रात ही सावन है।

प्रभु को पति मानने पर,

हर जीव ही सुहागन है।

पर जाना यदि स्वरूप तत्त्व,

निजरूप ही वृन्दावन है।

फल महान है भक्ति का,

दिन की तो बात क्या?

हर रात ही सावन है।

जो हरता पर–नारी को,

वह सच में रावण है।

राधा का इष्ट तत्त्व,

कृष्ण रूप मनभावन है।

मोक्षफल है अद्वैत का,

दिन की तो बात क्या?

हर रात ही सावन है।

रूप यौवन के घेरे में,

सदा लुटते कामी जन हैं।

बंधन मुक्ति देने वाला,

सबका प्यारा एक मन है।

अमृत फल है गुरूसेवा का,

दिन की तो बात क्या?

हर रात ही सावन है।

प्रश्न– महाराज जी ! मैं तो क्या सब लोग ईश्वर की कट पुतली हैं। अतः पाप भी मैं ईश्वर की मर्जी से करता हूँ ईश्वर की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं गिरता। मैं मित्र की पत्नी से प्रेम करता हूँ उससे रतिसुख भी प्राप्त होता है यह भी ईश्वर ही कराता होगा...... बिना हरि की इच्छा के वह मुझसे संबंध स्थापित करने के लिए आतुर क्यों होती ? अतःमैं ही सत्य हूँ ।

– एक स्त्रीलम्पट का प्रश्न

उत्तर–

1. कांच के कंचे देखे हैं,उन कंचो (कंचे / अन्टी) को हर आठ दिन में एक खाया करो यह ईश्वर की मर्जी है।
2. चक्कू से अपना हाथ काटो न।
3. चूहे मारने की दवाई खाओ न ।
4. अपनी पत्नी या बेटी को रेड लाइट इलाके में भेज दो न।
5. तीसरी मंजिल पर चढ़कर गिर जाओ न.... यह भी ईश्वर की मर्जी समझो।
6. आपकी पुत्री उसी के कॉलेज के युवक से अवैद्य संबंध बनाती है यह मैं जानता हूँ अतः प्रभु की मरजी मानकर चुपचाप रहना और वर्ण संकर पैदा हो जाये तो बिन व्याह की सुता के पुत्र का नाना बन जाना ....पर पता है तुम ऐसा नही कर सकते ....तो काहे तुम पाप को ही ईश्वर की मर्जी समझ बैठे और कुछ घाटे वाले कार्यो (हाथ काटना, थर्ड फ्लोर से कूदना आदि) पर 100 बार सोचते हो या अहित जानकर नहीं करते।
7. 40,000 मासिक धन कमाते हो ; दशांश गौसेवा में लगाओ न यह भी ईश्वर की मर्जी है जो अक्षयरुद्र शिवांश रूप में आपको प्राप्त हो रही है।

8. सुनों – अपने पति को धोखा देना और धोखा देकर पीठ पीछे परपुरुष से संबंध बनाना नरक दायक है यह है ईश्वर की वाणी........... जो गरुडपुराण में व उमा संहिता में लिख दी। वेदव्यास जी ने। आप महामूर्ख हो जो मित्र की भार्या को वासना के कारण धन व कीर्ति आदि का लोभ देकर कुकृत्य करने को भी हरि की इच्छा बता रहे हो।
9. क्या आपकी बहन या आपकी सुन्दर पत्नि भी आपके मित्र के साथ रात काली–नीली करे तो आप लाल नही हो जाओगो.........आप अनुचित कर्म को हरि इच्छा मान बैठे यह ठीक नहीं।
10. इस विश्व में जो लोग पूर्व जन्म में अधर्म को हरि इच्छा मानते थे वे लोग ही आज आपकी गली के कुत्ते व बिल्ली हैं वे ही बंदर , भालू और हाथी व सर्प नेवला आदि हैं जिसने माता पिता व ब्राह्मण या संत गुरु को लात मारी वे ही इस जन्म में पगहीन होकर लंगड़े हैं यह सब आप हमारी पुस्तक दुष्कर्म और नरक की यातनाएं में पढ़ लो।
11. और जो लोग पूर्व जन्म में धर्मपरायण थे वे आज अच्छे पैकेज पर हैं और आज्ञाकारी संतानवान । या स्वर्ग में देवता पद पा गये।
12. सुनों पुनः – पाप और पुण्य ही दुख व सुख का कारण है।
13. पाप की परिभाषा वेदव्यास जी ने लिख दी और पुण्य की भी।
14. पाप और पुण्य के लिए ईश्वर जबरदस्ती नहीं करता आप स्वयं ही इसके जिम्मेदार हो। अतः मित्र से छल न करें और उसकी पत्नी को भी प्रायश्चित बता दें आप भी सुधर जायें।
15. चंचुला भी परपुरुष गामी हो गई थी उसने भी दण्ड विधान सुना तो शिव पुराण के श्रवण मात्र से निष्पाप हो गई और आज देवी बनकर कैलास पर्वत पर गौरी की सुन्दर और सिद्धियों से परिपूर्ण सखी है।
16. आप तो हमारी पुस्तक (आपके प्रश्न , भैरव गीता , जिज्ञासा और समाधान और यही <u>अज्ञान नाशक औषधि</u> पढ़े आपकी हर जिज्ञासा का समाधान मिल जायेगा) और पापों का फल जानना हो तो डेन्की पुस्तक अर्थात दुष्कर्म और नरक की यातनाएं देखें। तथा कल्याण के सूत्र जानना हो तो शास्त्रों के अद्भुत रहस्य, महिमा, देवी रहस्य महाग्रंथ, शिव चरित मानस आदि पढ़े। इन सभी उपायों से अतिशीघ्र कल्याण करना हो तो कालखण्ड पुस्तक को अनिवार्य समझें। अति कामी हो तो हे वीर ब्रह्मचारी पढ़े । और मुमुक्षा चाहिए तो सांझ ढलेगी तेरी भी। इससे ज्ञान की तीसरी भूमिका सिद्ध होगी। और शिव स्वरूप होकर ब्रह्मनिष्ठ होना हो तो अवधूत उपनिषद या हमारी अद्भुत महावाक्यमयी कृति मैं ब्रह्म हूँ (अहम् ब्रह्मास्मि) का अद्वैत समझकर तद्भावित हो जाओ। पर पहले तो आपको हमारी पुस्तक या अग्निपुराण के पाप नाशक स्तोत्र (पाप प्रशमन स्तोत्र) या लिंगपुराण के व्यपोहन स्तोत्र का अनुष्ठान करना होगा । और पाप से अति भय हो रहा हो कि कहीं पशुयोनि मिल गई तो ..... तब हम आप पर दया

करके यह कहते हैं कि गीता के दसवें अध्याय का एक श्लोक ही डैली आरंभ कर दो पशु योनी नहीं मिलेगी पर पाप नष्ट के लिए दुख झेलना होगा या साधना। **इन वाक्यों को आप अक्षयरुद्रस्य गीता ही समझें।**

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–.

अद्भुत अद्वैतात्मक प्रश्न– क्या जो साधक कैवल्या को प्राप्त हो जाता है वो कभी अगर संसार मे लोकहित के लिए दुबारा जन्म लेकर या अवतार लेकर कुछ कार्य संपन्न करने के लक्ष्य को लेकर लोक हितार्थ आना चाहे तो क्या वह दुबारा जन्म ले सकता है ....या उसके लिए ऐसा संभव नहीं होता कैवल्योपरंत जन्म मृत्यु के लिए उसके जगत मे आने का उसका क्या तत्व रहस्य होता है. क्योंकि भगवान भी अपनी महिमा मे स्थित होते हुए धर्म रक्षार्थ साधु पुरुषो के उद्धार और दुष्टो के अंत के लिए साकार रूप धर कर कभी देवी कभी शिव कभी नारायण कभी गणपति या इनके अवतार या **कभी कभी कोई कोई महापुरुष जो बहुत विलक्षण होता है** वो बनकर आते है कैवल्य मिलने के बाद मनुष्य के जीवन मृत्यु और उसके संसार मे आने का क्या रहस्य है? क्या उसके लिए जन्म लेना संसार मे आना संभव नहीं होता? क्या वह कैवल्य के बाद उसका संकल्प लेना संभव नहीं होता? आपसे प्रार्थना है इन प्रश्नों का समाधान करें

माँ आप पर सदा कृपालु हो. जय माँ –गौरव प्रताप सिंह

उत्तर– धन्य धन्य!!!! अब श्रवण करें–

1. निराकार परब्रह्म भी कैवल्यमय है। जब वह लीलावश रूप धारण कर सकता है और भक्तों का उद्धार करने के लिए भूमि पर आ सकता है तो उस परब्रह्म से अभिन्न (कैवल्या को प्राप्त) भी धरती पर आ ही सकता है।
2. ये विष्णु , रुद्र स्वयं गुरु बनकर उच्च स्तरीय साधकों व उच्च स्तर के महा मुमुक्षुओं को उसके अज्ञान का क्षय करके ब्रह्म भाव से भावित करते हैं , करके कैवल्या देने में समर्थ हैं तो इससे यह सिद्ध हुआ कि ये स्वयं कैवल्य मुक्ति को पा चुके हैं तभी कैवल्या का उपदेश इन्होनें शिवगीता और अवधूत गीता में दिया है तो सोचो –ये भी कैवल्यमय होने पर भी सृष्टिखण्ड के लिए अवतार लेकर आ सकते हैं तो सभी कैवल्यमय (मुक्त) भी इनकी ही भांति धराधाम पर क्यों न आ सकेंगे। अर्थात् कभी भी कोई भी रूप रचकर आ सकते हैं।
3. और एक महत्वपूर्ण बात– कैवल्यमय मुक्त सर्वमय हो जाते हैं वे यथार्थ में हर जगह उपस्थित हैं बस जो जीव अपने कल्याण के लिए ब्रह्म को पुकारता है तो (ब्रह्म का एक यह रूप अर्थात कैवल्यमय वह मुक्त ही) किसी भी रूप में प्रकट होकर उद्धार

करता है। उस समय रूप या नाम की संज्ञा नहीं होती बस एक भाव (ब्रह्मभाव) रहता है इस कारण वही प्रकट होता है। पर कोई कहे कि – हे गोलोक निवासी श्रीकृष्ण आप ही आओ ..... या हे गौरीपति! आप ही आओ ...... तब वह अपना रूप धारण नहीं करता। ब्रह्म एक भले ही हो पर रूपों और पुकार का सम्मान करना ही व्यवहारिक सिद्धांत है।

4. जन्म का अर्थ केवल योनी से पैदा होना है अतः न तो ब्रह्मा , विष्णु और रुद्र जन्म लेते हैं न ही कृष्ण या शंकर आदि। ये मात्र प्रकट होते हैं और नन्हा शिशु रूप अपनी माया से बनाकर उस शिशु की बॉडी में लीला करते हैं फिर वही शिशु जब बड़ा होता है तो उस रूप के द्वारा एक नया धाम बनाया जाता है जिसमें उसी रूप के सभी भक्त ही मरकर जाते हैं।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–**क्या भाव का या श्रृद्धा का भी फल है ? कर्तरी और पिण्ड या बीज क्या है ?**

उत्तर–

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भैषजे गुरौ ।

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥

अर्थात् मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषधि तथा गुरु में जिसकी होती है, उसे वैसी ही सिद्धि मिलती है। पर ज्योतिषी , ब्राह्मण या भगवाधारी यथार्थ में शुद्ध भी होना चाहिए यदि वे पितृघाती , गुरुद्रोही या परायी नार से संबंध स्थापित से युक्त है तो इन पर श्रृद्धा या इनकी सेवा से कोई भी फल नहीं मिलता। और कर्मकांड के लिये यदि आपने ऐसे ब्राह्मण को बुलाया है जिसने कम से कम एक लाख गायत्री का अनुष्ठान नही किया वह भी अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक तो उस साधारण ब्राह्मण पर चाहे कितनी भी श्रृद्धा रखो वह कर्मकांड सफल नहीं होगा । शिव पुराण के अनुसार वह ब्राह्मण अपात्र है। तथा यदि वह कर्मकांड की अति कमाई के कारण तीन काल की संध्या न करे तो वह शूद्र के समान ही होता है ऐसे कर्मकांड से हानि होती है क्योंकि आपने पात्र और सुयोग्य अन्य ब्राह्मण के धन को इस पर नष्ट कर दिया।

यह ब्रह्म वैवर्त पुराण में पढ़े कि संध्याहीन को ब्राह्मण लोग अपने वर्ण से बहिष्कृत कर दें।

मन्त्रभेद–

अक्षरों के आधार पर भी मन्त्रों के भेद होते हैं–

1. एक अक्षर वाले मन्त्र को 'पिण्ड' कहते हैं।
2. दो अक्षर वाले मन्त्र को 'कर्तरी' कहते हैं।
3. तीन अक्षर से नौ अक्षरों तक के मन्त्र को 'बीज' कहते हैं।
4. नवार्णमन्त्र यथार्थ में बीज है पर मंत्र कहा ही जाता है
5. नमः शिवाय और रां रामाय नमः बीज ही है न कि मंत्र।
6. दस अक्षर से बीस अक्षर तक के मन्त्र को ही यथार्थ में 'मन्त्र' संज्ञा से विभूषित किया जाता हैं।
7. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यह मंत्र है और ॐ नमो भगवते रुद्राय यह भी मंत्र है। कुल सात करोड़ मंत्र कहे जाते हैं।
8. बीस से अधिक अक्षरों वाले मन्त्र को 'माला' मन्त्र कहते हैं।

तन्त्रों में कहा गया है विविधो हि मन्त्रः कूटरूपोऽकूट रूपश्च ।

संयुक्तः कूट इति व्यवह्रियते उत्तरोऽकूट इति ॥

अर्थात् मन्त्र दो प्रकार के होते हैं कृकूट और अकूट। जिस मन्त्र में अनेक वर्ण परस्पर संयुक्त हों, वह कूट मन्त्र तथा जिसमें सामान्य वर्ण–योजना हो, वह अकूट मन्त्र कहलाता है।

'प्रयोगसार तन्त्र' में मन्त्रों के भेद बतलाते हुए कहा गया है–

अनेक अक्षरों वाले जो मन्त्र हैं, वे मालामन्त्र कहे जाते हैं, अक्षर तक के जो मन्त्र हैं, वे बीजमन्त्र हैं। बीस अक्षरों तक के मन्त्र 'मन्त्र' कहलाते हैं, और इनसे अधिक अक्षर वाले मन्त्र मालामन्त्र कहलाते है।

पुरुष–स्त्री मन्त्र–

1. जिस मन्त्र के अन्त में 'वषट्' या 'फट्' शब्द आता है उसे 'पुल्लिग मन्त्र' या 'पुरुष 'मन्त्र' कहते हैं।

2. जिसके अन्त में 'वौषट्' या स्वाहा शब्द आता है वे स्त्रीलिंगी मन्त्र कहे जाते हैं।

3. जिन मन्त्रों के अन्त में नमः आए, उन्हें नपुंसक मन्त्र कहते हैं।

विद्या क्या है ?

उत्तर–

जिस मन्त्र का अधिष्ठाता देवता 'पुरुष' हो, उसको 'मन्त्र' तथा जिस मन्त्र की अधिष्ठात्री देवी हो उसे 'विद्या' कहा जाता है। यह यथार्थ संज्ञा है पर हम मात्र समझने या बोलचाल की भाषा में कुछ न कुछ (कुछ तो भी) कहते रहते हैं। पर जो महापापी या पुण्यों का ढेर अपने पास रखे हैं वे मात्र तीर्थ में ही मुक्त होते हैं अन्यत्र नहीं।

सब कुछ साधना करने या अनन्य भक्ति से होता है मात्र फेसबुक, मैसेंजर आदि पर दिन बिताने या चैटिंग से नहीं।
वे नर यथार्थ में नर नहीं देव हैं , ईश्वर के निज पार्षद हैं जो अपने भोग, सुख ,पद और ऐश्वर्य को त्यागकर सुबह 10 से 5 तक भी ईश्वर के कार्य को समर्पित हैं। अपने दैहिक सुख , अपने शारिरिक उपभोग, अपनी महत्वाकांक्षाओं लिए तो सब लोग जीते हैं दिव्य देवपुरुष तो राष्ट्र, धर्म या अध्यात्म के लिए ही जीते हैं फिर भले ही आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन ही क्यों न करें। वैसे भी एकाध बार तो आजीवन ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना ही चाहिए। हर जन्म में तो भोग भोगते हो आप ; और आश्चर्य यह है कि भोगों को भोगने के लिए भोगमार्ग चुनकर भी उसे ईश्वर की आज्ञा मान बैठते हो। ये जितने भी लोग दिख रहे हैं या अन्य आश्रम के ; वे चाहते तो वे भी आपके समान ऐश्वर्य पा सकते थे पर उनको विष्ठा के समान त्यागकर संन्यास पथ के पथिक हो गए अतः इनका विशेष मान रखें; अपने धन या पद का रोब इन पर न झाड़े।

प्रश्न– क्या मंत्रदीक्षा वाले मनुष्य को ही मुक्ति मिलती है ?

उत्तर– ऐसा कुछ भी नहीं।

जिसने मंत्र दीक्षा नहीं ली वह भी मात्र पंचाक्षरी से मुक्त हो जायेगा। अथवा शाम्भवी दीक्षा से ही आप मुक्त हो जाओगे । मंत्र दीक्षा , शाम्भवी और शाक्तिक ये तीन मुख्य दीक्षाएं होती हैं। अर्थात उच्च स्तरीय साधकों या जिज्ञासुओं को मंत्र दीक्षा अनिवार्य नहीं । न ही मंत्र जप की आवश्यकता है। मुमुक्षु वर्ग सीधे ही ब्रह्मनिष्ठ गुरु के उपदेश को सुनकर चिन्तन मनन से भी तद्भावित हो जाता है यही कैवल्या पद है । राजा जनक ने अनेक मंत्र, यंत्र और तंत्र का सेवन कर डाला पर वे अष्टावक्र जी के अभिन्न भाव के सम्यक् ज्ञान से ब्रह्मनिष्ठ हो पाये।

मंत्र द्वैत को बढ़ाता है और मंत्र अपर मुक्ति का हेतु है।

कैवल्या के अलावा सारी मुक्ति इस अक्षयरुद्र के अनुसार अपर हैं जिनमें विरह , दुख , जीवभाव, अश्रु, मिलना – बिछुड़ना, तेरा मेरा लगा ही रहता है उन लोकों में भी लड़ाई झगड़े की स्थिति निर्मित होती रहती है वहाँ भी ईर्ष्यारहितता नहीं मिट पाती। सालोक्य पद वाले सारूप्य वालों से ईर्ष्या करते हैं और उनके मन में यह दुख रहता है कि मेरा शरीर क्यों उस भक्त जैसा नहीं हो पाया। या मैं क्यों सायुज्य नहीं पाया। वहाँ भी बाग बगीचे होते हैं जिनमें एक भक्त स्वामी होता है तो दूसरा नौकर (भले ही वह सालोक्य हो पर पदों की भिन्नता अवश्य होती है) अतः ये सब मुक्तियाँ अपर वर्ग के अंतर्गत हैं पर वज्रसूचिक उपनिषद का अभिन्नभाव ही यथार्थ है। अतः वह परम परामुक्ति किसी अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ के स्पर्श , संभाषण, उपदेश से भी हो जाती है। इसमें किसी भी आवरण के बार बार स्मरण की तनिक भी आवश्यकता नहीं पर.......... साधारण मनुष्य के लिए तो सुमिरन और स्मरण या मंत्र आदि ही उत्तम है यह हमारा उपदेश तीव्रतम मुमुक्षा वाले के लिए है या जिसका आई क्यू लेवल अवधूत उपनिषद को समझ सके और एक ही ब्रह्म को सर्वमय माने उसके लिए है। अतः महावाक्य के अलावा किसी भी नमः युक्त मंत्र की जरूरत नहीं। अर्थात मात्र मंत्र दीक्षा ही मुक्ति का उपाय नहीं। वैसे गुरुहीन मनुष्य के लिए एक ओर बात –

पंचाक्षरी और पंचपदी के उच्चारण से भी अपर नामक सालोक्य या सामीप्य आदि मुक्ति की गारंटी हो जाती है पर जीव आइंदा पाप न करें।

दूसरी बात – आप यदि तीर्थ या शिव मंदिर के निकट मरते हो तो भी शिव सायुज्य प्राप्त होगा यह लिंगपुराण कहता है पर शिवलिंग के प्रकार के अनुसार ही अलग अलग किलोमीटर की सीमा निर्धारित है। पर रुद्राक्ष धारण व भस्म धारण युक्त होना चाहिए ।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– क्या देवता या पितर मुक्त हैं ?

उत्तर– ये सब पुण्यात्माओं को तप के आधार पर मिला पद मात्र है पर देववर्ग यदि मुक्त होता तो इन्द्र व चंद्रमा ने जो भारी पाप किया था वह पाप भला वे क्यों करते।

और कण्डू व विश्वामित्र या नर नारायण की तपस्या भंग करने अप्सराओं को क्यों भेजते। ये सब एक मन्वन्तर या कुछ कल्पों की आयु वाले होते हैं। बस न कि सभी ब्रह्मनिष्ठ।

देखो – भगवान शंकर जी का कथन –

हे देवी ! जब तक देवता , ऋषि , गंधर्व और पितर ब्रह्मनिष्ठ गुरु की सेवा करके महावाक्यों को नहीं समझेंगे तब तक मुक्त नहीं होंगे।

यह ऋषि संज्ञा , देव संज्ञा पितर आदि संज्ञा धारी भी ब्रह्मनिष्ठ गुरु की कृपा से ही संज्ञाहीनता का अनुभव कर नाम व पद से भी मुक्त होकर सर्वत्र व सर्वमय ब्रह्म हो पायेंगे। वही मुक्ति है। पदस्थ देव या पदस्थ पितर अपने आपको जब तक ब्रह्म से एकरूप तद्भावित नहीं कर लेते तब तक वे भी जन्म मरण से मुक्त नहीं हो पाते।

न मुक्तास्तु गंधर्वः पितृयक्षास्तु चारणः।

ऋष्यः सिद्ध देवाद्याः गुरुसेवा परांमुखा। ।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–महाराज जी सच्चे परम्परा प्राप्त प्रामाणिक ब्रह्मनिष्ठ गुरु की प्राप्ति के लिए साधक को क्या करना चाहिए क्योंकि आजकल गुरु के नाम पर बड़ा छलावा हो जाता है इसके लिए साधक सच्चे गुरु तक पहुंचने के लिए क्या करें।

उत्तर–

ब्रह्मनिष्ठ का तात्पर्य केवल अभिन्नभाव से है, अपरोक्ष ज्ञान से है अर्थात जो गुरु अद्वैतात्मक हो वही ब्रह्मनिष्ठ है। शेष भक्तियोग के गुरु कहलाते हैं जो योगवाशिष्ठ के अनुसार ज्ञान की मात्र दूसरी से तीसरी भूमिका तक सीमित रहते हैं। नर नारी शाम्भवी दीक्षा या शाक्तिक दीक्षा से भी ब्रह्मनिष्ठ हो जाते हैं इसके लिए परंपरागत गुरु की आवश्यकता नहीं। बिना मंत्र दीक्षा के भी शाक्तिक या शाम्भवी दीक्षा होती है जो विष्णु या शंकर जी अथवा गणपति साक्षात् के द्वारा भी अधिकों को मिल जाती है। परंपरा अनिवार्य नहीं।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– जी आपके कहे अनुसार ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा चाहे 2 साल लग जाये .....पर क्षमा करे कभी विवाह वाले घरों में जाऊं तो माला जाप या अनुष्ठान का नियम कैसे करूं..... शादी रिश्तेदारी यह भी अनिवार्य लगती है...यही चिंता है।

उत्तर–

संकल्पित मनुष्य अति अल्प समय के लिए बाहर जाते हैं और बिना खाये वापस आ जाते हैं क्योंकि पराये अन्न में सामने वाले के पापों का निवास रहता है। फिर भी साधनापरायण होने पर उन दिनों तो भूलकर भी न खायें। हमारी दो शिष्याएं हैं वे पुरश्चरण पर पुरश्चरण कर रही हैं पर पिछले 3 साल से अपने हाथ का बना भोजन ही खाती हैं और शादी में जाती हैं

कोई अति स्नेह से बार बार बुलाये तो ही.........तब भी मात्र मिलकर या बिना खाये वापस आ जाती हैं । जाने से पहले वे अपनी शर्त रख देती हैं कि भोजन के लिए कोई जबरदस्ती नहीं करेगा। और अति दूर वे जाती ही नही। बहुत से बहुत 30–35 किलो मीटर तक

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– क्या ! बिना अनुष्ठान के मात्र दो चार बार प्रार्थना भी सुनी जाती है ?

उत्तर– यदि आप निष्पाप और निश्छल हो तथा साधन चतुष्ट्य से संपन्न या आप पर गुरु या इष्ट की अनुग्रहात्मक दृष्टि है तो आपको अनुष्ठान के बिना ही सब कुछ मिलता है बस इच्छामात्र हो जाये। पापी , स्त्रीलम्पट, छल कपट और ईर्ष्यालु मनुष्य को अपनी कामना सिद्धि के लिए पहले मन की शुद्धि के लिए ही साधना करना चाहिए। तदोपरान्त सब कुछ सहज होता है।

शायद आपको पता नहीं कि हमें पहले के अनुष्ठानों में फल नहीं दिखता था 80–90 दिन ऐसे ही बीत जाते थे पर महादेव के दर्शन के बाद हर अनुष्ठान मात्र 11 से 21 दिन में फल देता है । कुछ कामना तो उस कामना की इच्छा होते ही 10 दिन के अंदर या एक दो घंटे में ही फल मिल जाता है। हो सकता है कि इस पोस्ट से हमको नजर लग जाये पर यह आज तक का रिकॉर्ड है पर यथार्थ संभाषण व यथार्थ शिक्षा के लिए कहना पड़ा। आपके अभ्युदय व कल्याण के लिए यह बात कही है।अब हमारी सिद्धि होगी या नहीं यह तो भगवती जानें पर आपके कल्याण के लिए यह सत्य कह डाला।

●हमारी वृन्दावन में जाने की इच्छा हुई तो तत्काल सारी व्यवस्था हो गई।

● हमने वहाँ पहुँचते ही राधे रानी से मन में कहा कि – हे देवी ! हे पराम्बिका! आप श्रीकृष्ण वल्लभा को नमस्कार! इस अक्षयरुद्र की पिछले 11 साल में 2 पुस्तक ही चनइसपेीमक हो पाई पर आप कुछ करो मैं असमर्थ हूँ और केवल श्रीमहादेव गुरु की आज्ञा से काशी न जाकर आपके वृन्दावन में आया हूँ न तो मेरे पास स्ंचजवच है न ही धन । और दो तीन पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ भी बिना धन के सड़ गई मैं आपकी शरण में हूँ गुरु के आदेश से पर मेरे इष्ट मेरे गुरु श्रीनीलकंठ हैं।

पुराणों के अनुसार मोक्ष की सात पुरियाँ हैं उनमें मथुराक्षेत्र एक है यह मैं महादेव की कृपा से जान गया। और मेरा मन और मस्तिष्क काशी का निवास भी चाहता है। अतः एक प्रकार

से मैं शैव आपका अतिथि ही हूँ न कि यात्री । तथा तीर्थ के सम्मान के लिए मैं नंगे पैर आया हूँ जबकि मैने आज तक 300 मीटर की यात्रा भी नंगे पाँव नहीं की। और इससे मेरी तबियत भी खराब हो सकती है। और धूप में थोड़ा–बहुत भी नंगे पाँव चलने पर

मुझे बुखार आ जाता है देह कृषकाय अति कमजोर है अतः आप ही जानों।
ऐसा कहते ही वहाँ 59 दिनों में 30 चमत्कार हुए। जो हमने अपनी पुस्तक (अंशभूतशिव एक आत्मकथा) में किया है। और परिणाम देख लो आज हम 18 पुस्तकों के लेखक हैं। तथा अगले 20 दिन में एक साथ छः किताबें भी आने वाली हैं। देख लो राधे रानी का चमत्कार। और कुछ मूर्ख लोग राधे जी के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह उठाते हैं। पर वे मूर्ख सोचते ही नहीं कि पद्म पुराण, स्कंद पुराण तो क्या श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में भी जगह जगह राधा जी के गुप्त मंत्र और स्तोत्र की विधि बताई गई है न कि आपके खानदान की नानी अम्मा या दादी अम्मा का महात्म्य।
तथा दूसरा चमत्कार भी लिख रहे हैं – 15 दिन तो वहाँ 8–10 दिन चमत्कार हो ही गए थे तो हमने हमारे मामा से कहा कि – मामा जी !
इतने चमत्कार हो रहे हैं आश्चर्य है पर एक और हो जाये वह यह कि – हमें भोजन पानी में अधिक समस्या है और किसी आश्रम पर डैली भोजन करना अनुचित लगता है (हालांकि श्री झंअपबींदकतं वें रप का दरबार 24 घंटे खुला था और पहला चमत्कार श्री कविचन्द्रदास जैसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी की प्राप्ति ही था)
या किसी संत के भंडारे में लाइन में हम नहीं लग सकते इतना समय नहीं उस समय हम शिव चरित मानस भाग प्रथम लिख रहे थे। तो अगले ही दिन एक महान शिष्या दिल्ली से दो माह तक वृन्दावन रहने को आई और उसका अगली शाम को फोन आया कि – अंशभूतशिव जी आप किस जगह रहते हो मैं भोजन वितरण ग्रुप समूह में शामिल होकर यहीं रहने लग गई अतः कल से दोनों समय मैं स्वयं टेम्पो से आपके आश्रम पर ही पवित्र भोजन लाऊँगी.... तो वास्तव में यह सब अद्भुत हुआ।

और मात्र 8 दिन में 44 हजार का दान दक्षिणा आ गई जिससे हमने संचजवच खरीद लिया । इससे अब पुस्तक लेखन का कार्य अति फास्ट हो गया।

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–सवा लाख गायत्री जप करने से क्या फल मिलता है और गायत्री जप करने से क्या–क्या फायदे होते हैं यह बताने की कृपा करें आपकी अति कृपा होगी–

(लोकेश पाठक जी का अतुलनीय प्रश्न)

उत्तर–

यह हम कुछ दिन पहले बता चुके थे सार संक्षेप में सुनें –

●नित्य एक हजार बार किया हुआ जप ब्रह्मलोक प्रदान करनेवाला होता है–ऐसा जानना चाहिये।

●नित्य सौ बार किया हुआ जप इन्द्रपदकी प्राप्ति करानेवाला माना गया है।

● कुल 100 लाख जप से ब्राह्मण संपूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है और 10 लाख से तीन से 10 जन्मों की शुद्धि हो जाती है।

●ब्राह्मणेतर पुरुष आत्मरक्षाके लिये जो स्वल्पमात्रामें जप करता है, वह ब्राह्मणके कुलमें जन्म लेता है।

(इतरत्त्वात्म रक्षार्थं ब्रह्मयोनिषु जायते शि. पु. विद्ये. सं. अध्याय 13 , श्लोक 45)

●बारह लाख गायत्रीका जप करनेवाला पुरुष पूर्णरूपसे ब्राह्मण कहा गया है। अतः 10,00000 के अतिरिक्त दो लाख और जपें। ऐसा ही पूर्ण क्षत्रिय हेतु समझो।

गायत्री पहले पाप नष्ट करती हैं तदोपरान्त कामना अतिशीघ्र सिद्ध होती है।

देवी रहस्य महाग्रंथ में हमने विविध समिधाओं से गायत्री जी का माहात्म्य विस्तारपूर्वक बताया था वहीं पढ़े।

●जिस ब्राह्मणने एक लाख गायत्रीका भी जप न किया हो, उसे वैदिक कार्यमें न लगाये।

●एक दिन बिना गायत्री के बीते तो एक माला अतिरिक्त करें।

●10 दिन का अंतराल हो गया हो तो एक लाख गायत्री से उस दोष का मार्जन हो जाता है पर एक माह से अधिक दिन बीत गए हो तो पुनः उपनयन संस्कार कराना चाहिए।

(यह प्रमाण शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 13 में श्लोक 30,31 में देखें)

●पर आधुनिक युग में कर्मकांड के लिए अनिवार्य पात्रता एक लाख गायत्री जापक कही गई है इसका तात्पर्य यह है कि यदि किसी ब्राह्मण ने संध्या छोड़ दी हो 10 दिन से अधिक समय तक या एक दो मास तो पहले तो पुनः उपनयन संस्कार कराकर 1 लाख अतिरिक्त जपे

इससे दोष निवारण होगा तदोपरान्त कर्मकांड के लिए पात्र बनने के लिए पुनः 100000 गायत्री जपे।

इतना करने पर भी आप यजमान का अधिक कल्याण नहीं कर पाओगे ; क्योंकि पूर्ण ब्राह्मण ही यजमान का पूर्ण कल्याण करता है और पूर्ण ब्राह्मण कौन ? यह

शिव पुराण की विद्येश्वर संहिता के अध्याय 13 में श्लोक 46 देखें अर्थात अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक 12 लाख गायत्री मंत्र का जप करके ही आप यजमान का परम मंगल कर सकोगे।

सत्तर वर्षकी अवस्थातक नियमपालनपूर्वक कार्य करे। इसके बाद गृह त्यागकर संन्यास ले ले। परिव्राजक या संन्यासी पुरुष नित्य प्रातःकाल बारह हजार प्रणवका जप करे।

● यदि एक दिन नियमका उल्लंघन हो जाय, तो दूसरे दिन उसके बदलेमें उतना मन्त्र और अधिक जपना चाहिये; इस प्रकार जपको चलानेका प्रयत्न करना चाहिये।

●यदि क्रमशः एक मास उल्लंघनका व्यतीत हो गया हो तो डेढ़ लाख (150,000) जप करके उसका प्रायश्चित्त करना चाहिये।

●इससे अधिक समयतक नियमका उल्लंघन हो जाय तो पुनः नये सिरेसे गुरु से नियम ग्रहण करे। यह भी इसी विद्येश्वर संहिता के अध्याय 13 में है। ऐसा करनेसे दोषोंकी शान्ति होती है, अन्यथा रौरव नरकमें जाना पड़ता है।

●●आप सब कुछ पा सकते हो●●

गायत्री मंत्र के लगातार पांच वर्ष तक अखंडब्रह्मचर्यपूर्वक जप ......से अणिमादि सिद्धियाँ द्विज को प्राप्त हो जाती हैं।पर इतना होते हुए भी देवत्व नहीं मिलता । देवत्व के लिए सात साल तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक गायत्री की सम्यक् साधना अनिवार्य है। इसमें चाहो तो स्वपाकी होकर साधना करो चाहे भिक्षुक बनकर एक समय आहार खाओ और साधना करते रहो । पर मनुत्व देवत्व से भी बड़ा है। और 10 वर्ष तक की साधना से इंद्र पद का अधिकार प्राप्त हो जाता है ।

और 11 साल में पुरुष ब्रह्मा जी का पुत्र बनकर दक्ष प्रजापति जैसा सिद्धिमान भी हो जाता है। और यदि वह कुल एक वर्ष और तप ले तो 12 साल के अखंडब्रह्मचर्यपूर्वक जप तप व्रत–उपवास से वह ब्रह्मा ही हो जाता है।

ऐसा ही नमः शिवाय का अलग अलग उत्तरोत्तर फल है।

शास्त्रों में जिन साधारण लोगों को गायत्री का अधिकार नहीं वे पंचाक्षरी से ही सब कुछ पा सकते हैं।यह सब आप विस्तार से श्रीमद्देवीभागवत महापुराण में पढ़े और प्रेक्टीकल भी करें। हम संकेत भर दे रहे हैं।

इसी से जान लो हे मनुष्य वर्ग! अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने की कितनी बड़ी महिमा है और हम आजकल के मूर्खानन्दम् बस चार दिन बीते नहीं संभोग के लिए लालायित हो जाते हैं। यही है महा मूर्खों के पतन का कारण।

और उपदेश देते फिरते हैं कि – ऐसा करो ....वैसा करो।

और अपने अंदर नहीं झांकते।.............जिन लोगों को ॐ नमो नारायणाय या ॐ रां रामाय नमः अथवा ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः गुरुदीक्षा में मिला है वह इसके अनुष्ठान से भी सब कुछ पा सकते हैं ऐसे में तीन समय गायत्री के नियम (1000,100,28) का भी पालन करें। और 3–4 घंटे अपने गुरुमंत्र के पुरश्चरण में लगा रहे।

और साधना की सामान्य जानकारी चाहिए तो हमारी पुस्तक स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम अध्याय 33 देखें।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

<u>प्रश्न– सप्तर्षियों व ध्रुवजी के बारे में कुछ बताएं हे अक्षयरुद्र!</u>

उत्तर– सूर्य मंडल से लेकर ध्रुव लोक तक 10 स्वर्ग (ऐश्वर्यात्मक मंडल) हैं ये सभी स्वर्लोक के दस अंग हैं । सबसे ऊँचे स्वर्गीय मंडल का नाम ध्रुव लोक है और इस ध्रुव लोक से जस्ट विलो (बिल्कुल नीचे) ही सप्तर्षि मण्डल है। उसी में हर मन्वन्तर के नवीन नवीन सात सात सप्तर्षि रहते हैं। अभी वर्तमान में जो हैं वे सब श्रीमद्देवीभागवत महापुराण के आठवें स्कंध के अध्याय 16 के अनुसार शनिमंडल से 11 लाख योजन ऊपर स्थित हैं और ध्रुव लोक से नीचे। अर्थात सप्तर्षि लोक शनि व ध्रुव के मध्य स्थित है।

ये सभी सप्तर्षि आज भी ध्रुव लोक (विष्णुपद) की परिक्रमा करते हैं। इस सप्तर्षि मंडल से ऊपर (11 लाख योजन ऊपर) ही ध्रुव लोक है। ध्रुव भक्तो में शिरोमणि हैं ये ध्रुव इस कल्प के प्रथम मन्वन्तर में ही पराभक्ति को प्राप्त हो गए थे और आधुनिक मन्वन्तर में अदिति ने अनेक देवताओं को जन्म दिया इस कारण भी यह सब देवता उन पूर्व वरिष्ठ भक्तराज ध्रुव महाराज के भक्त हैं इन्द्र, सूर्य, अग्नि तो क्या इन्द्र व सूर्य के पिता कश्यप भी ध्रुव जी से सत्संग समय समय पर प्राप्त करते हैं और इस ध्रुव लोक की प्रदक्षिणा भी करते हैं। अतः हम आज ऋषि पंचमी पर भक्तराज ध्रुव को तथा सप्त ऋषियों को

नमन करते हैं। पद्मपुराण सृष्टिखण्ड के अनुसार पितृगण भी अपने पिता कश्यप की आज्ञा से ध्रुव जी का सम्मान करते हैं। पर पितृकार्य को देव कार्य से बड़ा इस पद्मपुराण में बताया है। क्योंकि वरिष्ठ पितर ब्रह्मा,वसिष्ठ और इनके कुछ भाईयों की संतान भी हैं जो संध्या कथा के संदर्भ में इनका जन्म हुआ था इस नाते आधुनिक मन्वन्तर के सभी देवता पितरों को भी नमन करते हैं इस कारण मनुष्य का भी कर्तव्य है कि देवकार्य से अधिक महत्व पितृकार्य को दे। इस कल्प में पूर्व के छः मन्वन्तर बीत चुके अतः 42 सप्त ऋषिगण अपने अपने ज्ञान से इस विश्व को आलोकित कर चुके उनसे से अधिकांश आज भी जीवित हैं (च्फ्ग थ्यसम) पर इस मन्वन्तर में अत्रि और वसिष्ठ दो कॉमन हैं जो प्रथम मन्वन्तर में भी इस पद पर पदस्थ थे हालांकि बीच में अन्य ज्ञानी जनों ने इस पद पर कार्य किया ।

इस आधुनिक मन्वन्तर के सात ऋषियों के नाम अग्र वर्णित हैं।

1. अत्रि जी (इनकी पतिव्रता पत्नी को कौन नहीं जानता इनके ही पुत्र दत्तात्रेय जी हैं)
2. वसिष्ठ जी (इनका पुनर्जन्म हो चुका है पहले ये ब्रह्मा जी की संतान थे अब मित्रावरुण दो देवताओं के)
3. कश्यप जी (सूर्य, वामन इन्द्र आदि के पिता)
4. विश्वामित्र जी (परम तप से इन क्षत्रिय ने ब्राह्मणत्व पाया)
5. गौतम जी (शिव चरित मानस में हमने इनकी कथा कही है गौतमी के प्रकट लीला की)
6. जमदग्नि जी (परशुराम जी के पिता)
7. और भारद्वाज जी हैं।

एक मन्वन्तर तक सप्त ऋषियों का समय है पर ध्रुव जी का समय 14 मन्वन्तर तक तदोपरान्त वे वैकुण्ठ में चले जायेंगे।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न— एक को पूजें या सभी को... समय तो कम ही मिल पाता है।

उत्तर— इष्ट का चुनाव कर लो और उन्हीं को समर्पित रहो पर जिस लोक में आप जाना चाहते हो उसी लोक के अधिष्ठाता (प्रभु) का अधिकाधिक या सतत् जप करना चाहिए। और गुरु मंत्र जो भी मिले , भले ही किसी भी रूप का मिले;उसका जप गुरु का आदेश मात्र मानकर उसी के अनुसार कम से कम 1, 5, 11 या 16 माला अथवा जो भी हो करें। और गुरु की आज्ञा जहां भी भेजने की हो तो आप बिना संकोच के जाऐं वे भले ही गणपति मंदिर में भेजें या देवी के आलय में। ये सब आप इष्ट को लक्ष्य करके करें। मंत्र (कुछ भी हो , किसी

भी रूप का हो उस) का लक्ष्य भी इष्ट की खुशी हो न कि अन्य । और सकाम साधना (स्तोत्र की ही) निश्चित कालखण्ड में **एक मनुष्य किसी भी एक रूप की** स्वतंत्र रूप से कर सकता है।

धन के लिए– यमुना, लक्ष्मी , कुबेर तथा बिल्ववृक्ष पर शिव भी उत्तम हैं।

ऐश्वर्य लाभ व संकट शमन के लिए श्रीदुर्गा सर्वोत्तम।

ज्ञान व सुख के लिए महारुद्र सर्वोत्तम

प्रेम और आनंद के लिए राधा

द्विजों के लिए संध्याकाल में एकमात्र गायत्री अनिवार्य शेष समय चाहे कुछ भी

अतिशत्रु हों तो इनके नाश के लिए काली, तारा या बगलामुखी।

मोक्ष के लिए कोई भी ब्रह्मनिष्ठ या हरि हर या सदाशिव, ललिता, शिवा या पंचक प्रकृति में से कोई भी एक । पर एक समय में एक ही अनुष्ठान करें।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– हनुमान चालीसा पाठ करने से क्या होता है ?

(एक भक्त)

उत्तर –श्री हनुमान जी की कृपा और रोगनाश

एक पाठ करके जो यात्रा करता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती।

100 पाठ से संकट दूर

1000 पाठ से विशेष कृपा (पर ब्रह्मचर्य पूर्वक)

10,000 पाठ होते ही परम वीर के दर्शन (पर यह साधना ऐसे मंदिर में करें जहाँ रात को 9 के बाद कोई न आता हो और साधना का समय रात 8से 10 रखें ।

नोट – अनुष्ठान के सारे नियमों का पालन करें।

लाल वस्त्र (बिना सिले) पहनकर साधना करें।

साधना पूरी होने तक रजस्वला नारी तथा अशुद्ध तन से युक्त पुरुष को स्पर्श न करें उनकी सांसो का स्पर्श भी न हो। अतः अकेले में रहकर ही साधना उत्तम है।

साधनाकाल में किसी के घर न जायें। (अति मजबूरी में जायें तो उस घर के बिस्तर पर न बैठे)।

और उस घर पर बना भोजन भी न खायें ।

साधनाकाल में श्री राम व हनुमान जी के परिवार की पूजा भी अनिवार्य है।

चालीसा का उच्चारण हो न कि मन में। (स्तोत्र या कवच का विधान उच्चारण ही होता है)

और एक खास बात– साधनाकाल में मोबाइल न चलाये।

मन चंचल होता है यदि कहीं अश्लील रील या अश्लील वीडियोज दिख गये तो मध्यम स्तर के भक्त का अंतःकरण तत्काल दूषित हो जाता है।

निर्वस्त्र नारी को देखने पर मात्र शुकदेव जैसे ही विचलित नहीं होता।

आदि आदि ....

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–क्या भगवान शंकर पंचाक्षरी मंत्र का जप करते हैं ?

उत्तर– बिल्कुल करते हैं उसी मंत्र से त्रिदेव अपने देवत्व को बनाये रखते हैं। यह मंत्र (नमः शिवाय) रुद्र देव का नहीं अपितु सदाशिव जी को समर्पित हैश्री मद्देवीभागवत महापुराण के अनुसार तथा शिव पुराण के अनुसार सदाशिव जी के हृदय से रुद्रशंकर जी प्रकट हुए तथा दायें व वाम भाग से ब्रह्मा और विष्णु जी।

पर व्यपोहन स्तोत्र के अनुसार कैलाशपति सदाशिव जी से अभिन्नभाव में रमण करते हैं तब इस मंत्र का जप नहीं करते।

000000000000000000000000000000000000000000000000

Question –

We will attain salvation by chanting the name of Ram or Shiva- We do not need the scriptures of Ved Vyas or the words of saints-

– एक मूर्ख का भाव

Answer according to me-

●You are the leader of fools who do not know the truth.

● In your arrogance and ignorance you are insulting the words of scriptures and saints.

● If even class 8th maths cannot be understood without a teacher then how will you understand parascience meanse real facts.
●Without the words of saints you cannot attain true parascience.

● In Navdha Bhakti the service of saints has incomparable significance.

●The farmer grows crops….. Crops do not fall from the sky………….Only then we can eat grains or pulses oilseeds etc.

●The name of Ram or Shankar does not automatically put food in the mouth but creates a medium- Similarly the correct knowledge of God will not fall directly from the sky.

●it will be obtained from the words of saints.

●Correct information can also be obtained from the scriptures.

& Akshayrudra anshbhoot shiv

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न—

महाराज जी ! ब्राह्मण वर्ण में अनेक जातियाँ होती है पर श्री रामभद्राचार्य जी के अनुसार इसी वर्ण में कुछ जातियाँ अन्य जातियों से छोटी भी हैं। मेरी दृष्टि में एक जितेन्द्रिय नैष्ठिक ब्राह्मण हैं जो संत भी हो चुके अर्थात घर छोड़कर भजन पूजन में

ही समर्पित हो गए पर मैं ऐसा ब्राह्मण हूँ जो श्री रामभद्राचार्य जी के अनुसार उस जाति से महान श्रेष्ठ हूँ। भार्गव, वशिष्ठ, पराशर,शर्मा , दीक्षित , पाठक, त्रिपाठी , द्विवेदी, त्रिवेदी , चतुर्वेदी आदि शब्द का भी वे वर्गीकरण कर चुके।

अब मैं क्या उन संत को जाति के कारण मुझसे हीन मानकर वरण न करूँ या करूँ आप जो कहें मैं वही करूँगा।

उत्तर–

भक्तों के उत्तर की इच्छा। जो भी उत्तर मिलेगा वह प्रस्तुत किया जायेगा–

हम आप सभी का सार जानकर अपनी पुस्तक में लिखेंगे। अनेक भक्तों ने बहुत ही अच्छा जवाब दिया, उनमें से दो उत्तर सुनें–

●● उत्तर–सामाजिक व्यवस्था वैवाहिक संबंध संचालन हेतु बर्ण व्यवस्था संचालित की गई ब्राह्मणों में ऊंचा नीचा कुछ नहीं है सब बराबर है किसी को ह्येय दृष्टि से नहीं देखना चाहिए इससे दूरियाँ बढती हैं वर्ण व्यवस्था एक में जोड़ने के लिए बनी है न कि तोड़ने के लिए।

भक्त की श्रेणी अलग है

वह बर्ण व्यवस्था को

नष्ट कर देती है

विद्वानता, कर्मकाण्डिंता, साधुता यह सब अलग अलग श्रेणियाँ है उन्हीके आधार पर सभी का मान सम्मान होता है और करना चाहिए किसी से ईर्ष्या आदि उचित नहीं है..................
जैजैश्रीराधे जयमाताकी।

●●उत्तर– जब साधारण शूद्र या वैश्य भी श्रीमद्भागवत महापुराण के 7/11/35 व वज्रसूचिक उपनिषद के अनुसार ब्राह्मण संज्ञा युक्त हो सकता है तो ब्राह्मण क्यों नहीं ?

और चाण्डाल या वर्ण संकर अथवा शूद्र भी या स्त्री भी जिसको अनेक पुराणों में शूद्र सम घोषित कर डाला वे भी पराविज्ञान प्राप्त कर तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ हो जाते हैं और साक्षात् महेश्वर या विष्णु सदृश व परात्पर ब्रह्म तो ब्राह्मण भी ब्रह्मनिष्ठ होने पर परम पूजनीय है। फिर भले ही चतुर्वेदी के सामने ब्रह्मनिष्ठ त्रिवेदी ही क्यों न खड़ा हो। गीता में भी चार प्रकार के भक्तों में से तद्भावित ही हरि स्वरूप है। और आपने ब्राह्मण संज्ञा के बारे में ब्राह्मणगीता में भी कहा ही है।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–

कितने प्रकार की गुरुदीक्षा होती है?

●●उत्तर– शैव महापुराण के अनुसार तीन प्रकार की गुरुदीक्षा होती है जिसमें निम्न स्तर के साधकों को मंत्रदीक्षा पर ही अधिकार है और जो ज्ञान की तीसरी भूमिका पर (सत्संग स्वाध्याय मात्र से या श्मशान की राख से अनासक्त व वैराग्यवान हो गए) पहुँच चुके वे बिना मंत्र के भी मुक्त हो जाते हैं। दीक्षा के उन दो प्रकारों में शाम्भवी व शाक्तिक दीक्षा है पहली मंत्र दीक्षा (किसी किसी परंपरा में पहले नाम दान तदोपरान्त मंत्र दान का नियम है) स्कंद पुराण के श्रीराम– हनुमंत संवाद में तो यह तक बताया है कि मुमुक्षु या वीतरागी मनुष्य मात्र सत्संग से ही मुक्त हो जाते हैं क्योंकि उनके पूर्व जन्म का गुरु ही उनको इस जन्म में अतिशीघ्र वीतरागी बनाता है और ज्ञान की अगली भूमिका के लिए शाम्भवी या शाक्तिक दीक्षा (देह में प्रवेश करके बिना दर्शन दिये भी)देकर ही मुक्त कर डालते हैं।

याद रहे मंत्र दाता गुरु मात्र बोधक गुरु होते हैं पर वे यदि स्वयं ब्रह्मनिष्ठ न हो तो उनका मंत्र या उनकी सेवा से मनुष्य मुक्त नहीं होता। ऐसा लिंग पुराण कहता है कि मुक्ति अनेक प्रकार की होती है पर यह गुरु की ज्ञान भूमिका पर आधारित है

नाम मात्र के गुरु से नाममात्र की मुक्ति (कुछ कालखण्ड तक परलोक में सुख) मिलती है यह भगवान वेदव्यास जी ने लिंग पुराण में स्पष्टीकरण किया है। और स्कन्दपुराण की गुरुगीता में भी कहा है कि सूचक वाचक बोधक (जो तद्भावित नहीं पर मंत्र दाता हो)

और विहित गुरुओं से साधारण कल्याण होता है । पर जो गुरु परम गुरु हो (महान वैराग्यवान और अपरोक्ष ज्ञानी) वही कैवल्या दाता है। इसी गुरु की संज्ञा सद्गुरु है परंतु यह गुरु अंतिम जन्म में ही मिलता है वह भी अनेक जन्मों के निष्काम जप तप व्रत–उपवास और निष्काम सेवा से। ऐसा गुरु ही ब्रह्मदाता व ज्ञानदाता होने से ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार मंत्र दाता हजारों गुरुओं से भी उत्तम सर्वोत्तम और श्रेष्ठ है। (ज्ञानदाता गुरुणां......) यही श्रीमद्देवीभागवत महापुराण की देवी गीता में लिखा है कि मात्र ब्रह्मनिष्ठ गुरु ही ब्रह्म से एकाकार होने से परमात्मा ही है वही मुक्ति और शाश्वत सुख का माध्यम होने से परमात्मा ही जाना जाए। श्रीकृष्ण भागवत में भी तीन प्रकार के गुरुओं में ब्रह्मनिष्ठ ही सर्वोत्तम है। और शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय अठारह तो इन साधारण गुरुओं को छोड़कर श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष को गुरु मानकर सेवा की ही बात करता है यह भी वेदव्यास जी ने ही कहा है इसका प्रमाण याज्ञवल्क्य, निमि और बालक शुक्राचार्य इन तीनों के गुरुत्याग की कथा है।

आज इस गुरु माहात्म्य पुस्तक के माध्यम से यह अक्षयरुद्र यथार्थ संभाषण करके यही कहना चाहता है कि उपनिषदों को व शास्त्रों को समय समय पर पढ़ते जायें उससे आपको सम्यक् भूमिकाओं का ज्ञान होता जायेगा। जिससे आप आगे बड़ सकोगे अन्यथा ज्ञान की लॉअर केटेगरी के गुरु को ही आप अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभावी समझकर मारे जाओगे।

आपको समझ न आये तो मात्र शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 18 की एक बात ही पढ़ लो कि – मुक्ति (अपरोक्षता) ही जीवन का लक्ष्य है अतः गुरु से भी अधिक श्रेष्ठ कोई ज्ञानी पुरुष मिल जाये तो उसकी ही सेवा और उनके ही महावाक्यों का अभ्यास करें अन्यथा पुनर्जन्म सुनिश्चित जानें। और समझ न आये तो गुरुगीता के सात प्रकार के गुरुओं को इसी पुस्तक (गुरु माहात्म्य में पढ़े। सातों प्रकार के गुरुओं की सेवा का अलग अलग फल है। यदि ऐसा न होता तो मात्र स्वर्ग या सालोक्य मुक्ति तक ही सब लोग सीमित न होते वे भी सारूप्य या सामीप्य अथवा सायुज्य प्राप्त कर लेते या अभिन्नभाव से वही हो जाते।

यह मुक्ति (सामीप्य मुक्ति) बकवास नहीं अपितु इष्ट के पास सदा के लिए रहने का नाम मात्र है।

और यह सारूप्य मुक्ति को भी मूर्ख लोग बकवास बना बैठे जबकि सारूप्य मुक्ति का तात्पर्य यह है कि मरने के बाद परम भक्त सदा के लिए इष्ट के पास उनके ही समान रूप धारण करके वहीं रहता है। पर कुछ भक्तों ने ग्रंथों में छेड़छाड़ करके इस सारूप्य या सामीप्य मुक्ति को ही कचरा या बकवास रूप में प्रस्तुत कर डाला। जबकि ये दोनों मुक्तियाँ तो परम भक्त के दो फल मात्र है जो देह त्याग के बाद पात्रता देखकर दिये जाते हैं।

कोई परम भक्त मरकर हरि की समीपता पाता है इसे सामीप्य मुक्ति नाम से अलंकृत किया है वेदव्यास जी ने और कोई भक्त मरकर उनका रूप भी (चतुर्भुजी या शिवरूप) पा लेता है और वहीं रहता है इसे सारूप्य मुक्ति या सारूप्य पद कहा है। पर अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ इन दोनों मुक्तियों से भी उत्तम मुक्ति पाता है। शिवगीता और ब्रह्म वैवर्त पुराण में अनेक प्रकार की मुक्तियों की बात है।

इनमें से चार प्रकार की मुक्ति (में से कोई एक) अनन्य भक्त को ही मरने पर मिलती है। वैकुण्ठ में चार प्रकार से रहने की जीव की अवस्था ही चार तरह की मुक्ति है। बस ...

इति श्री मुक्ति ज्ञान संपूर्णम्

प्रश्न– क्या देवी भक्त या जो सदाशिव जी को सर्वस्व मानने वाले है वह भी इस विष्णुमयी स्तोत्र (ब्रह्मपार स्तोत्र) को कर सकते है।

उत्तर– (यह पोस्ट केवल शाक्त भक्तों के लिए थी)

विष्णु , रुद्र ये भी हमारे गुरुओं के गुरु हैं अतः पराम्बिका के उपासक विष्णु या रुद्र अथवा सनत्कुमार या वेदव्यास जी को गुरु रूप जानकर इन महागुरु के स्तोत्र का पाठ अवश्य करे। पर विष्णु मंदिर में या घर पर। देवी मंदिर में न करें क्योंकि त्रिदेव यह आज्ञा नहीं देते कि हमारी इष्ट के मंदिर में हमारा भजन हो।

उदाहरण–

यदि दादागुरु और गुरु किसी कमरे में है तो शिष्य का कर्तव्य यह है कि दादागुरु

के चरणों की सेवा करे। यदि वह दादागुरु के रूम में अपने गुरु को ही भजेगा या पांव दाबता है तो इष्ट द्रोह व दादागुरु के प्रति द्रोह ही हुआ।

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– किसी भी शिव मंदिर या देवी मंदिर को पूर्ण रूप से बनवाने या उसमें सहयोग करने का कुछ विशेष फल होता है मुझे उसके बारे में जानना था. मैं यहां पर सार्वजनिक मंदिर के बात कर रहा हूं उसमें सहयोग करने से क्या पुण्य फल की प्राप्ति होती है यह मेरे जाने की जिज्ञासा थी कृपया जिज्ञासा को शांत करें .....अक्षयरुद्र जी आदरणीय बड़े भैया......... आपको प्रणाम. बड़े भैया!

उत्तर–

शिव पुराण के अनुसार शिव मंदिर का निर्माण अपनी ही कमाई से करने पर एक मन्वन्तर या 14 मन्वन्तर तक शिवलोक में सुख प्राप्त होता है। महादेव को अखंड बिल्वपत्र नित्य अर्पित करने से या हरि को नित्य तुलसीदल अर्पित करने का फल मंदिर की तुलना में कम है। यह ब्रह्म वैवर्त पुराण में लिखा है । इन तुलसी , बिल्वपत्र नित्य अर्पित या मंदिर निर्माण के बाद भी यदि आप (या अन्य) अनन्य भक्ति को प्राप्त नहीं होते तो सदा के लिए वैकुण्ठ या शिव लोक नहीं मिलता। अतः यह नहर , तालाब , मंदिर , धर्मशाला आदि पूर्त कर्म हैं जो धनवान के लिए अनिवार्य है पर गरीब मानव यदि 50 से 100 ईंटो का छोटा सा मंदिर ही बना दे या सामर्थ्य के अनुसार 5 5 जमीन पर एक चबूतरा बनाकर बाउण्ड्री ही करके शिवलिंग की प्रतिष्ठा कर दे तो भी समान फल है अर्थात ा फल जितना धनाढ्य का सामर्थ्य होता है।

अतः किसी बड़े मंदिर में दान दो या मत दो पर अपने सामर्थ्य के अनुसार एक छोटा सा मंदिर अवश्य बनाओ। भगवान ने 200 200 की जमीन खरीदकर उसमें 40–50 लाख का भव्य मंदिर बनाने से जो फल अमीर के लिए निर्धारित किया है वही फल गरीब को अल्प भूमि में ही निश्चित किया है।

1 लाख कमाने वाला मासिक 10,000 का दान करे तो जितना फल है उतना ही फल गरीब को अपनी कमाई का दशांश दान से मिल जाता है।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– मुक्ति का सम्यक् ज्ञान क्या है? –

उत्तर– स्वयं का बोध ही यथार्थ मुक्ति है। आगे समझें– तीन प्रकार की गुरुदीक्षा होती है जिसमें निम्न स्तर के साधकों को मंत्रदीक्षा पर ही अधिकार है और जो ज्ञान की तीसरी भूमिका पर (सत्संग स्वाध्याय मात्र से या श्मशान की राख से अनासक्त व वैराग्यवान हो गए) पहुँच चुके वे बिना मंत्र के भी मुक्त हो जाते हैं। दीक्षा के उन दो प्रकारों में शाम्भवी व शाक्तिक दीक्षा है पहली मंत्र दीक्षा कही गई है। (किसी किसी परंपरा में पहले नाम दान तदोपरान्त मंत्र दान का नियम है)। स्कंद पुराण के श्रीराम– हनुमंत संवाद में तो यह तक बताया है कि मुमुक्षु या वीतरागी मनुष्य मात्र सत्संग से ही मुक्त हो जाते हैं क्योंकि उनके पूर्व जन्म का गुरु ही उनको इस जन्म में अतिशीघ्र वीतरागी बनाता है और ज्ञान की अगली भूमिका के लिए शाम्भवी या शाक्तिक दीक्षा (देह में प्रवेश करके बिना दर्शन दिये भी)देकर ही मुक्त कर डालते हैं।

याद रहे मंत्र दाता गुरु मात्र बोधक गुरु होते हैं पर वे यदि स्वयं ब्रह्मनिष्ठ न हो तो उनका मंत्र या उनकी सेवा से मनुष्य मुक्त नहीं होता। ऐसा लिंग पुराण कहता है कि मुक्ति अनेक प्रकार की होती है पर यह गुरु की ज्ञान भूमिका पर आधारित है। नाम मात्र के गुरु से नाममात्र की मुक्ति (कुछ कालखण्ड तक परलोक में सुख) मिलती है यह भगवान वेदव्यास जी ने लिंग पुराण में स्पष्टीकरण किया है। और स्कन्दपुराण की गुरुगीता में भी कहा है कि सूचक वाचक बोधक (जो तद्भावित नहीं पर मंत्र दाता हो) और विहित गुरुओं से साधारण कल्याण होता है । पर जो गुरु परम गुरु हो (महान वैराग्यवान और अपरोक्ष ज्ञानी) वही कैवल्या दाता है। इसी गुरु की संज्ञा सद्गुरु है परंतु यह गुरु अंतिम जन्म में ही मिलता है वह भी अनेक जन्मों के निष्काम जप तप व्रत–उपवास और निष्काम सेवा से। ऐसा गुरु ही ब्रह्मदाता व ज्ञानदाता होने से ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार मंत्र दाता हजारों गुरुओं से भी उत्तम सर्वोत्तम और श्रेष्ठ है। (ज्ञानदाता गुरुणां......) यही श्रीमद्देवीभागवत महापुराण की देवी गीता में लिखा है कि मात्र ब्रह्मनिष्ठ गुरु ही ब्रह्म से एकाकार होने से परमात्मा ही है वही मुक्ति और शाश्वत सुख का माध्यम होने से परमात्मा ही जाना जाए। श्रीकृष्ण भागवत में भी तीन प्रकार के गुरुओं में ब्रह्मनिष्ठ ही सर्वोत्तम है। और शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय अठारह तो इन साधारण गुरुओं को छोड़कर श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष को गुरु मानकर सेवा की ही बात करता है यह भी वेदव्यास जी ने ही कहा है इसका प्रमाण याज्ञवल्क्य, निमि और बालक शुक्राचार्य इन तीनों के गुरुत्याग की कथा है।

आज इस पुस्तक के माध्यम से यह अक्षयरुद्र यथार्थ संभाषण करके यही कहना चाहता है कि उपनिषदों को व शास्त्रों को समय समय पर पढ़ते जायें उससे आपको सम्यक् भूमिकाओं का ज्ञान होता जायेगा। जिससे आप आगे बड़ सकोगे अन्यथा ज्ञान की लॉअर केटेगरी के गुरु को ही आप अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभावी समझकर मारे जाओगे।

आपको समझ न आये तो मात्र शिव पुराण विद्येश्वर संहिता अध्याय 18 की एक बात ही पढ़ लो कि – मुक्ति (अपरोक्षता) ही जीवन का लक्ष्य है अतः गुरु से भी अधिक श्रेष्ठ कोई ज्ञानी पुरुष मिल जाये तो उसकी ही सेवा और उनके ही महावाक्यों का अभ्यास करें अन्यथा पुनर्जन्म सुनिश्चित जानें। और समझ न आये तो गुरुगीता के सात प्रकार के गुरुओं को गुरुगीता में पढ़े। सातों प्रकार के गुरुओं की सेवा का अलग अलग फल है। यदि ऐसा न होता तो मात्र स्वर्ग या सालोक्य मुक्ति तक ही सब लोग सीमित न होते वे भी सारूप्य या सामीप्य अथवा सायुज्य प्राप्त कर लेते या अभिन्नभाव से वही हो जाते। यह मुक्ति (सामीप्य मुक्ति) बकवास नहीं अपितु इष्ट के पास सदा के लिए रहने का नाम मात्र है। और यह सारूप्य मुक्ति को भी मूर्ख लोग बकवास बना बैठे जबकि सारूप्य मुक्ति का तात्पर्य यह है कि मरने के बाद परम भक्त सदा के लिए इष्ट के पास उनके ही समान रूप धारण करके वहीं रहता है। पर कुछ भक्तों ने ग्रंथों में छेड़छाड़ करके इस सारूप्य या सामीप्य मुक्ति को ही कचरा या बकवास रूप में प्रस्तुत कर डाला। जबकि ये दोनों मुक्तियाँ तो परम भक्त के दो फल मात्र है जो देह त्याग के बाद पात्रता देखकर दिये जाते हैं।

कोई परम भक्त मरकर हरि की समीपता पाता है इसे सामीप्य मुक्ति नाम से अलंकृत किया है वेदव्यास जी ने और कोई भक्त मरकर उनका रूप भी (चतुर्भुजी या शिवरूप) पा लेता है और वहीं रहता है इसे सारूप्य मुक्ति या सारूप्य पद कहा है। पर अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ इन दोनों मुक्तियों से भी उत्तम मुक्ति पाता है। शिवगीता और ब्रह्म वैवर्त पुराण में अनेक प्रकार की मुक्तियों की बात है। इनमें से चार प्रकार की मुक्ति (में से कोई एक) अनन्य भक्त को ही मरने पर मिलती है। वैकुण्ठ में चार प्रकार से रहने की जीव की अवस्था ही चार तरह की मुक्ति है। बस ...पुनः श्रवण करें– एक महत्वपूर्ण रहस्य जो बताना अनिवार्य था ।

शिव लोक , गोलोक, साकेत या वैकुण्ठ अथवा क्षीरसागर में मरकर जो भी भक्त जाता है उन देहान्त वाले अधिकांश भक्तों को उनका लोक मात्र मिलता है और इस लोक को 100प्रतिशत भक्त चाहते ही हैं इस लोक की प्राप्ति को ही शिव गीता , ब्रह्म वैवर्त पुराण और शिव पुराण में सालोक्य मुक्ति का नाम दिया है अतः मुक्ति को भक्ति से गौण न समझें यह फल का नाम मात्र है और फल (सारूप्य आदि) पाकर भी यह भक्ति बनी रहती है आगे विस्तार से बता रहे हैं पर जिन लोगों ने इस लोक की प्राप्ति (सालोक्य मुक्ति) को बकवास या तुच्छ घोषित कर डाला उनको सालोक्य मुक्ति कभी नहीं मिलती। यह भक्ति का ही एक फल है तथा भक्ति और भी ऊँचे स्तर से की जाये तो उस लोक में आपका रूप इष्ट सदृश ही हो जाता है इसे

सारूप्य पद या सारूप्य मुक्ति कहा गया है अतः यह मुक्ति का उच्चतम स्तर है इसमें भी जीव भाव से भावित होकर आप इष्ट देव की बहुत सेवा करके प्रसन्न होते हो। अतः इस कारण भी इस मुक्ति (सारूप्य) को भक्ति का उत्तम परिणाम बताया है।

अब विस्तृत उपाख्यान जो विगत एक वर्ष पूर्व के सत्संग का एक अंश था। श्रवण करें।

मुक्ति क्या है ?..... इसे मजाक न समझे यह तो भक्ति का फल है ; विश्वास न हो तो पढ़ें— अनेक प्रकार की मुक्तियाँ हैं पर उस लोक में पहुंच कर सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य, सायुज्य आदि मुक्ति ही दास वर्ग को मिलती हैं। (द्वैत भाव से भक्ति करने पर ; अर्थात हे नाथ !!!!!! मैं आपको भूलूं नहीं , मैं आपके चरणों में पड़ा रहूँ मैं आपका किंकर या अंश हूँ , ज्ञान या मुक्ति यह क्या है मैं नही जानता पर आपका ही एक तुच्छ उपासक हूँ यही जानता हूँ और आपकी मूर्ति ही मेरे मन में बसी है। ज्ञानियों का पराविज्ञान रूप अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठता या अद्वैतात्मक भाव क्या है ये तो वे ही जाने जिससे वे अपने आपको अहम् ब्रह्मास्मि कहते हैं और यह ज्ञानयोग कहलाता है पर मैं तो दासोऽहम् से दास मात्र समझकर ही शान्ति पा रहा हूँ।..इस टाईप की थिंकिंग होने पर उन मनुष्यों को मिलती है यह वैकुण्ठ या शिवलोक की प्राप्ति मुक्ति (सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य आदि) के ही रूप हैं अतः इस मुक्ति को तुच्छ न मानें ; प्रेमी भक्त लोग जिस संदर्भ में कहते हैं कि हमें मुक्ति नहीं चाहिए बस आपका सामीप्य चाहिए.. याद रहे इस सामीप्य को भी धर्म शास्त्र में सामीप्य मुक्ति कहा है । हालांकि यह अपर मुक्तियाँ हैं। जो हर भक्त को निश्चित ही (पात्रता के अनुसार अलग अलग) मिलती हैं। पर जिस मुक्ति की कुछ लोग मना करते हैं वह अद्वितीय अद्वैत की पराकाष्ठा कैवल्या है जो ज्ञान की तीसरी भूमिका वाला (इस अवस्था पर) कभी भी नहीं चाहता , इस अवस्था के भक्त वीतरागी तो होते हैं पर उनका स्तर ज्ञान की तृतीय भूमिका पर पड़ा रहता है यह सच है अथवा वे परम ज्ञानी भी हों तो लोगों की सामान्य पात्रता देखकर झूठमूठ ही लोगों को चै.क. का उपदेश न देकर कक्षा 8 का उपदेश ही देकर तृप्त रहते हैं। हर मनुष्य साक्षात ईश्वर की प्राप्ति के लिए ही साधना भजन कीर्तन आदि करते हैं ।

यदि मात्र भजन या कथा ही करोड़ों वर्ष तक चलता रहे पर दर्शन न हो या हरि बात न करें तो क्या हाल होंगे?और हरि सदा ही पास बैठकर बात करें तो क्या हाल होंगे। सब यही चाहते हैं। अधिकांश 80प्रतिशत भक्त लोग मरकर वैकुण्ठ या शिवलोक को पाते हैं चंचुला भी मरकर शिव लोक में सुखी हो गई । हाथी और मगर भी वहीं गये। अनेक भक्त भी मरकर परम धाम चाहते हैं। यदि वे भगवान के समीप रहते हैं (पर पुराना ही रूप हो तो) तो इसे भी सामीप्य मुक्ति कहा जाता है अतः आप कृपया मुक्ति को साधारण समझने की भूल न करें। भक्ति से ही ईश्वर के समीप जाने वाली सामीप्य मुक्ती मिलती है। मुक्ति में आपका अस्तित्व नष्ट नहीं होता अपितु परम धाम में विशेष स्थान मिलता है अतः मुक्ति की अवहेलना न करें। गीता में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण जी ने कहा है कि यह संसार दुखालय है जो इससे

छुटकारा (निजात)पाने के लिए मेरा भजन करता है वही यथार्थ जानता है अर्थात सोचो यहाँ भी जो शब्द छुटकारा के संदर्भ में है वह एक प्रकार से मुमुक्षा ही है जो सदा के लिए वैकुण्ठ में हरि के सामीप्य पद का हवाला ही देती है । अतः इस संदर्भ में भी यहाँ असार संसार से मुक्त होने का ही समर्थन किया गया है। मुक्ति (सामीप्य या सारूप्य आदि) की महिमा ही हर स्तोत्र में गायी गई है कि – प्रभु के इस पाठ से प्रभु की समीपता मिलेगी फिर सदा के लिए आप गर्भ कष्ट से मुक्त हो जाओगे। अतः मुक्ति को आप गौण न समझे। अनन्य भक्त मुक्त ही होता है और सारूप्य मुक्ति ही पाता है।

कुछ लोग भागवत महापुराण सुनकर मरने के बाद चतुर्भुज रूप हो गए थे इसका मतलब भी यही था कि उन भक्तों को सारूप्य मुक्ति मिल गई। श्रीराधा या श्रीकृष्ण के हर स्तोत्र की फलश्रुति में यही लिखा है कि मेरा भक्त मरकर गोलोक या वैकुण्ठ अथवा क्षीरसागर जाता है (ये किसी भी स्तोत्र में नहीं लिखा कि वापस गर्भ में उल्टा लटकता है) इसे सालोक्य मुक्ति या सालोक्य पद कहा गया। पर महान भक्ति बड़ जाए तो मरकर भक्त का आवरण बिल्कुल भगवान जैसा हो जाता है इसे सारूप्य पद या सारूप्य मुक्ति कहते हैं। यह भी हंसी खेल नहीं। कुछ सायुज्य , सामीप्य और एक कैवल्या भी है। सामीप्य मुक्ति भी मजाक नहीं– इसमें भक्त मरकर सदा के लिए भगवान के अति समीप निवास करता है। अनेक वर्ष की भक्ति से यथार्थ पराविज्ञान प्राप्त कर अभिन्नत्व पाना ही परम मोक्ष है।

नोट – प्रभु के पास (सामीप्य) रहने को भी सामीप्य मुक्ति कहते हैं यह फिर से कह रहे हैं डायरी में नोट कर लेना।

इति श्री मुक्ति ज्ञान संपूर्णम्

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– मैं भोलेनाथ और गौरी मां को ही अपना इष्ट और माता–पिता मानती हैं और भगवान भोलेनाथ को ही अपना गुरु और उन्हीं से ही प्रार्थना करती हूं कि मुझे प्रत्यक्ष रूप में गुरु के रूप मे मिले उन्हीं की प्रेरणा से कई स्तोत्र का पाठ करती हूं लेकिन अब चाहती हूं कि कि किसी एक स्तोत्र का ही पाठ निरंतर करूं कृपया आप मेरा मार्गदर्शन कर सकते हैं कि मुझे कौन सा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए या कौन सा मंत्र जाप करना चाहिए– रोहिनी

उत्तर –

हमारी पुस्तक शिव स्तोत्रम् में हर स्तोत्र अद्भुत है आप किसी भी एक को चुन लीजिए और 1000 बार पाठ करें। नियमानुसार व पवित्र मुहूर्त से आरंभ करना। नर नारी दोनों को भस्म से त्रिपुण्ड धारण व रुद्राक्ष भी अनिवार्य है।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–क्या पंचाक्षरी मंत्र का जाप चलते–फिरते कभी भी कर सकती हूँ ?

उत्तर– हाँ परंतु नारी के लिए शिवाय नमः का विधान है। पर रजस्वला के समय और मल मूत्र के समय नहीं। उस समय नाम जप या शिव चरण पादुका या श्री महादेव या श्री सदाशिव या श्री साम्बसदाशिव का मानसिक जप ठीक है।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–नारी कितने प्रकार की होती है

उत्तर–नारी दो प्रकार की होती है एक प्रशस्त और एक अप्रशस्त ; हालांकि इनके भी भेद हैं। हे तुलसी ! अप्रशस्त नारी ही कुलटा और वैश्या होती है वह अपने पति को छोड़कर अन्य पुरुष से अवैध संबध स्थापित करती ही है पर प्रशस्त नारी किसी भी कारण से अपने पतिव्रत धर्म का त्याग नहीं करती। अतः विवाह के लिए प्रशस्त ही उत्तम है।

बिना विवाह के मनुष्य रह सकता है पर कुलटा के साथ रहना उसे सहन नहीं होता जो अपने पति के सामने ही पराये पुरुष से मुख काला करती है।

काश हर पुरुष की स्त्री पतिव्रता हो।

नोट – कुलटापन कुकर्म का फल है न कि इसमें पति या सास ससुर के कर्म दोषी हैं।

00000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– आलस्य शत्रु है पर कुछ काम न हो तो क्या करे ?

उत्तर–जप तप करके महापद पाओ। पर आलस्य करने से पशुयोनी ही मिल पायेगी। सुनों– दस करोड़ पुष्पोंसे देवी शिवा की पूजा करनेवाले मानवको विष्णुपदकी, जो देवताओंके लिये भी दुर्लभ है, प्राप्ति होती है। देवी भागवत महापुराण के अनुसार पूर्व समय में क्षीरसागर के भगवान् विष्णु भी अपना पद प्राप्त करनेके लिये यह व्रत कर चुके हैं। देवी की कृपा से कोई भी मनुष्य किसी भी प्रकार का पद प्राप्त कर लेता है इसमें कोई भी संदेह नहीं इसी कारण

विष्णु सदा देवी की पराभक्ति में ही संलग्न रहते हैं। अतः आलस्य त्यागकर परमपद पालो। काहे जीवन बर्बाद करना चाहते हो।

अर्थात क्षीरसागर के विष्णु देवी के श्रीचरणों की भक्ति इसी कारण सतत् करते हैं क्योंकि उनके विष्णुत्व का कारण देवी भुवनेश्वरी हैं। देवी ने उनके 10,0000000 बार पुष्प अर्पित से अनन्त ऐश्वर्य में से आंशिक ऐश्वर्य दे रखा है। इसी प्रकार विष्णु से भी अधिक तपस्वी एक अरब मल्लिका पुष्प अर्पित करने वाले भी इस ब्रह्माण्ड में उपलब्ध हैं उनका भी विष्णु प्रभु सम्यक् रूप से पूजन करते हैं। जो अधिक बडा तपोनिष्ठ होगा उसकी सेवा सभी करते ही हैं।

आत्मरूप से यद्यपि सब कुछ समान है पर सभी का ऐश्वर्य और शक्तियाँ अलग अलग हैं। ऐश्वर्य में भिन्नता का कारण उनके द्वारा भगवती की सेवा में अंतर है। पद और कीर्ति चाहिए तो मात्र श्रृद्धा ही पर्याप्त नही तप व संयम भी अनिवार्य है। सोचो कि एक मनुष्य निष्पापता के बाद लगातार 100 दिन अखंड ब्रह्मचर्य का पालन करे और एक मनुष्य 1000 दिन तक तो ऐश्वर्य समान हो ही नहीं सकता।

अतः हे अक्षयरुद्र! तू भी यदि उच्चतम स्तर का पद चाहिए तो छोड़ दे सांसारिक स्मरण को और चल उठकर बैठ देवी की कृपा से तू ही कालान्तर में नवीन महारुद्र होगा।

तू ही महेश होगा तू ही 50000000 पंचाक्षरी (नमः शिवायै) से श्री सदाशिव के सदृश ऐश्वर्य और रूप से युक्त होगा। काहे क्षणभर के सुख में फंसता है। यहाँ सब लोग स्वार्थी हैं वे तो विवाह से पहले ही तेरे धन , ऐश्वर्य और नौकरी के भूखे बने हैं तो सोचो ऐसे लोग कितने बड़े राजस भाव के हैं। उनको तेरे अध्यात्म से कोई वास्ता नहीं बस तेरे भौतिक ऐश्वर्य से ताल्लुक है उनका।

अतः चल उठकर बैठ और जगत के सारे भोग छोड़कर एक मात्र पराशक्ति का भजन कर अथवा समाधिस्थ होकर अपरोक्षभाव में ही रमण कर।

चल उठ

चल उठ

चल उठकर बैठ।

एक एक मिनट का सदुपयोग कर।

हे अक्षयरुद्र! तेरा प्राकट्य परम पद के लिए हुआ है 5–10 वर्ष के लिए भौतिक पद की चाह मत कर।

न ही 15 मिनट के क्षणभर दैहिक सुख का सोच।

तू अक्षयरुद्र से अब महारुद्र तक का सफर तय कर।

चल उठ

चल उठ

चल उठकर बैठ।

सब देवता समय समय पर बदलते रहते हैं जिसका पुण्य कर्म अधिक वे ही मन्वन्तर के देव रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। अगली बार नवीन देवता नियुक्त होंगे। इनमें से न के बराबर ही पुनः देव बन पायेंगे। अतः आगामी मन्वंतर के पदों को तुम स्वयं ही भरो।

●आठ वसु देवता , ये भी पूर्व कल्प के मानव हैं पर देख लेओ.........अब क्या से क्या हो गए.... ....बाप रे बाप..........ये तो देवता बन गए। इनमें से ही एक देव भीष्म पितामह के रूप में अवतार लिए थे।

●साध्या देवी से उत्पन्न साध्य देवताओं का समूह ,

●11 रुद्र,

● 12 आदित्य (इन्द्र, वरुण , मित्र विष्णु आदि; ध्यान रहे कि वरुण देव के वीर्य से इस बार वशिष्ठ जी का पुनर्जन्म हुआ है।)

● मरुत्वान देव ,

●भानु संज्ञक देव ,

●संकल्पा से संकल्प संज्ञक देवता ,

●मुहूर्ता से धर्म के मुहूर्त अभिमानी देवता

● विश्वा से विश्वदेव आदि देवता

●कद्रू से ,एक हजार नागों का जन्म सभी के 1000–1000 मस्तक थे) जिनमें 26 मुख्य है जो आप पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड में देखें इनमें शेषनाग, वासुकि तक्षक, पद्म , महापद्म आदि । ये सब के सब ही पूर्व मन्वन्तर में देवता आदि नहीं थे पर पूर्व मन्वन्तर में महान पुण्य किये थे इस कारण इस बार देवतादि पद मिला। अगली बार जो देवता होंगे वे अलग होंगे।

अतः जो मनुष्य एक मन्वन्तर तक भोग चाहें वे देवताओं का पद पा सकते हैं।

पर पितरों की आयु देवताओं से अधिक होती और सभी पितरों का जन्म ब्रह्मा व वसिष्ठ आदि से बहुत पहले हो चुका है। और कुछ 14 मन्वन्तर तक जीवित रहते हैं वे हैं भृगु आदि सिद्ध गण । ये महर्लोक में परम सुख भोगते हैं।

परंतु सप्तऋषियों के पद एक मन्वन्तर तक ही होते है। सनत्कुमार इनसे भी उच्च स्तरीय लोक (जनलोक में) रहते हैं। तथा इससे भी ऊँचे लोक तपोलोक में ऋभु और वैराज आदि देवों का निवास है कूर्म पुराण के अनुसार यह प्राजापत्य लोक है। और इससे उच्च स्तरीय सत्यलोक जो ब्रह्मलोक कहा जाता है। यह सब आपको अग्नि पुराण, स्कन्द पुराण, विष्णु पुराण और कूर्म व पद्म पुराण में विस्तार से मिलेगा । पर ब्रह्मा जी के एक दिन में ही ये 14 मन्वन्तर समाप्त हो जाते हैं ऐसे ही ब्रह्मा जी की आयु 100 वर्ष है। विष्णु जी की आयु ब्रह्मा जी से अधिक है तथा लिंग पुराण के अनुसार पार्वती पति (महारुद्र देव) का जब एक दिन बीतता है तो भगवान विष्णु के 9000 दिन समाप्त हो जाते हैं यह सब कुछ देवी की संनिधि का फल है। अतः एक मन्वन्तर के देव पद के लिए रोओ मत।

कुछ बनना हो तो कम से कम एक कल्प की आयु पाओ या चिरंजीवियों की भाँति 8 कल्पों की । अथवा ब्रह्मा जी का पद फिर भी तारीफ के लायक है। पर हर ब्रह्माण्ड में अलग अलग ब्रह्मा , विष्णु और रुद्र हैं। इस भूमि की रक्षा के लिए क्षीरसागर के विष्णु ही अवतार लेते हैं। तथा श्रीमहारुद्र भी अनेक अवतार ले चुके यह हम शिव चरित मानस में बता चुके हैं। ये सब देवसमूह देवी भुवनेश्वरी और सदाशिव जी के अधीन हैं। माँस खाकर सदाशिव जी की भक्ति करने वाले कालचक्र का भेदन नहीं कर सकते , कालचक्र के ऊपर सत्य और अहिंसा का बोलबाला है वहाँ बलि को भी पूजा के अंतर्गत नहीं माना जाता। बलि को पूजा का भाग मानने वाले बहुत से बहुत रुद्र लोक तक पहुंच सकते हैं पर एक निश्चित कालखण्ड तक । पर मणिद्वीप और सदाशिव लोक के दर्शन वे कभी नहीं कर सकते।

पर शिव भक्ति कभी भी निरर्थक नहीं जाती इस कारण सभी माँस खाने वाले अधिकांश शिव भक्त द्विज भी मात्र पिशाच लोक में सुख पाते हैं। इस मन्वन्तर में जो जो महापदी परनारी भोग चुके वे सब देव पद से च्युत हो जायेंगे। और एक बात मात्र 12 आदित्य, 11 रुद्र, 8 वसु ही देवता नहीं अपितु विश्वदेव, मरुत्वान आदि भी देवताओं की कोटी में आते हैं।

0000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–दस ग्यारह अति महत्वपूर्ण बात कहें?

उत्तर– सुनें इन बातों से आपका जीवन ही बदल जायेगा

1. दसवें अध्याय के मात्र एक श्लोक का माहात्म्य सुनें– 284 युगों (71बार कलियुग, 71बार सत्ययुग..71 बार त्रेता, 71 बार द्वापर) तक आप मनुष्य योनी से नीचे नहीं गिर

सकते। पशु नहीं बन सकते । यह इन श्लोकों को वरदान ही समझें। आजीवन मात्र एक श्लोक (कोई सा भी या एक ही चुनकर या क्रमशः एक दिन में एक... 42 दिन में 42वाँ। फिर 43वे दिन से पहला। वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥ अर्थात् मैं वेदोंमें सामवेद हूँ, देवोंमें इन्द्र हूँ, इन्द्रियोंमें मन हूँ और भूत प्राणियोंकी चेतना अर्थात् जीवनशक्ति हूँ ।।22।। या रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् । वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ मैं एकादश रुद्रोंमें शङ्कर हूँ और यक्ष तथा राक्षसोंमें धनका स्वामी कुबेर हूँ। मैं आठ वसुओंमें अग्नि हूँ और शिखरवाले पर्वतोंमें सुमेरु पर्वत हूँ ॥ २३ ॥

2. जो व्यक्ति उन सभी जन्मों में चक्रवर्ती सम्राट (अतुलनीय मानव और महान शासक या देश का प्रधान परम सम्मान का पात्र वाला सर्वोच्च पद पर पदस्थ) बनना चाहे वह मंगल देव की मैया का यह पाठ पवित्र अमृत सिद्धि योग में आरंभ कर दे । **श्रीनारायण उवाच–जय जये जलाधारे जलशीले जलप्रदे। यज्ञसूकरजाये च जयं देहि जयावहे। मंगले मंगलाधारे मांगल्ये मंगलप्रदे।। मंगलार्थ मंगलेशे देहि मे भवे। सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते ।। सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि मे भवे। पुण्यस्वरूपे पुण्यानां बीजरूपे सनातनि।। पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे। सर्वशस्यालये सर्वशस्याढये सर्वशस्यदे ।। सर्वशस्यहरे काले सर्वशस्यात्मिके भवे । भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे ।। भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहि च भूमिदे ।। – श्रीमद्देवीभागवत (9/9/52–58)** (स्तोत्र निधिवन भाग एक पेज नंबर 75 पर भी यह धरा स्तोत्र संकलित है)
3. पद्मपुराण के भूमि खंड का कोई सा भी एक श्लोक नित्य पढ़ने से 24 घंटे के पाप नष्ट हो जाते हैं परंतु हत्या, बलात्कार और पराई नार का भोग इस श्लोक के सहारे करने पर डबल पाप लगता है क्योंकि मंत्र जप के सहारे पाप नहीं करना चाहिए। तारणाय मनुष्याणां संसारे परिवर्तताम्। नास्ति तीर्थं गुरु समं बन्धच्छेदकरं द्विज।।
4. गोपीजन वल्लभ चरणान् शरणं प्रपद्ये। यह पंच पदी मंत्र है इस मंत्र को मात्र एक बार किसी भी संत या आपके गुरु की वाणी से सुन लीजिए तदोपरान्त मात्र एक बार उच्चारण से ही आपका श्रीकृष्ण जी के प्रति भक्तिभाव निश्चित ही चरम पर पहुंच जायेगा ऐसा नारद पुराण या पद्मपुराण में स्पष्ट लिखा है। इस मंत्र पर महान से महान ब्राह्मण और नीच से नीच पापी का भी अधिकार है मात्र श्रृद्धा की अनिवार्यता ही भोलेनाथ ने बताई है। अनेक मंत्र धर्म शास्त्रों में ऐसे हैं कि जपने पर नरक भी दे डालते हैं (अपात्र होने के कारण) पर यह पंचपदी और पंचाक्षरी पर सभी का एक समान अधिकार है। और जब आप शुद्ध हो जाओ (प्रभु के दर्शन के बाद आपको सभी अधिकार मिल जाते हैं पर उससे पहले मत सोचना) तो आप कोई सा भी मंत्र जप सकते हो। पर उस मंत्र की सिद्धि भी गुरुवाणी से सुनने पर ही होगी और 10

संस्कार भी अनिवार्य तथा एक और अनिवार्य विद्या भी । पर यह दोनों मंत्र बिना किसी मुहूर्त या शोधन के आरंभ किये जा सकते हैं।

5. सप्तसागरपर्यन्तं तीर्थस्नानफलं तु यत् ।गुरुपादपयोबिन्दोः सहस्रांशेन तत्फलम् ॥हे पार्वती! सात समुद्र पर्यन्त के सर्व तीर्थों (गंगा, यमुना , सरस्वती, नर्मदा आदि) में स्नान करने से जितना फल मिलता है वह फल श्रीगुरुदेव के चरणामृत के एक बिन्दु के फल का मात्र हजारवाँ हिस्सा है। अतः सप्त सागर पर्यन्त तक के सभी तीर्थों में स्नान का फल मात्र परम कृपा से ही प्राप्त होता है और यह परम कृपा गुरुचरणामृत ही है। जो आज तक नर्मदा गंगा या यमुना आदि में 100 बार स्नान कर चुके पर गुरुचरणामृत का पान कभी भी नहीं किया वे मंदभाग्य से युक्त हैं।.
6. जिसको धान्य (अनाज ...) की कमी है वह शुभ मुहूर्त से देवी अन्नपूर्णा का वह स्तोत्र आरंभ कर दे जो श्री शंकराचार्य जी कृत है पुस्तक स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम मे अध्याय 32 पर भी संकलित है।
7. सबसे पहले दीर्घकालिक जीवन के लिए सुरक्षित हो जाओ तदोपरान्त धन , यश व स्त्री सुख का सोचना। इसके लिए आप लोमश कृत मृत्युञ्जय स्तोत्र जपें जो हमारी पुस्तक शास्त्रों के अद्‌भुत रहस्य में है।
8. तीनों काल देवी स्वधा का स्मरण (तीन तीन बार श्री स्वधा श्रीस्वधा, पुनः श्री स्वधा) करने से किशोरों को भविष्य में सुन्दर, आकर्षक और संस्कारी पतिव्रता पत्नी की प्राप्ति होती है।
9. अधिक समय से त्रिकाल गायत्री का जप जिस द्विज ने न किया हो वह डेढ़ लाख जप से प्रायश्चित करे। अन्यथा वह रौरव नरक में दण्ड भोगता है।
10. पाप की कमाई के दान से आपको पशु योनी में भोग मिलते हैं पर सारा महाफल उसको मिलता है जिसका धन है। अतः पाप न करें।
11. जो ब्राह्मण पात्र नहीं वह यदि एक तिलि का दाना, वस्त्र , गौ , सोना , चांदी या घी का एक ग्राम भी लेता है तो उसका परिवार भी दुखी रहता है वह भी दुखी। अतः पहले गायत्री मंत्र का कम से कम 100000 जप करके पात्रता प्राप्त करें फिर संध्यापूत रहें और तब ही दान लें या 24 घंटे ही प्रभुमय व अखंड ब्रह्मचारी रहो या अभिन्नभावी तो भी अनिवार्य कार्य हेतु बिना भय के ले सकते हो पर ज्ञानदान भी यथासंभव अनिवार्य है। ....✍ सोऽहम्

प्रश्न– क्या श्रीमद्भागवत महापुराण के कुछ श्लोक झूठे हैं ? तो फिर 7/11/35 के अनुसार क्षत्रिय या वैश्य वर्ण में जन्मा भक्त भी इस एक कंडीशन पर ब्राह्मण ही है तो फिर उस पर संन्यास आदि का प्रतिबंध क्यों ?

उत्तर– नहीं। **श्रीमद्भागवत महापुराण के श्लोक झूठे नहीं हैं।** यह प्रतिबंध भगवान वेदव्यास जी ने नहीं लगाया। उनका तो यही कहना था जो वे 7/11/35 में कह चुके । कि ''उसे ब्राह्मण मान लेना''। अब जो न मानें उससे बहस क्यों? आप तो भजन या सोऽहम् भाव में रमण करो न। काहे संसार के मान सम्मान की ओर दोडते हो।...................और वज्र सूचक उपनिषद पर तो सब कुछ खत्म हो ही जाता है।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न भोग और योग क्या एक साथ हो सकते हैं ?

उत्तर– जिसमें आप रमण करोगे उसी को एक समय में प्राप्त होओगे।

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–श्रीरुद्रपूजा का अधिकार किसको है? शिवलिंग महिमा बताएं । .

उत्तर– अग्निहोत्र, समस्त वेद तथा बड़ी–बड़ी दक्षिणाओंवाले यज्ञ– ये सब शिवलिङ्गके अर्चनकी कलाके अंशके भी तुल्य नहीं हैं।

●जो एक बार शिवका अर्चन कर लेता है, वह मानो सदा यज्ञ करता है, सदा दान देता है और सदा वायुभक्षणरूप तपस्या करता है।

●जो लोग प्रतिदिन एक काल, दोनों कालों अथवा तीनों कालोंमें महादेवका पूजन करते हैं, वे रुद्ररूप ही हैं, इसमें सन्देह नहीं है।

●जो रुद्ररूप नहीं है; उसे रुद्रका स्पर्श नहीं करना चाहिये; जो रुद्ररूप नहीं है, उसे रुद्रकी पूजा नहीं करनी चाहिये और जो रुद्ररूप नहीं है, उसे रुद्रका नामकीर्तन नहीं करना चाहिये। जो रुद्ररूप नहीं है, वह रुद्रको नहीं प्राप्त कर सकता। (हे सनत्कुमार!) इस प्रकार मैंने (आपसे) संक्षेपमें शिवकी पूजाके लिये अधिकारी होने तथा उसकी विधिका क्रम कह दिया, जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको प्रदान करनेवाला है ॥

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं नित्यमेव वा। येऽर्चयन्ति महादेवं ते रुद्रा नात्र संशयः ॥ ८१

नारुद्रस्तु स्पृशेद्रुद्रं नारुद्रो रुद्रमर्चयेत् । नारुद्रः कीर्तयेद्रुद्रं नारुद्रो रुद्रमाप्नुयात् ॥ ८२

लिंग पुराण उत्तर भाग अध्याय 21 से सार

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–प्रभु दत्तात्रेय की कृपा हेतु कुछ अमृत वाक्य कहें?

उत्तर–भगवान दत्तात्रेय (चंद्रमा के छोटे भाई और साक्षात श्रीहरि ही) की आँखों की पुतलियों का रंग नीला और दाढ़ी भी नीली है। सारा शरीर मांस से भरा हुआ हष्ट–पुष्ट है । ये मृग चर्म धारण करते हैं इनके अनन्य व निष्पाप व धर्मनिष्ठ भक्त इनको जैसे ही पुकारते हैं ये तत्काल प्रकट हो जाते हैं।

शिव जी – हे गौरी ! जो मनुष्य मेरी प्रसन्नता के उद्देश्य से इन दत्त प्रभु का स्मरण करता है वह भी मेरा भक्त ही मानने योग्य है। प्रभु दत्त के स्तोत्र से देह हनुमान के समान वज्र तुल्य हो जाता है। इनके स्तोत्र की 30,000 आवर्ती से साधक आकाश में उड़ने की शक्ति भी पा लेता है।

1. शत्रु नष्ट– गूलर वृक्ष के नीचे दक्षिण की ओर मुख करके इनके स्तोत्र का पाठ (तीन समय)एक माह तक करने से शत्रु की समस्त इन्द्रियाँ विफल हो जाती हैं।
2. पीपल के नीचे इनका स्तोत्र जप करने से बल , तेज और ओज मिलता है।
3. विवाह के लिए नीम वृक्ष के नीचे जपे।
4. ज्ञान के लिए तुलसी के समीप बैठकर जप अनिवार्य है।
5. मंदिर में यदि 10,000 (दस हजार) बार पाठ करें विनियोग और न्यास ध्यान पूर्वक शापित बांझ नारी या ऐसी स्त्री जिसके गर्भ को पूर्वपाप फल नष्ट कर डालता है वह नारी भी सुलक्षण पुत्र की माता बन जाती है।
6. 20,000 बार पाठ से अकाल मृत्यु नहीं होती।
7. नदी में नाभि तक पानी में खड़े होकर जो 1000 जपता है वह युद्ध , विवाद और शास्त्रार्थ में सफल होता है।
8. इनकी विद्या के जप से रोग शीघ्र ही नष्ट होते हैं। रात में कंठ तक पानी में खड़े होकर जो इन प्रभु के स्तोत्र को जपता है वह कुष्ठ , मिर्गी आदि रोगो से मुक्त हो जाता है।
9. इस कलिकाल में वैष्णव जन अपनी रक्षा के लिए इसी रूप की शरण में रहें।

नोट – रुद्रयामल तंत्र के हिमवत् खण्ड में इस स्तोत्र को देखें। या स्तोत्र निधिवन भाग दो में

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– एक समय दो में रमण कोई नहीं करता सब कहने की बाते हैं। क्या सच है?

उत्तर–एक समय दो में रमण कोई नहीं करता सब कहने की बाते हैं। यदि आप समाधिस्थ हो तो भोगशून्य की संज्ञा मिलेगी भले ही आपका मस्तक स्त्री की जांघ पर रखा हो अथवा आप सोने चांदी की चारपाई पर बैठे हो। ऐसे में जांघ, सोना चाँदी का क्या औचित्य?

इसी प्रकार यदि आप 5000 रुद्राक्ष या 5000 तुलसी के दाने देह पर सजाये हो तथा भगवा रंग के वस्त्र भले ही आप वानप्रस्थ या संन्यासी हो गए पर आपके मन और बुद्धि में पत्नि या प्रेमिका के पुराने वासनात्मक कामसुख के चलचित्र चल रहे हैं तो वो वास्तव में भोगयुक्त ही है न कि योगयुक्त। पर हाँ माला , तिलक , वस्त्र के साथ आप तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ भी हो तो आप निश्चित ही धन्य हो और प्रभु का ही विग्रह मानने योग्य हो। कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। बिना त्याग के कुछ नहीं होता। धीरे धीरे त्याग से ही एक दिन बड़ा त्याग होता है अतः अभ्यास करना ही होगा। भोग से वासना कभी भी शान्त नहीं होने वाली। एक कालखंड में भोग के साथ योग कभी नहीं होता।

यदि भोगों के लिए हृदय छटपटा रहा है तो उस समय योग कैसा ? और जिस समय आप योगारूढ़ हो उस समय भोग कैसा ; हे मेरे निजरूप ! जो ईश्वर को ही चाहता है उसे संसार से क्या काम?जो ईश्वर को ही चाहता हो उसे भोगों से क्या प्रयोजन? हे मनुष्य! यदि तू भोगों को चाहता है तो यह प्रभु मयी चाहत कैसी ? **मन में दो वस्तु एक साथ कभी नहीं रहती ।**

या तो राम रहते हैं या काम (वासना)

जो ईश्वर को ही चाहता हो उसे अतिधन की स्पृहा हो ही नहीं सकती और अति धन की कामना (भोगार्थ)है तो वह अनन्य भक्त कहाँ हुआ ?

जो ईश्वर को ही चाहता हो वो अपने अंतःकरण से विश्व के सौन्दर्य का रसपान भला किस प्रकार कर सकता है ?

यदि करता है तो वह ईश्वर का अनन्य भक्त है ही नहीं ।

और सुनों –

संसार में प्रीति लगाने पर या धन(मासिक एक लाख या अधिक) , ऐश्वर्य व रति में चित्त लगाने से आपको धन व रतिसुख आदि तो मिल जायेंगे पर (आपके चित्त में ठाकुर जी न होने से) हरि नहीं मिलेंगे।

मीरा को हरि मात्र हरि के बनने पर मिल सके और वह बेचारी सब कुछ छोड़कर वृन्दावन चली गई।

ध्रुव को हरि मात्र तीर्थ में तप जप से मिल सके।

अतः समझ लो बड़ी उपलब्धि के लिए आंशिक फलों को त्यागना ही पड़ेगा।

प्रेम गली अति सांकरी........

(ऐसा कुछ है भाई .....हम कुछ भी याद नहीं करते इस कारण हो सकता हो शब्द ठीक न हो पर भाव वही है) पुस्तक – आपके प्रश्न भाग द्वितीय प्रकाशक, प्रथम भाग में 126 प्रश्न पब्लिश्ड हेतु भेज दिए)

0000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न

आप किसको चाहते हो भगवान को या वासना के सुख को?

Whom do you prefer God or lust.

उत्तर– यदि कहते हो कि भगवान को , पर मन में विकार है तो झूठ बोलने से क्या लाभ ? यदि कहते हो कि विकार तो हैं पर अब शुद्धि चाहते हैं तो पापप्रशमन स्तोत्र की शरण लो।

आपके अंतःकरण में जो (समाविष्ट होता) है वही मिलता है मेरे भाईयों !

आप संसार को चूना लगा सकते हो पर परमात्मा को नहीं।

वह आपकी नस नस से वाकिफ है।

अतः संसार चाहिए या हरि ये आप जानों।

यदि शिव पार्वती प्रेम प्रसंग की तरह

कोई स्त्री आपको बहुत चाहती हो (आपके वियोग में मरने को आतुर हो) तो ही उसकी परीक्षा (शंकर जी की तर्ज पर लेकर) विवाह करो पर जबरदस्ती किसी नारी पर आसक्त होना तो आपका महाबंधन है। आपका शिवत्व नहीं भोगों का बवंडर है। वासना है और कुछ नहीं। आपका चित्त दुर्गा , राधा या लक्ष्मी जी का ही सतत् चिन्तन करता है तो आप परम

पद के अधिकारी हो पर भोग भोग भोग ही चिल्लाते हो हर रात तो आपका भविष्य ठीक नहीं। यह मान लो।

000000000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न– छाया पुरुष– सम्बन्धी उस उत्तम ज्ञान को विस्तारपूर्वक कहने की कृपा करें ।

उत्तर– शिवा ने भक्तों के कल्याण के लिए आशुतोष को शान्त मुद्रा में देखकर कहा कि – हे देवदेव महादेव! योगियों तथा मानव मात्र के हितकी इच्छासे छाया पुरुष– सम्बन्धी उस उत्तम ज्ञान को विस्तारपूर्वक कहने की कृपा करें ।

दया के सागर श्री शंकर बोले– हे देवि ! सुनो, मैं छायापुरुष का उत्तम लक्षण कह रहा हूँ, जिसे भलीभाँति जानकर मनुष्य सभी पापोंसे मुक्त हो जाता है। हे वरवर्णिनि!

1.श्वेत वस्त्र पहनकर

2.माला धारणकर

3.उत्तम गन्ध– धूपादिसे सुगन्धित होकर

4. चन्द्रमा अथवा सूर्यको पीछेकर

5. सम्पूर्ण कामनाओंका फल देनेवाले मेरे पिण्डभूत नवाक्षर महामन्त्र '(ॐ**-------**) का स्मरण एक अथवा पाँच माला रुद्राक्ष से करे (भस्म धारण अनिवार्य है) और अब

6.अपनी छायाको देखे।

7.पुनः उस श्वेत वर्णकी छायाको आकाशमें देखकर वह एकचित्त होकर

8.परम कारणभूत शिवजीको देखे।

ऐसा करनेसे उसे ब्रह्मकी प्राप्ति होती है और वह

ब्रह्महत्या आदि पापोंसे छूट जाता है–ऐसा कालवेताओंने

कहा है। इसमें संशय नहीं है । हे रुद्राणी! यह छायापुरुष भविष्य को भी तत्काल बताता है ।

शिवा – हे देवदेव महादेव! क्या यह छायापुरुष सभी मनुष्यों को समान दिखाई देता है अथवा अलग–अलग?

सुनकर महादेव उवाच –

देवी ! कोई सी भी क्रिया हो वह सभी के लिए एक समान फलदायक नही होती । साधना की सिद्धि भी सभी को एक समान समय में नहीं मिलती ।

शिवा – हे आशुतोष! मैं समझी नहीं कृपया स्पष्टीकरण करने की कृपा करें – सुनकर

नीलकण्ठ प्रभु ने कहा कि – हे कुमार कार्तिकेय की जननी सुनों – पूर्व जन्म में जो साधक जितनी भी साधना (माना 60 फीसदी) कर चुका इस जन्म में शेष साधना (बची हुई 40þ) जैसे ही पूर्ण होती है उसी समय तत्काल वह फल प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है इसी कारण आपने देखा होगा कि कुछ भक्तों को मात्र आधे ही पुरश्चरण में सब कुछ प्राप्त हो जाता है यहाँ तक कि मेरा साक्षात्कार भी और किसी किसी को 12–13 वर्ष तक अनेक बार अनुष्ठान करने पर भी मेरे दर्शन स्वप्न जगत में भी नहीं होते । किसी के द्वारा मात्र सवा लक्ष बार पंचाक्षरमन्त्र का जप होते ही मैं उसके जीवन में आनंद की वर्षा कर देता हूँ और किसी के द्वारा यम नियम पूर्वक तीर्थराज स्थली पर तपस्या करने पर भी ऐसा नहीं होता। यहाँ मैं अनुग्रह कर्ता होने पर भी विवश होकर रह जाता हूँ क्योंकि यदि मैने पूर्व जन्म के तपस्वी और जितेन्द्रिय को यदि उसी साधारण साधक के समान फलदान दिया तो फिर इहलोक में कोई भी तपोधन ही नहीं होगा और सब मेरे अनुग्रह का अनुचित लाभ उठायेंगे ।

अतः आप यहाँ अभी छायापुरुष का

भविष्य कथन सुनें –

यदि उस छायायें अपना शिर दिखायी न पड़े तो छः महीने में मृत्यु जाननी चाहिये, ऐसे योगी के मुखसे जिस प्रकारका वाक्य निकलता है, उसके अनुरूप ही फल होता है ।

001.

शुक्लवर्णकी छाया होनेपर धर्मकी वृद्धि ।

002.

कृष्णवर्णकी होनेपर पापकी वृद्धि जाननी चाहिये।

003.

रक्तवर्णकी होनेपर बन्धन जानना चाहिये ।

004.

पीतवर्णकी होनेपर शत्रुबाधा समझनी चाहिये।

005.

छायाके नासिकारहित होने पर बन्धुनाश ।

006.

और मुखरहित होनेपर भूखका भय रहता है।

007.

कटि– रहित होनेपर स्त्रीका नाश

008.

जंघारहित होनेपर धनका नाश होता है । एवं

009.

चरणरहित होनेपर विदेशगमन होता है।

हे गजानन की माता ! यह छायापुरुषका फल मैंने कहा।

हे महेश्वरि ! पुरुषको प्रयत्नपूर्वक इसका विचार करना चाहिये ।

हे प्राण प्रिय ! उस छायापुरुषको भलीभाँति देखकर उसे अपने मनमें पूर्णतः सन्निविष्ट करके मनमें मेरे नवात्मक (नवाक्षर) मन्त्रका जप करना चाहिये, जो

कि साक्षात् मेरा ह्रदय ही है । इस नवाक्षर महामन्त्र के किसी शिवालय में या बिल्ववृक्ष के निकट बैठकर मात्र एक लाख जप से मेरा अनन्य भक्त मेरे दर्शन भी कर लेता है। इसमें संदेह नहीं । हेप्राणशक्ति! हे आद्यशक्ति ! एक वर्ष बीत जानेपर वह मन्त्रजापक ऐसा कुछ नहीं है, जिसे सिद्ध न कर सके, वह (सकामी हो तो) अणिमा आदि आठों सिद्धियोंको तथा आकाशमें विचरणकी शक्तिको प्राप्त कर लेता है ॥

अब इससे भी अधिक दुष्प्राप्य शक्तिको प्राप्त करनेवाले ज्ञानका वर्णन करता हूँ, जिससे ज्ञानियोंके समक्ष संसारमें सब कुछ सामने रखी हुई वस्तुकी भाँति प्रत्यक्ष दिखायी पड़ने लगता है।

पर ज्ञानी अपने ज्ञान या सिद्धि का प्रदर्शन न करें अन्यथा कुछ ही मासों में संपूर्ण शक्तियाँ पुनः मेरे पास वापस आ जाती हैं । मेरे भक्त का कर्तव्य है कि वह निष्काम भाव से मेरी भक्ति

का प्रसार करे। हे शिवे ! जो मैं हूँ वही तुम हो और जो तुम हो वही मैं हूँ। जो शिव है वही विष्णु है और जो विष्णु है वही विद्या।

0000000000000000000000000000000000000000000

प्रश्न–

संकल्प कौन तोड़ता है? या आलस्य कौन करता है ? या जप तप व्रत–उपवास कौन लोग नहीं करते ?

उत्तर – जिनका लक्ष्य राई के समान (इतना सा) , अति लघु या कनिष्ठ है वे ही आलस्य प्रमाद करते हैं वे ही ईश्वर के अनुष्ठान व पुरश्चरण से जी चुराते हैं। और एकादशी , नवदुर्गा या जयंती पर भी खूब चरते हैं और परायी नार से संबंध बनाते हैं। इनको परम लक्ष्य से कोई मतलब नहीं होता बस थोड़ा–बहुत क्षणभंगुर दैहिक सुख मिलता रहे।

पर सनत्कुमार या हनुमान जैसे विरले ही हैं उनको फालतू की फफूंदों या क्षणभङ्गुर वासनात्मक कामसुख से कोई भी मतलब नहीं न ही बैंक में ठूस ठूसकर धन भरने की इच्छा करते हैं वे। वे कंचन और कामिनी की स्पृहा को समय की बर्बादी मानते हैं। अप्सरा रम्भा की कामुक बातें जो परम भक्त के संयम को नष्ट करने के लिए काफी हैं पर......................

शुकदेव जैसा जितेन्द्रिय

कभी विचलित नहीं होता

क्योंकि वह जानता है कि

लक्ष्य ही बड़ा है न कि क्षणभंगुर सुख।

इस कारण वह अपना समय नष्ट नहीं करता। कण्डु मुनि का तप प्रम्लोचा ने भंग किया , मेनका ने विश्वामित्र का। पर शुकदेव जैसा वीतरागी न तो भूतकाल में हुआ न ही भविष्य में होगा। कण्डू मुनि ने सोचा कि – हो सकता है यह मेरे पुण्य का फल हो अतः थोड़ा–बहुत सुख ले ही लूँ और कल से तप करूँगा । फिर वे वासना के गंदे कीचड़ में इतने डूबे कि

907 वर्ष , छः माह और तीन दिन नष्ट हो गए (इतने वर्ष में वे अपने लक्ष्य को ही पा जाते पर यह काम पर विजय न पाने का दुष्परिणाम है ही कि मंजिल , लक्ष्य , परमधाम सब कुछ छूट जाता है । वह मूर्ख कामी मात्र नारी तन से मिलने वाले शारीरिक संबंध के सुख के लिए

मौत और संघर्ष को भी जानबूझकर अपना लेता है और लाइफटाइम तक बंदर जैसा नाचता रहता है और डान्स करता करता चिता पर सो जाता है।पर अक्षयरुद्र अंशभूतशिव क्या कहे।

बस इसके भाव इस पुस्तक (हे वीर ब्रह्मचारी) में लिखे हो जायेंगे और वह पुस्तक भी इतिहास के रचनाकार की एक कृति कहलायेगी पर वे लोग संयम तो कर ही नहीं पायेंगे और बस पढ़ना ही अच्छा लगेगा पर नियम धारण करने में मनाही होगी।

खैर यह आप विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय १५ में देखना। दक्ष प्रजापति जब पुनः पैदा हुए थे तब इस कण्डु की पुत्री के गर्भ से ही जन्में थे। जिसका नाम मारिषा था। इस पुनर्जन्म में ही दक्ष की 60 बेटियां थी। यह मारिषा दस प्रचेताओं की पत्नी बनी थी। यह दस प्रचेता ध्रुव के वंशज थे। ये ध्रुव प्रथम मन्वन्तर के थे पर यह वंश प्रचेता तक आते आते लगभग 6 मन्वन्तरों को खा गया। और सती देहत्याग तो दक्ष के पूर्व जन्म की घटना ही थी। इसका विस्तार हमने शिव चरित मानस भाग प्रथम में किया है। कण्डू ने अतिभोग के बाद अप्सरा पर गुस्सा किया पर स्वयं की कामुकता का सोचा तो चुप होकर अपने आपको धिक्कारने लगे।

— वे बोले कि—

तपांसि मम नष्टानि

हतं ब्रह्मविदां धनम् ।

हतो विवेकः

केनापि योषिन्मोहाय निर्मिता। ।

(मेरा तप नष्ट हो गया ,

ब्रह्मनिष्ठ का धन तपस्या ही था वह लुट गया , विवेक मारा

गया अहो अहो अहो !!!!!!!!!!!!!!!!!!!!

स्त्री रूपी सुन्दर व कामुकता की पिटारी को तो देवताओं ने तप नष्ट करने के लिए ही बनाया है..... पर इसमें उसकी भी क्या गलती मैने क्यों अपने। आपको नियंत्रित नहीं रखा। हाय हाय हाय हाय मैं कण्डु मारा गया।

और वे अब पाप नष्ट करने के लिए व आज से ही अखंड ब्रह्मचर्य के पालन व रक्षण हेतु ब्रह्म पार स्तोत्र का अनुष्ठान करने लगे। और..... जितेन्द्रिय हो गए।

जड़भरत के निवृत्तिमार्ग को देखकर जिसका उदय होता है वो मुमुक्षा ही है, वो एकाकी जीवन का उपदेश ही है जो मुक्त करके पथ में भी आनंद देता है और लक्ष्य में भी केवल आनंद ही आनंद की वर्षा कर धन्य कर देता है

इसमें मात्र संयम ही एक मात्र कीमत है जो आरंभ में चुकानी पड़ती हैं पर लगभग3 या 6वर्षों के बाद ये कीमत भी विस्मृत हो जाती है

कारण :अपने मूल स्वरूप में ही रमण वो भी सतत् रूप से......

देखें ✍उन्होने कहा था कि

हे राजा! हे रहूगण!

मात्र पूर्व वासनाओं और क्षणिक भोगों की स्पृहा की आंतरिक दबी हुई सांसारिक इच्छाओं के कारण ही मनुष्य विवाहादि संबंध करके संयोग और वियोग में रोता हुआ दुखी और भयग्रस्त होता रहता है ((जबकि पहले मैथुनी श्रृष्टि नहीं थी तब भी ब्रह्मकार्य ने कभी भी विराम नहीं लिया तो एक के कारण कौन सी सृष्टि रुक ही जायेगी, बैसे भी जनसंख्या कौन सी कम है)) जबकि आत्मा के सुख का मूल बाह्य कारण नहीं मात्र स्वयं का आत्मा है स्वयं ही है मैनें स्वयं अनेक जन्मों के पश्चात इस सत्यता को जाना कि परमगति के लिए निवृत्त होकर एकाकी रहना ही परम कल्याण का एक मात्र हेतु है भोगों की इच्छा कभी भी योग को जन्म नहीं दे सकती, भोगों या स्त्री आदि के भोगने से कामभाव का नाश कभी नहीं होता कामनायें करके कोई मूर्ख उस प्राप्त हुये भोग को न भोगे, सुख का अनुभव न करे ऐसा कभी भी नहीं होता कि अग्नि में घृत डालने से अग्नि बुझ जाये।

इसका उदाहरण कण्डु नामक मुनि थे जिसकी भोग्या और एक अप्सरा प्रम्लोचा ने 907 वर्षों के बाद कह ही दिया कि हे हे स्वामी!

मैं आपके भय से शांत थी आपने मेरा भोग वर्षों से किया, 100वर्ष बाद मैने सत्य बताने का प्रयास किया पर आपने कहा कुछ वर्ष और प्रेम दो.....

मैं 100वर्ष और रुक ग ई, फिर पुनः मैने कहा कि भोगों से योग सिद्ध नहीं होता अतः आप तप करो तो आपने पुनः 200 वर्ष का और संग मांगा..... पर अब आपका जीवन काल के मुख में जा रहा है और आपकी वासना शांत ही नहीं हो पा रही .....और शांत हो भी नहीं सकती

खैर – अब आप एक कामुक स्त्री और जितेन्द्रिय का संवाद सुनें।

●●रंभा व श्री शुकदेव जी संवाद ●●

रंभा नामक एक अतीव सुंदरी (अप्सरा) श्री शुकदेव जी के रूपलावणय को देख मुग्ध हो गयी और श्रीशुकदेव जी को लुभाने पहुंची। श्री शुकदेव जी सहज वैराग्यवान थे। बचपन में ही वह वन चले गए थे। उन्होंने ही राजा परीक्षित को भागवत पुराण सुनाया था। वे महर्षि वेदव्यास के अयोनिज पुत्र थे और बारह वर्षों तक माता के गर्भ में रहे।

श्रीकृष्ण के यह आश्वासन देने पर कि उन पर माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा, उन्होंने जन्म लिया। उन्हें गर्भ में ही उन्हें वेद, उपनिषद, दर्शन और पुराण आदि का ज्ञान हो गया था। कम अवस्था में ही वह ब्रह्मलीन हो गए थे।

रंभा ने उन्हें देखा, तो वह मुग्ध हो गई और उनसे प्रणय निवेदन किया। शुकदेव ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। रंभा उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में जुट गई। जब वह बहुत कोशिश कर चुकी, तो शुकदेव ने पूछा, देवी, आप मेरा ध्यान क्यों आकर्षित कर रही हैं। रंभा ने कहा, ताकि हम जीवन का छक कर भोग कर सकें। शुकदेव बोले, देवी, मैं तो उस सार्थक रस को पा चुका हूं, जिससे क्षण भर हटने से जीवन निरर्थक होने लगता है। मैं उस रस को छोड़कर जीवन को निरर्थक बनाना नहीं चाहता। कुछ और रस हो, तो भी मुझे क्या?

रंभा ने अपने रंग–रूप और सौंदर्य की विशेषताएं बताईं। उसने कहा कि उसके शरीर से सौंदर्य की अजस्र धारा तो बहती ही रहती है, भीनी–भीनी सुवास की लहरियां भी फूटती रहती हैं। देवलोक में, जहां वह रहती है, कोई कभी वृद्ध नहीं होता। शुकदेव ने यह सुना तो बोले, देवी, आज हमें पहली बार यह पता लगा कि नारी शरीर इतना सुंदर होता है। यह आपकी कृ पा से संभव हुआ। अब यदि भगवत प्रेरणा से पुनः जन्म लेना पड़ा, तो मैं नौ माह आप जैसी ही माता के गर्भ में रहकर इसका सुख लूंगा। अभी तो प्रभु कार्य ही प्रधान है।

यहाँ हमें ध्यान देना है कि हम इसे श्रृंगार और अध्यात्म का संवाद कह सकते हैं। भोग और मोक्ष का संवाद कह सकते हैं।यहाँ हमें अपनी दृष्टि सांसारिक स्थूलता से हटा कर पारमार्थिक सूक्ष्मता की ओर बड़ी सावधानी से ले जानी चाहिए।

यहाँ रंभा को भोग और श्री शुकदेव जी को मोक्ष का प्रतीक मानना चाहिए।

इस संवाद के रचयिता हमें पता नहीं अज्ञात हैं। यह संवाद आचार्य परंपरा से प्राप्त है।लेकिन है यह बहुत प्रसिद्ध।

रम्भा–शुक संवाद–

क्षणभंगुर दैहिक सुख आधी घडी तो स्वर्ग का सुख देता है

पर आजीवन

उस संभोग के परिणाम को

रोते रोते सहना पडता है।

अतः सावधान

सावधान

सावधान

सावधान................ हरिहर में मन लगाओ या मेरी माँ पराम्बा भुवनेश्वरी के चरणों का ही सतत् ध्यान करो अथवा सोऽहम् महावाक्य से एकाकार हो जाओ।

रंभा रुपसुंदरी है और शुकदेवजी मुनि शिरोमणि ! रंभा यौवन और श्रृंगार का वर्णन करते नहीं थकती, तो शुकदेवजी ईश्वरानुसंधान का। रंभा क्षणभंगुर दैहिक सुख का लोभ देकर शुकदेव का नाश करने को तुली है पर शुकदेव उसका त्यागकरके प्रभु से एकाकार होने को ही परम आनंद मानते हैं। दोनों के बीच हुआ संवाद अति सुंदर है; ऐसा किसी संत का भाव है। आईये देखें

0000000000 रम्भाः 000000000000000

ताम्बूलरागैः कुसुम प्रकर्षैः,सुगन्धितैलेन च वासितायाः ।

न मर्दितौ येन कुचौ निशायां,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनि ! सुगंधित पान, उत्तम फूल, सुगंधी तेल, और अन्य पदार्थों से सुवासित मनोहर कायावाली व परमसुख का आधार **कामिनी के** जिन **कुचों का मर्दन**, रात को जिसने नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया ।

आनन्द कन्दर्पनिधान रुपा,झणत्क्वणत्कं कण नूपुराढ्या ।

नाऽस्वादिता येन सुधाधरस्था,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

चन्द्रानना सुन्दरगौरवर्णा,व्यक्तस्तनीभोगविलास दक्षा ।

नाऽऽन्दोलिता वै शयनेषु येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

अर्थात्

हे मुनिवर ! आनंद और कामदेव के खजाने समान, खनकते कंगन और नूपुर पहेनी हुई कामिनी के होठ पर जिसने चुंबन किया नहीं, उस पुरुष का जीवन व्यर्थ है। चंद्र जैसे मुखवाली, सुंदर और गौर वर्णवाली, जिसकी छाती पर नर को मुग्ध करने के लिए ही स्तन व्यक्त हुए हैं ऐसी, संभोग और विलास में चतुर, ऐसी स्त्री को बिस्तर में जिसने आलिंगन नहीं दिया, उसका जीवन व्यर्थ है।

शुकः

ब्रह्मादि देवोऽखिल विश्वदेवो,मोक्षप्रदोऽतीतगुणः प्रशान्तः ।

धृतो न योगेन हृदि स्वकीये,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

ब्रह्मादि देवों के भी देव, संपूर्ण संसार के स्वामी, मोक्षदाता, निर्गुण, अत्यंत शांत ऐसे भगवान का ध्यान जिसने योग द्वारा हृदय में (हर रात) नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया। वे प्रभु ही परमपद देते हैं वे ही परमसुख देते हैं पर **कामिनी के** जिन **कुचों का मर्दन** तू कह रही है वे दुखों का जन्म देकर आजीवन रुलाने वाले हैं। : हे मूर्ख स्त्री ! उन कुचों में मांस के 100 ग्राम लोथडों के अलावा और कुछ भी नही है! और उनमें कैंसर हो जाए या फोडा हो जाए तो वे ही मल के समान बदबू मारने लगते हैं.............. तू अपने कुचों के साथ ही चिता में एक दिन जल जायेगी अतः प्रभु में मन लगा। .... समाधि च सत्कर्म हन्त्री........ कपटस्य तन्त्री जा अपने लोक वापस जाकर उनको ही सुख दे जिनके कारण तू यहां आई है।

दुःखप्रदं कामिनिभोग सेवितम् अर्थात् काम उपभोग का एक बार ही सेवन करने पर बेचारे पुरुष को दुख ही दुख मिलता है अतः मैं इन चक्करों में नहीं पडता। हरि बोल हरि बोल हरि बोल।

कापट्यवेषा जनवञ्चिका सा,विण्मूत्र दुर्गन्धदरी दुराशा ।

संसेविता येन सदा मलाढ्या,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

छल–कपट करनेवाली, लोगों को कामसुख का लालच देकर मारने वाली ऊर्जा का नाश करके खोखला व अधमरा बनानेवाली, **विष्टा–मूत्र और दुर्गंध की गुफारुप**, दुराशाओं से परिपूर्ण, अनेक प्रकार से मल से भरी हुई, ऐसी स्त्री का सेवन जिसने किया, उसका जीवन व्यर्थ हो गया । उन्मत्तवेषा मदिरासु मत्ता,पापप्रदा लोकविडम्बनीया । योगच्छला येन विभाजिता च,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥ अर्थात् हे रंभा ! पागल जैसा विचित्र वेष धारण की हुई, मदिरा

पीकर मस्त बनी हुई, पाप देनेवाली, लोगों को बनानेवाली, और योगीयों के साथ कपट करनेवाली स्त्री का सेवन जिसने किया है, उसका जीवन व्यर्थ है ।

..................पर वह नहीं मानी...................आगे कहने लगी......................

रम्भाः

पीनस्तनी चन्दनचर्चिताङ्गी,विलोलनेत्रा तरुणी सुशीला ।

नाऽऽलिङ्गिता प्रेमभरेण येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनिवर ! सुंदर स्तनवाली, शरीर पर चंदन का लेप की हुई, चंचल आँखोंवाली सुंदर युवती का, प्रेम से जिस पुरुष ने आलिंगन किया नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

शुकः

अचिन्त्य रूपो भगवान्निरञ्जनो,विश्वम्भरो ज्ञानमयश्चिदात्मा ।

विशोधितो येन ह्रदि क्षणं नो,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

जिसके रुप का चिंतन नहीं हो सकता, जो निरंजन, विश्व का पालक है, जो ज्ञान से परिपूर्ण है, ऐसे चित्स्वरुप परब्रह्म का ध्यान जिसने स्वयं के हृदय में किया नहीं है, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

रम्भाः

विशालवेणी नयनाभिरामा,कन्दर्प सम्पूर्ण निधानरुपा ।

भुक्ता न येनैव वसन्तकाले,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

जिस पुरुष ने वसंत ऋतु में लंबे बालवाली, सुंदर नेत्रों से सुशोभित कामदेव के समस्त भंडाररुप ऐसी कामिनी के साथ विहार न किया हो, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुकः

मायाकरण्डी नरकस्य हण्डी,तपोविखण्डी सुकृतस्य भण्डी ।

नृणां विखण्डी चिरसेविता चेत्,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! नारी माया की पिटारी, नर्क की हंडी, तपस्या व वीर्य का विनाश करनेवाली तथा पुण्य का भी नाश करनेवाली, पुरुष की घातक है; इस लिए जिस पुरुष ने उसका सेवन किया है, उसका जीवन व्यर्थ गया । व्यर्थ गया । व्यर्थ गया ।

रम्भा–

मार्गे मार्गे नूतनं चूतखण्डं खण्डे खण्डे कोकिलानां विरावः।

रावे रावे मानिनीमानभंगो भंगे भंगे मन्मथः पञ्चबाणः ॥

हे मुनि ! हर मार्ग में नयी मंजरी शोभायमान हैं, हर मंजरी पर कोयल सुमधुर टेहुक रही हैं । टेहका सुनकर मानिनी स्त्रीयों का गर्व दूर होता है, और गर्व नष्ट होते हि पाँच बाणों को धारण करनेवाले कामदेव मन को बेचेन बनाते हैं ।

श्री शुक उवाच–

मार्गे मार्गे जायते साधुसङ्गः,सङ्गे सङ्गे श्रूयते कृष्णकीर्तिः ।

कीर्तौ कीर्तौ नस्तदाकारवृत्तिः वृत्तौ वृत्तौ सच्चिदानन्द भासः ॥

हे रंभा ! हर मार्ग में साधुजनों का संग होता है, उन हर एक सत्संग में भगवान कृष्णचंद्र के गुणगान सुनने मिलते हैं । हर गुणगाण सुनते वक्त हमारी चित्तवृत्ति भगवान के ध्यान में लीन होती है, और हर वक्त सच्चिदानंद का आभास होता है ।

तीर्थे तीर्थे निर्मलं ब्रह्मवृन्दं वृन्दे वृन्दे तत्त्व चिन्तानुवादः ।

वादे वादे जायते तत्त्वबोधो बोधे बोधे भासते चन्द्रचूडः ॥

हर तीर्थ में पवित्र ब्राह्मणों का समुदाय विराजमान है । उस समुदाय में तत्त्व का विचार हुआ करता है । उन विचारों में तत्त्व का ज्ञान होता है, और उस ज्ञान में भगवान चंद्रशेखर शिवजी का भास होता है ।

रम्भाः

गेहे गेहे जङ्गमा हेमवल्ली वल्यां वल्यां पार्वणं चन्द्रबिम्बम् ।

बिम्बे बिम्बे दृश्यते मीन युग्मं,युग्मे युग्मे पञ्चबाणप्रचारः ॥

हे मुनिवर ! हर घर में घूमती फिरती सोने की लता जैसी ललनाओं के मुख पूर्णिमा के चंद्र जैसे सुंदर हैं । उन मुखचंद्रो में नयनरुप दो मछलीयाँ दिख रही है, और उन मीनरुप नयनों में कामदेव स्वतंत्र घूम रहा है ।

शुकः

स्थाने स्थाने दृश्यते रत्नवेदी,वेद्यां वेद्यां सिद्धगन्धर्वगोष्ठी ।

गोष्ठयां गोष्ठयां किन्नरद्वन्द्वगीतं,गीते गीते गीयते रामचन्द्रः ॥

हे रंभा ! हर स्थान में रत्न की वेदी दिख रही है, हर वेदी पर सिद्ध और गंधर्वों की सभा होती है । उन सभाओं में किन्नर गण किन्नरीयों के साथ गाना गा रहे हैं । हर गाने में भगवान रामचंद्र की कीर्ति गायी जा रही है ।

रम्भाः

कामातुरा पूर्णशशांक वक्त्रा,बिम्बाधरा कोमलनाल गौरा ।

नाऽऽलिङ्गिता स्वे ह्र्दये भुजाभ्यां,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनि ! भोग की ईच्छा से व्याकुल, परिपूर्ण चंद्र जैसे मुखवाली, बिंबाधरा, कोमल कमल के नाल जैसी, गौर वर्णी कामिनी जिसने छाती से नहीं लगायी, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुकः✍

चतुर्भुजः चक्रधरो गदायुधः,पीताम्बरः कौस्तुभमालया लसन् ।

ध्याने धृतो येन न बोधकाले,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! चक्र और गदा जिसने हाथ में लिये हैं, ऐसे चार हाथवाले, पीतांबर पहेने हुए, कौस्तुभमणि की माला से विभूषित भगवान का ध्यान, जिसने जाग्रत अवस्था में किया नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

रम्भाः

विचित्रवेषा नवयौवनाढ्या,लवङ्गकर्पूर सुवासिदेहा ।

नाऽऽलिङ्गिता येन दृढं भुजाभ्यां,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥हे मुनिराज ! अनेक प्रकार के वस्त्र और आभूषणों से सज्ज, लवंग कर्पूर इत्यादि सुगंध से सुवासित शरीरवाली नवयुवती को, जिसने अपने दो हाथों से आलिंगन दिया नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

शुकः

नारायणः पङ्कजलोचनः प्रभुः,केयूरवान् कुण्डल मण्डिताननः।

भक्त्या स्तुतो येन न शुद्धचेतसा,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

कमल जैसे नेत्रवाले, केयूर पर सवार, कुंडल से सुशोभित मुखवाले, संसार के स्वामी भगवान नारायण की स्तुति जिसने एकाग्रचित्त होकर, भक्तिपूर्वक की नहीं, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भाः

प्रियवंदा चम्पकहेमवर्णा,हारावलीमण्डितनाभिदेशा ।

सम्भोगशीला रमिता न येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनिवर ! प्रिय बोलनेवाली, चंपक और सुवर्ण के रंगवाली, हार का झुमका नाभि पर लटक रहा हो ऐसी, स्वभाव से रमणशील ऐसी स्त्री से जिसने भोग विलास नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुकः

श्रीवत्सलक्षाङ्कितहृत्प्रदेशः,ताक्ष्र्यध्वजः शाङ्र्गधरः परात्मा ।

न सेवितो येन नृजन्मनाऽपि,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

जिस प्राणी ने मनुष्य शरीर पाकर भी, भृगुलता से विभूषित हृदयवाले, धजा में गरुड वाले, और शाङ्ग नामके धनुष्य को धारण करनेवाले, परमात्मा की सेवा न की, उसका जन्म व्यर्थ गया

रम्भाः ❣ ❣ ❣

चलत्कटी नूपुरमञ्जुघोषा,नासाग्रमुक्ता नयनाभिरामा ।

न सेविता येन भुजङ्गवेणी,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनिश्रेष्ठ ! चंचल कमरवाली, नूपुर से मधुर शब्द करनेवाली, नाक में मोती पहनी हुई, सुंदर नयनों से सुशोभित, सर्प के जैसा अंबोडा जिसने धारण किया है, ऐसी सुंदरी का जिसने सेवन नहीं किया, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

शुकः

विश्वम्भरो ज्ञानमयः परेशः,जगन्मयोऽनन्तगुण प्रकाशी ।

आराधितो नापि वृतो न योगे,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! संसार का पालन करनेवाले,

ज्ञान से परिपूर्ण,

संसार स्वरुप,

अनंत गुणों को प्रकट करनेवाले

भगवान की आराधना जिसने नहीं की,

और योग में उनका ध्यान जिसने नहीं किया, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

रम्भाः

कस्तूरिकाकुंकुम चन्दनैश्च,सुचर्चिता याऽगुरु धूपिकाम्बरा ।

उरः स्थले नो लुठिता निशायां,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

कस्तूरी और केसर से युक्त चंदन का लेप जिसने किया है, अगरु के गंध से सुवासित वस्त्र धारण की हुई तरुणी, रात को जिस पुरुष की छाती पर लेटी नहीं, उसका जन्म व्यर्थ गया ।

शुकः

आनन्दरुपो निजबोधरुपः,दिव्यस्वरूपो बहुनामरपः ।

तपः समाधौ मिलितो न येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! आनंद से परिपूर्ण रुपवाले, दिव्य शरीर को धारण करनेवाले, जिनके अनेक नाम और रुप हैं ऐसे भगवान के दर्शन जिसने समाधि में नहीं किये, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भाः

कठोर पीनस्तन

भारनम्रा,

सुमध्यमा

चञ्जलखञ्जनाक्षी ।

हेमन्तकाले **रमिता न** येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

जिस पुरुष ने हेमंत ऋतु में, कठोर और भरे हुए स्तन के भार से झुकी हुई, पतली कमरवाली, चंचल और खंजर से नैनोंवाली स्त्री का रमण (संभोग) नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भा पुनः बोली –

सुलक्षणा मानवती गुणाढ्या,प्रसन्नवक्त्रा मृदुभाषिणी या ।

नो चुम्बिता येन सुनाभिदेशे,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनिवर ! सद्लक्षण और गुणों से युक्त, प्रसन्न मुखवाली, मधुर बोलनेवाली, मानिनी सुंदरी के नाभि का जिसने चुंबन नहीं किया उसका जीवन व्यर्थ गया ।

देखिए यहां पर रम्भा ने

नर को पतित करने की कोई

कसर न छोडी।

शुकः

तपोमयो ज्ञानमयो विजन्मा,विद्यामयो योगमयः परात्मा ।

चित्ते धृतो नो तपसि स्थितेन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! तपोमय, ज्ञानमय, जन्मरहित, विद्यामय, योगमय परमात्मा को, तपस्या में लीन होकर जिसने चित्त में धारण नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया।

शुकः

पल्यार्जितं सर्वसुखं विनश्वरं, दुःखप्रदं कामिनिभोग सेवितम् ।

एवं विदित्वा न धृतो हि योगो,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! जिस इन्सान ने, नारी के सेवन से उत्पन्न सब सुख नाशवंत, और दुःखदायक है ऐसा जानने के बावजूद जिसने योगाभ्यास नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भाः

समस्तशृङ्गार विनोदशीला,लीलावती कोकिल कण्ठमाला ।

विलासिता नो नवयौवनेन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनि ! जिस पुरुष ने अपनी युवानी में, समस्त श्रृंगार और मनोविवाद करने में चतुर और अनेक लीलाओं में कुशल और कोकिलकंठी कामिनी के साथ विलास नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।शुकः

समाधि हन्त्री जनमोहयित्री,धर्मे कुमन्त्री कपटस्य तन्त्री ।

सत्कर्म हन्त्री कलिता च येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

समाधि का नाश करनेवाली, लोगों को मोहित करनेवाली, धर्म विनाशिनी, कपट की वीणा, सत्कर्मो का नाश करनेवाली नारी का जिसने सेवन किया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

रम्भाः

बिल्वस्तनी कोमलिता सुशीला,सुगन्धयुक्ता ललिता च गौरी ।

नाऽऽश्लेषिता येन च कण्ठदेशे,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनिराज ! बिल्वफल जैसे कठिन स्तन है, अत्यंत कोमल जिसका शरीर है, जिसका स्वभाव प्रिय है, ऐसी सुवासित केशवाली, ललचानेवाली गौर युवती को जिसने आलिंगन नहीं दिया, उसका जीवन व्यर्थ गया ।

शुकः

चिन्ताव्यथादुःखमया सदोषा,संसारपाशा जनमोहकर्त्री ।

सन्तापकोशा भजिता च येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

चिंता, पीडा, और अनेक प्रकार के दुःख से परिपूर्ण, दोष से भरी हुई, संसार में बंधनरुप, और संताप का खजाना, ऐसी नारी का जिसने सेवन किया उसका जन्म व्यर्थ गया ।

रम्भाः

आनन्दरुपा तरुणी नगाङ्गी,सद्धर्मसंसाधन सृष्टिरुपा ।

कामार्थदा यस्य गृहे न नारी,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनि ! आनंदरुप, नतांगी युवती, उत्तम धर्म के पालन में और पुत्रादि पैदा करने में सहायक, इंद्रियों को संतोष देनेवाली नारी जिस पुरुष के घर में न हो, उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुकः

अशौचदेहा पतित स्वभावा,वपुःप्रगल्भा बललोभशीला ।

मृषा वदन्ती कलिता च येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

अशुद्ध शरीरवाली, पतित स्वभाववाली, प्रगल्भ देहवाली, साहस और लोभ करानेवाली, झूठ बोलनेवाली, ऐसी नारी का विश्वास जिसने किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

——————

रम्भाः

क्षामोदरी हंसगतिः प्रमत्ता,सौंदर्यसौभाग्यवती प्रलोला ।

न पीडिता येन रतौ यथेच्छं,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे मुनिवर ! पतली कमरवाली, हंस की तरह चलनेवाली, प्रमत्त सुंदर, सौभाग्यवती , चंचल स्वभाववाली स्त्री को रतिक्रीडा के वक्त अनुकुलतया पीडित की नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुकः

संसारसद्भावन भक्तिहीना,चित्तस्य चौरा हृदि निर्दया च ।

विहाय योगं कलिता च येन,वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ॥

हे रंभा ! संसार की उत्तम भावनाओं को प्रकट करनेवाले प्रेम से रहित पुरुषों के चित्त को चोरनेवाली, ह्रदय में दया न रखनेवाली, ऐसी स्त्री का आलिंगन, योगाभ्यास छोडकर जिस पुरुष ने किया, उसका जीवन व्यर्थ है ।

——————

रम्भाः

सुगन्धैः सुपुष्पैः सुशय्या सुकान्ता वसन्तो ऋतुः पूर्णिमा पूर्णचन्द्रः ।

यदा नास्ति पुंस्त्वं नरस्य प्रभूतं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

हे मुनिवर ! सुंदर, सुगंधित पुष्पों से सुशोभित शय्या हो, मनोनुकूल सुंदर स्त्री हो, वसंत ऋतु हो, पूर्णिमा के चंद्र की चांदनी खीली हो, पर यदि पुरुष में परिपूर्ण पुरुषत्त्व न हो तो उसका जीवन व्यर्थ है ।

शुकः

सुरुपं शरीरं नवीनं कलत्रंधनं मेरुतुल्यं वचश्चारुचित्रम् ।

हरस्याङ्घ्रि युग्मे मनश्चेदलग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

हे रंभा ! सुंदर शरीर हो, युवा पत्नी हो, मेरु पर्वत समान धन हो, मन को लुभानेवाली मधुर वाणी हो, पर यदि भगवान शिवजी के चरणकमल में मन न लगे, तो जीवन व्यर्थ है ।

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र जी

प्रश्न–

हे अक्षयरुद्र! सबसे सरल साधना (मात्र दो तीन मिनट की)बतायें।देवी दुर्गा जी की व

श्रीकृष्ण जी की हमसे अधिक कुछ नहीं होता।

सुनें –

देवी का श्रीदुर्गाष्टोत्तर शतनाम। (महिमा – जो भी इसका मात्र एक बार पाठ करता है उसके लिए त्रिलोक में कुछ भी दुर्लभ नही)

मात्र 15 श्लोक हैं जो दो मिनट के हैं।

●ॐ सती साध्वी भवप्रीता........।। 1.....

कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ।। १५ ।।

इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।

नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ १६ ॥

धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेव च।

चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ १७

● श्रीकृष्ण जी की सर्वोत्तम सरल साधना वही है जो श्रीराधाकृत है जिसकी उपासना से शीघ्र धन की संभावना भी होती है। और चिरकाल का धन भी मिलता है। यह स्तोत्र है जो स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम के अध्याय 67 में है।

स्तोत्र–

श्रीराधागतिदाता श्रीकृष्ण स्तोत्रम्

गोलोकनाथ गोपीश मदीश प्राणवल्लभ ।

हे दीनबन्धो दीनेश सर्वेश्वर नमोऽस्तु ते ॥

गोपेश गोसमूहेश यशोदानन्दवर्धन द्य

नन्दात्मज सदानन्द नित्यानन्द नमोऽस्तु ते ॥

शतमन्योर्मन्युभग्न ब्रह्मदर्प विनाशक।

कालीयदमन प्राणनाथ कृष्ण नमोऽस्तु ते ॥

शिवानन्तेश ब्रह्मेश ब्राह्मणेश परात्पर ।

ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मबीज नमोऽस्तु ते ॥

चराचरतरोर्बीज गुणातीत गुणात्मक।

गुणबीज गुणाधार गुणेश्वर नमोऽस्तु ते ॥

अणिमादिकसिद्धीश सिद्धेः सिद्धिस्वरूपक ।

तपस्तपस्विस्तपसा बीजरूप नमोऽस्तु ते ॥

यदनिर्वचनीयं च वस्तु निर्वचनीयकम् ।

तत्स्वरूप तयोर्बीज सर्वबीज नमोऽस्तु ते ॥

अहं सरस्वती लक्ष्मीर्दुर्गा गङ्गा श्रुतिप्रसूः ।

यस्य पादार्चनान्नित्य पूज्या तस्मै नमो नमः ॥

स्पर्शने यस्य भृत्यानां ध्यानेन च दिवानिशम् ।

पवित्राणि च तीर्थानि तस्मै भगवते नमः ॥

प्रश्न

एक गृहस्थ – अरे ! अक्षयरुद्र! तुम किशोरों को क्यों नैष्ठिक ब्रह्मचारी का आदेश देते हो ?

क्या शंकर जी गृहस्थ नहीं?

क्या श्रीकृष्ण गृहस्थ नहीं ?

क्या राम जी गृहस्थ नहीं ?

उत्तर–

जी सत्य कहा पर आपको सनत्कुमार नहीं दिखते क्या ?

हनुमान नहीं दिखते क्या (जिनके विषय में श्री राम जी ने कह डाला कि हे वीर ! तुमसे बड़ा और तुम्हारे समान भी अन्य भक्त दूसरा है ही नहीं)

और हे गृहस्थ बन्धु !

आपको अखंड ब्रह्मचर्य में स्थित दण्डपाणि नहीं दिखते क्या ? जिनकी भक्ति आज भी भगवान कार्तिकेय जैसे गृहस्थ करते हैं ?

आप लोग हमेशा अपने अपने लाभ व सुविधा के लिए सरल उपाय पकड़कर बैठ जाते हो ।

सीधे काहे नहीं कहते कि हम पत्नी या पुत्र या पुत्रवधु की सेवा लेना चाहते हैं व पोतों के साथ खेलकर जीवन मोहग्रस्त बनाना चाहते हैं।

देश में असली एकाकी संतों की संख्या घटती जा रही है और आप सभी अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हो।

वंश नष्ट हो रहा हो तो हम आपसे कुछ नहीं कहेंगे पर दो दो तीन–तीन संतान होने पर भी मन नहीं भरता आप लोगों का।

और एक बात –

यदि वंश नष्ट होने वाला हो तो भी पतिव्रता पत्नी मिलती नजर आये तो ही अपने इकलौते बच्चे की शादी करना अन्यथा आप दोनों भी रोओगे तथा आपका युवा बालक भी रोता रहेगा ।

95 प्रतिशत घरों की कहानी को झांककर देख लीजिए।

विवाह से पहले भाईयों में खूब बनती है पर विवाह के बाद एक दूसरे को खाने के लिए दौड़ते हैं।

मात्र 5 प्रतिशत वे घर ही बचते हैं जिनमें नवीन पुत्रवधु सीता और पार्वती जैसी सौम्य व सति है।

प्रश्न

तीर्थवास का दशांश फल हेतू तथा संपूर्ण फल हेतु क्या उपाय है ?

उत्तर– जिसका चित्त भगवान में ही रमा है उसका अपना क्षेत्र ही वृन्दावन और काशी है पर वह भी काशी या वृन्दावन आदि स्थान पर जाने के लिए छटपटाहट अवश्य रखता है। अब अति मजबूरी में यदि न जा पाये तो बात अलग है ।

जो लोग किसी मजबूरी के कारण तीर्थों में निवास नहीं करते वे लोग एक उपाय से हर तीर्थ स्थल पर रहने वालों की तपस्या का 10वाँ अंश पाने के लिए एक उपाय करें –

वह उपाय यह है कि आप अपने इष्ट का कोई भी एक रक्षक पाठ केवल तीर्थ पर रहने वाले धर्मज्ञों , भक्तों व ज्ञानियों के लिए करें। तथा एक पाठ तीर्थों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में रहने वाले अनन्य भक्तों तथा ज्ञाननिष्ठों के लिए करें।

इसका जो फल है उसकी आप तुलना नहीं कर सकोगे।

इससे वे सभी साधु संत आपको विशेष आशीष देते हैं जिससे आपके परिवार की सुरक्षा और पितरों को तृप्ति मिलती है तथा इष्ट देव प्रसन्न रहते हैं।

पर कुछ स्तोत्र अवश्य ही ऐसे हैं जिनके पाठ से तीर्थ स्थल पर रहने का 100þ फल मिल जाता है फिर आपका मन हो या न हो वहाँ जाने का। पर मन हो तो अधिक अतिरिक्त अनुग्रह अवश्य होता है।

जैसे – काशी विश्वनाथ जी की काशी में रहने का फल – श्री दण्डपाणि स्तोत्र।

और द्वारका में रहने का फल गर्ग संहिता में है आदि आदि

प्रश्न –

दुर्लभ क्या है? धन , पद और सुन्दर व संस्कारी स्त्री या अन्य

उत्तर– पराभक्ति अत्यधिक दुर्लभ है।

प्रश्न –

हे अक्षयरुद्र जी ! आज रात श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 26 अगस्त की रात (सन् 2024) को आपके श्रीचरणों में नमन्। कृपया आप आज वैष्णव भक्तों को ऐसा दिव्य रहस्य बताएं जो आपने गिने चुने भक्तों को ही बताया है आपको राधे राधे ।

उत्तर–

आप धन्य हैं भक्तराज ! सुनें वही प्रसंग जो भगवान धर्म देव की अमोघ वाणी है।

धर्मदेव – मैनें जो नाम कहे है वे 24 नाम भगवान श्रीकृष्ण के हैं और इनको जो भी नित्य प्रातःकाल स्मरण करेगा वह सर्वथा सुखी और विजयी होगा। मृत्यु के समय निश्चित ही वह श्रीहरि प्रभु के नाम का उच्चारण करेगा तथा उसका कभी भी अधर्म में मन नहीं लगेगा । जो इन नामों का प्रातःकाल स्मरण करेगा उसे देखते ही सारे पाप , संपूर्ण भय तथा संपूर्ण दुख

उसी तरह भय से भाग जायेंगे जैसे गरुड पर दृष्टि पड़ते ही सर्प पलायन कर जाता है। यह मेरा वर है।जो कभी मिथ्या नहीं होगा। (नाम में श्री लगाकर ही जपें)

श्री....

1.कृष्ण

2.विष्णु

3.वासुदेव

4.परमात्मा

5.ईश्वर

6.गोविन्द

7.परमानन्द

8 एक

9 अक्षर

10. अच्युत

11.गोपेश्वर

12.गोपीश्वर

13.गोप

14.गोरक्षक

15.विभु

16 गौओं के स्वामी

17 गोष्ठ निवासी

18गोवत्स पुच्छधारी

19गोपों और गोपियों के मध्य विराजमान

20.प्रधान

21.पुरुषोत्तम

22नवघनश्याम

23.रासवास

और

24मनोहर

ब्रह्म वैवर्त पुराण ब्रह्म खण्ड अध्याय 3

प्रश्न ....

शिव जी और श्रीकृष्ण में अभिन्नभाव किसी पुराण में घोषित हो जो साक्षात भगवान श्रीकृष्ण ने कहा हो कृपया बतायें ?

उत्तर – ब्रह्म वैवर्त पुराण जो भगवान श्रीकृष्ण को परब्रह्म मानती है उसी पुराण के अनुसार सुनें।

भगवान् श्रीकृष्णने कहा–जो 'महादेव', 'महादेव' और 'महादेव' का उच्चारण करता है, उसके पीछे मैं उस नाम– श्रवणके लोभसे अत्यन्त भयभीतकी भाँति जाता हूँ। जो मनुष्य 'शिव' शब्दका उच्चारण करके प्राणोंका परित्याग करता है, वह कोटि जन्मोंके उपार्जित पापसे मुक्त हो मोक्ष प्राप्त कर लेता है। 'शिव' शब्द कल्याणका वाचक है और 'कल्याण' शब्द मुक्तिका। शिवके उच्चारणसे मोक्ष या कल्याणकी प्राप्ति होती है, इसीलिये महादेवजीको शिव कहा गया है'। धन और भाई–बन्धुओंका वियोग होनेपर जो शोक–सागरमें डूब गया हो, वह मनुष्य शिव शब्दका उच्चारण करके सर्वथा कल्याणका भागी होता है। 'शि' पापनाशक अर्थमें है और 'व' मोक्षदायक अर्थमें। महादेवजी मनुष्योंके पापहन्ता और मोक्षदाता हैं।

शिव जी मेरी आत्मा से बढ़कर मुझे प्रिय है। शिव मेरे ही समान स्वतंत्र ईश्वर है।

– ब्रह्म खण्ड ब्रह्म वैवर्त पुराण अध्याय 6 , 7,8

जो परम मूर्ख और अज्ञानी है वही शिव जी को तामसी मानते हैं।

●प्रश्न ●

शिव जी के अनेक स्तोत्र हैं उनमें कुछ उत्तम से भी उत्तम सर्वोत्तम बताये हैं । कुछ संक्षिप्त में माहात्म्य बतायें जिनकी महिमा सुनने से ही हम धन्य धन्य हो जायें। और कुछ मुख्य स्तोत्रों के नाम भी कहें। बिना शिव के मेरा जीवन शव तुल्य है उनका नाम ही मेरे सुख का आधार है।

समुद्र मंथन की कथा सुनने के बाद , वीरभद्र के पूर्व जन्मों की पापात्मक घटना के बाद वे कैसे वीरभद्र बने

और मार्कण्डेय को अमर बनाने की घटना से मैं महादेव को ही परब्रह्म मानता हूँ। अतः आप कुछ कहें मेरे इष्ट के बारे में।

उत्तर– आप धन्य हैं। वैसे

शिव जी आपके ही नहीं इस अक्षयरुद्र के भी सब कुछ हैं। अब सुनिए

1.व्यपोहन स्तोत्र (संपूर्ण पाप नष्ट तथा चराचर की पूजा का उत्तम फल भी प्राप्त होता है इससे एक बार हिन्दी में ही अर्थ देखकर आप गदगद हो जाओगे इसमें ग्रह नक्षत्र नाग अप्सरा आदि से भी उत्तम प्रार्थना की गई है जो सब कुछ श्री शिव निमित्त है तथा इस स्तोत्र के पाठ के बाद तत्काल पार्वती जी और महादेव जी कैलास पर आशीर्वाद देने के लिए वर मुद्रा में खड़े हो जाते हैं अतः तत्काल साष्टांग नमन भी करना चाहिए ऐसा शिव पुराण में लिखा है यह स्तोत्र लिंग पुराण में 110 श्लोकों से युक्त है पर शिव पुराण में कुछ बड़ा। दोनों की महिमा मात्र से आत्मा तत्काल धन्य धन्य अनुभव करती है। 2020 की महा शिवरात्रि को हम इस स्तोत्र का अनुभव कर चुके हैं उस समय रात्रिजागरण के समय सुनसार क्षेत्र में हमें इस पाठ के मध्य में ही 5–6 बार कदमों की आहट सुनाई दी (गैलेरी थी उसमें एक खिड़की उसी के पास सब कुछ हुआ यह हमने पहली बार पाठ किया था ऐसी महिमा जानकर। लेफ्ट से राईट और राईट से लेफ्ट की और कोई आया गया , गया आया ऐसा स्पष्ट कदमों की आहट आई पर पाठ के बीच उठ नहीं सकते थे अतः मात्र आहट सुनते रहे पर मन को सुकून मिला और बुद्धि समझ गई कि ये महादेव ही होंगे। सुबह नीचे वाले फ्लोर पर उपस्थित सदस्यों से पूछा तो पता लगा कि वे तो सब रात 1 बजे ही सो गए थे)

2. गुरुगीता – इसमें यथार्थ पराविज्ञान प्राप्त परम गुरु की एकनिष्ठ शरण से ही कल्याण और कैवल्या सिद्धि कही है इस स्तोत्र से भूत प्रेत चोर आदि भी नष्ट होते हैं और इस स्तोत्र को जो पढ़ता है यदि पढ़ते समय कोई उस भक्त को देख ले तो ही सालोक्य मुक्ति की गारंटी हो जाती है इस स्तोत्र से जो जो कामना की जाती है अवश्य सिद्ध होती है पर शिव मंदिर या

आम, धतुरा , बिल्ववृक्ष या ज्योतिर्लिंग के निकट या श्मशान में बैठकर जप से शीघ्र सिद्धि मिलती है। इस पाठ से इस अक्षयरुद्र ने साक्षात् परम वीर हनुमान जी के दर्शन (दोनों रूपों में मात्र षोडश दिन की साधना से) किये हैं और उनको उड़ता हुआ भी देखने का कहा तब वे तत्काल उड़कर बताये भी और उन्होनें अदृश्य होने से पहले हमसे कहा था कि – आओ पाण्डेय (यू. एस पाण्डेय) जी के पास चलते हैं यह शब्द हमें सेम टू सेम आज तक याद हैं तदोपरान्त हम इन इंजीनियर पाण्डेय जी से सत्संग भी कर चुके हैं। और सब कुछ कहा था इनसे कि हमें आपके पास हनुमान जी ने भेजा है सुनकर ही उनकी आंखो से प्रेम की अश्रूधारा बह चली ।

3. तीसरा स्तोत्र हमने स्कंदपुराण से संकलित किया है जो स्तोत्र निधिवन भाग प्रथम में शिवखण्ड में है सूर्य कृत युगल गौरीशंकर (मंगलादेवी और शिव स्तुति) । माहात्म्य वहीं पढ़े अद्भुत है।

4. एक बार पाठ से ही मुक्ति वाला एक महत्वपूर्ण स्तोत्र जो लिंगपुराण का हृदय ही मानने योग्य है वह हमने परब्रह्म विश्वनाथशिव स्तोत्रम् में संकलित किया है।

5. भैरव कृत श्रीमृत्युञ्जय रक्षक महाविद्या जो भगवान मृत्युञ्जय जी का अतुलनीय पाठ है । यह हमने शास्त्रों के अद्भुत रहस्य पुस्तक में लिखा है। जो सम्राट तक बना डालने में समर्थ है।

6. एक यक्षकृत शिवमहिम्न स्तोत्र

7. रुद्र सूक्त (शिव चरित मानस भाग प्रथम या द्वितीय में भी मिल जायेगा अर्थ सहित एक वेदोक्त है)

8. यही आठवां जो आप देख रहे हैं अर्थात् शान्त्याध्याय शिव स्तोत्रम् इसके 36 लाभ हैं जो फलश्रुति में बताए गए हैं।

अथ श्री शान्त्याध्याय शिवाष्टकम्

जयात्मयोगसंस्थाय जय संशुद्धचेतसे ।

जय दानैकशूराय जयेशाय नमोऽस्तु ते ।। 1

जयोत्तमाय देवाय जय कल्याणदायिने ।

जय प्रकटदेवाय जय जप्याय ते नमः।। 2

आत्मयोग में स्थित रहने वाले की जय हो , उन शुद्ध चेतस की जय हो एकमेव दानवीर की जय हो जयेश के प्रति नमस्कार है। उत्तम देव की जय हो कल्याणदायी की जय हो। प्रकट देव की जय हो आप जप्य की जय हो । आपको नमस्कार है।

जय लक्ष्मीविधानाय जय कान्ति विधायिने ।

जय वाक्य विशुद्धाय अजिताय नमो नमः ।। 3

जय त्रिशूलहस्ताय जय खट्वाङ्गधारिणे ।

जय निर्मितलोकाय जय रुपाय ते नमः ।। 4

लक्ष्मी विधानाय की जय हो, कान्ति के विधायक की जय हो, विशुद्ध वाक्य वाले शिव की जय हो, अजित को नमन बार बार नमस्कार हैं। हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले की जय हो खट्वांग धारण करने वाले की जय हो। लोकों को निर्मित करने वाले की जय हो। जय रूप में आपको नमस्कार है।

जय कान्तार्धदेहाय जय चन्द्रार्धधारिणे ।

जय देवादिदेवाय महादेवाय ते नमः ।। 5

जय त्रिभुवनेशाय जय विख्यातकीर्तये

जयाधाराय देवाय जय कर्त्रे नमोऽस्तु ते ।।6

कान्ता के अर्धनारीश्वर रुप की जय हो अर्धचन्द्रमा को धारण करने वाले की जय हो। देवादिदेव की जय हो महादेव आपको नमस्कार है। त्रिभुवनेश जी जय हो विख्यात कीर्ति वाले की जय हो। आधार देव की जय हो।सृष्टिकर्ता की व सदा विजय देने वाले परमात्मा की जय हो और आपको नमस्कार है।

जय निर्मल देहाय जय सर्वार्थकारिणे ।

जय मन्मथनाशाय ईशानाय नमो नमः।। 7

ब्रह्मविष्ण्विन्द्ररुपाय जय शान्ताय ते नमः

जय जातविशुद्धाय सर्वव्यापिन्नमोऽस्तु ते ।। 8

निर्मल देही की जय हो सर्वार्थकारी की जय हो मन्मथ का नाश करने वाले की जय हो श्री ईशान शिव को नमस्कार है ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र रुप वाले की जय हो शान्त स्वरुप आपको नमस्कार है। विशुद्धजात की जय हो। सर्वव्यापि आपको नमस्कार है।

फलश्रुति–

इत्येतच्छान्तिकाऽध्यायं यः पठेच्छृणुयादऽपि।

विधूय सर्वपापानि शिवलोके महीयते ।। 1

कन्यार्थी लभते कन्यां जयकामो जयं लभेत् ।

अर्थकामोलभेदर्थं पुत्रकामो बहून्सुतान् ।। 2

विद्यार्थी लभते विद्यां योगार्थी योगमाप्नुयात् ।

गर्भिणी लभते पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ।। 3

यान्यान्कामयते कामान्मानवः श्रवणादिह ।

तान्सर्वान्शीघ्रमाप्नोति देवानां च प्रियो भवेत् ।। 4

श्रुत्वाऽध्यायमिदं पुण्यं सङ्ग्रामं प्रविशेन्नृपः ।

विनिर्जित्याशु तान्शत्रून् कल्याणैः परिपूर्यते ।। 5

अक्षयं मोदतेऽकालं अतिरस्कृतशासनः ।

व्याधिभिर्नाभिभूयेत् पुत्र पौत्रैः प्रतिष्ठितः ।। 6

पठ्यमानमिदं पुण्यं यमुद्दिश्य पठेन्नरः।

तस्य रोगा न बाधन्ते वातपित्तादि सम्भवाः ।। 7

नाकाले मरणं तस्य न सर्पैश्चाऽपि दंश्यते ।

न विषं क्रमते देहे न जलान्धत्वमूकतः ।। 8

नहि सर्पभयं तस्य न चोत्पातभयं तथा।

नाभिचारकृतैर्दोषैः लिप्यते स कदाचन ।। 9

यत्पुण्यं सर्वतीर्थानां गङ्गादिनां विशेषतः।

तत्पुण्यं कोटिगुणितं प्राप्नोति श्रवणादिह ।।10

दशानां राजसूयानां अग्निष्टोम शतस्य च ।

श्रवणात्फलमाप्नोति कोटिकोटि गुणोत्तरम् ।।11

अवध्यः सर्वदेवानां अन्येषां च विशेषतः ।

जीवेद्वर्षशतं साग्रं सर्वव्याधि विवर्जितः ।। 12

गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च ब्रह्महा गुरुतल्पगः।

शरणागतघाती च मित्रविश्रम्भघातकः ।। 13

दुष्टः पापसमाचारः पितृहा मातृहा तथा।

श्रवणादस्य भावेन मुच्यते सर्वपातकैः।। 14

शान्त्याऽध्यायमिदं पुण्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।

शिवभक्ते सदा देयं शिवेन कथितं पुरा ।। 15

नित्यं खचितचित्तः स्यच्छक्ति व्याघात वर्जितः ।

सर्वकाम समृद्धस्तु यः पठेत दिने दिने ।। 16

1. इस शान्तिकाध्याय को जो व्यक्ति पढ़ता है अथवा सुनता है, उसके सभी पाप इसके प्रभाव से धुल जाते हैं।
2. वह शिवलोक को प्राप्त होता है।
3. जिनको कन्या वांछित हो, उनको कन्या मिलती है,
4. विजय के इच्छुकों को विजय मिलती है।
5. धन की कामना रखने वालों को धन की प्राप्ति होती है।
6. पुत्र के इच्छुकों को बहुत से आदर्श पुत्रों की उपलब्धि होती है।
7. विद्यार्थियों को विद्या मिलती है,
8. योग के इच्छुकों को योग की सिद्धि होतो है।
9. गर्भिणियों को पुत्र प्राप्ति होती है।

10. कन्याओं को उत्तम पति मिलता है ,
11. जिस मानव की जो कामना हो, वह सब इसके नित्य सुनने से शीघ्र ही पूरी होती है। और वह देवताओं का प्रिय हो जाता है।
12. जो इस अध्याय को सुनता है, उसका पुण्य यह है कि यदि इसे सुनकर राजा समरांगण में प्रवेश करता है तो वह शत्रुओं को जीतकर कल्याण की पूर्ति करता है
13. और अक्षयकाल तक आनन्द करता है
14. उसका बिना किसी बाधा के अनन्तकाल तक शासन संचालित करता है।
15. उसे कोई व्याधि नहीं होती,
16. उसके पुत्र पौत्रों की प्रतिष्ठा बढ़ती है।
17. इस अध्याय को पढ़ने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है।
18. जो जिस उद्देश्य को लेकर इस अध्याय को पढ़ता है इसके श्रोता को वात, पित्तादि से होने वाले रोग कभी बाधक नहीं बनते।
19. पाठकर्ता का अकाल मरण नहीं होता,
20. उसे सर्प भी नहीं डसते हैं
21. न तो उसकी देह में विष फैलता है,
22. न ही आगजनी होती है।
23. उसे न बन्धत्व होता है और न ही मूकता होती है।
24. उसको सर्पों का भय नहीं रहता।
25. चोरों तस्करों के उत्पातों का भय भी नहीं रहता ।
26. उस पर अभिचार का दोष भी नहीं चलता,
27. वह कभी इसमें लिप्त नहीं होता है।
28. सब तीर्थों की प्राप्ति विशेषकर गंगा नर्मदा आदि नदी से जो पुण्य मिलता है, उससे करोड़ गुना पुण्य इस अध्याय को केवल सुनने से सुलभ होता है।
29. दस राजसूय और सौ अग्निष्टोम यज्ञों का फल बिल्ववृक्ष या महादेवालय के निकट केवल इसके एक बार श्रवण मात्र से मिलता है, वह फल भी करोड़ करोड़ गुना होकर प्राप्त होता है।
30. वह सभी देवताओं के लिए अवध्य हो जाता है तो अन्य क्या विशेष है।
31. वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है,
32. जीवनावधि में उसे कोई व्याधि नहीं होती।
33. अपने जीवन में गाय की हत्या करने वाला, कृतघ्न, ब्रह्महत्या करने वाला, गुरुपत्नीगमनकर्ता, शरणागत घातक, मित्र सहित विश्रामघातक, दुष्ट, पापी, पितृहत्यारा तथा मातृहत्यारा कोई भी क्यों न हो, इस अध्याय को भावपूर्वक सुनने से समस्त पापों से छूट जाता है।

34. इस शान्त्याध्याय का पुण्य किसी ऐसे वैसे को नहीं देना चाहिए बल्कि शिवभक्त को ही देना चाहिए, ऐसा भगवान् शिव ने पूर्व में कहा है।
35. नित्य एकाग्रचित्त होकर बिना कोई जोर लगाए अर्थात् सहजमन से युक्त होकर पढ़ा जाना चाहिए ।

इस प्रकार पाठ करने से दिन दिन समस्त कामों में समृद्धि होती जाती। पर ध्यान रहे रुद्राक्ष व भस्म का त्रिपुण्ड लगाकर ही श्रीशिव सेवा का फल मिलता है।

प्रश्न–

आपकी नास्तिकता दूर होने की

पहली कृपा क्या थी? और दूसरी घटना क्या थी ?

उत्तर– देवी रहस्य महाग्रंथ में अध्याय दो को देखें कृपया।

उसमें लिखा है कि हम किस प्रकार नास्तिकतावाद का प्रसार करते थे और कैसे सीहोर के एक देवी मंदिर पर बहस हुई तो उसी रात को देवी ने आस्तिक बना दिया। और एक होनहार मित्र की मृत्यु का प्रसंग भी बताया है (जो हमने एक चैनल के इन्टरव्यू के समय कहा था) जिसका सार था कि यार – हम भी कठिन और कठोर परिश्रम से 90þ ला सकते हैं और ग्वालियर की केमिस्ट्री में चार पांच बार 300 बच्चों के बीच फर्स्ट रैंक ला भी चुके हैं पर डिग्री मिलते ही हमारी आत्मा इस तन से निकल गई तो उस मेहनत से क्या होगा ?

अतः इस कारण बस दयालु शंकर जी को सरेंडर हो गए। हालांकि 9 पेपर पर भक्ति की अति ने बैक की मोहर लगा डाली थी और 5 रेगुलर (कुल 14) पर महादेव के वरदान से वरदान के कालखण्ड सेमेस्टर में ही सारे एक ही बार में निकल गए। और भी बहुत कुछ हम इस अध्याय दो में पढ़े। विस्तार से हम आपकी इच्छा होगी तो आत्मकथा पुस्तक में कम से कम 100–150 घटना लिखेंगे।

प्रश्न–

कुछ अक्षयफल दायक तिथि कहें?

उत्तर–(1) आश्विन शुक्ल पक्ष की नवमी (2) कार्तिक की द्वादशी

(3) चैत्र की तृतीया (4) भाद्रपद की तृतीया

(5) फाल्गुन की अमावस्या (6) पौष की एकादशी

(7) आषाढ़ की दसमी (8) माघ की सप्तमी

(9) श्रावण कृष्णा अष्टमी (10) आषाढ़ की पूर्णिमा

(11) कार्तिक पूर्णिमा (12) फाल्गुन पूर्णिमा

(13) चैत्र पूर्णिमा (14) ज्येष्ठ पूर्णिमा

....

प्रश्न – किसी का अन्न खाकर भजन पूजन से हमारे पुण्य भोजन खिलाने वाले के खाते में चले जाते हैं ऐसा शिव पुराण का कथन है क्या यह उचित है ?

उत्तर – प्रभु का कर्मफल विधान सत्य ही है। आप यदि पाप करते हो तो बेचारे खिलाने वाले को आपके उस दिन का उसका 50 पाप दण्ड भी भोगना पड़ता है। अर्थात
निश्चित ही आप खिलाओगे तो उनका 50प्रतिशत(पाप और पुण्य) आपको मिलेगा।
कटोत्तरी नहीं होती। इसी कारण आदर्श गृहस्थ या आदर्श ब्राह्मण कर्मकांड करके ही उसी अन्न से भोजन करता है और यदि कथा आदि भंडारे में वह खाये तो हर बार (भोजन के बाद) कम से कम 70–80 या 100₹ का दान उस कार्यक्रम में या उस परिवार के बच्चों को करके आये। इससे वह अन्न पुण्य नहीं लेगा।
पर हाँ संध्यापूत होने से पाप छू भी नहीं सकते पर द्विज कृपया ऐसे मनुष्य का भोजन न करे जो पापात्मक कमाई या रिश्वत का हो ऐसा अन्न मन और बुद्धि को मलिन कर पाप प्रवृत्यात्मक बना देता है। शास्त्र में तो राजा (जज या मंत्री) अथवा पदाधिकारी का अन्न भी न खाने की आज्ञा है क्योंकि उनके द्वारा कभी कभी किसी निर्दोष को भी दण्ड मिलता है तथा ऐसा मंत्री जो वेतन के अतिरिक्त शासन का धन हड़पता है उसके घर का अन्न खाकर बुद्धि मलिन होगी ही पदाधिकारी भी रिश्वत लेते नजर आते हैं।
जो शुद्ध है वे अति दुर्लभ हैं।

✍□✍□✍□✍□✍□✍□✍□✍□

प्रश्न

जो दिन रात धन का चिंतन करते रहता हैं या फिर यह सोचते है कि कोई उसे मुफ़्त में धन ला कर दे तो क्या उसकी दुर्दशा होती हैं। मूलतः जो लोभी हैं ।

उत्तर –

यदि वह आलसी है (कोई भी सेवा कार्य नहीं करता और घर बैठे बैठे मुफ्त का खाना चाहता है)तो पशु पक्षी की योनी को प्राप्त होगा ।
तथा यदि वह लोभी है पर परिश्रम भी करता है तो उसे पुनः मनुष्य योनी में जन्म मिलेगा।
धन का चिंतन कोई पाप की श्रेणी में नहीं आता पर यह राजसिक विचार कहलाता है जिससे वह न तो स्वर्ग का अधिकारी है न ही नरक का । बस पुनः मनुष्य योनी में इसे अवसर मिलता रहेगा।
और यदि यह सात्विक हो जाये और संतोषी तो स्वर्ग के लिए अधिकार प्राप्त कर लेगा। तथा

ईश्वर के लिए मीरा सा सरेंडर कर दे तो सदा के लिए ईश्वर का धाम पा लेगा। और सरेंडर न करे पर तुलसी बिल्वपत्र आदि से सेवा करे या मंदिर निर्माण करा दे या गाय संत व ब्राह्मण आदि की यथासंभव कुछ तन मन धन से सेवा करे तो कुछ कालखण्ड तक क्षीरसागर या वैकुण्ठ अथवा शिवलोक में विधान है। ऐसा सदा के लिए शिवलोक का अधिकारी नहीं। सदा के लिए इष्ट लोक के लिए तो उसे स्वयं ही जितेन्द्रिय तपोनिष्ठ और साधु जैसा होना होगा न कि मात्र उनकी औपचारिक सेवा।
(पुस्तक– आपके प्रश्न).

प्रश्न

साधुओं की सेवा करने से परम धाम मिलता है या स्वयं साधु बनने से ?

उत्तर–साधु बनने से,पर पहले ब्रह्मनिष्ठ साधुओं की सेवा व उनके महावाक्यों का पालन करना होगा।

कर्मकांड का फल किस यजमान को 1प्रतिशत भी नहीं मिलता

उत्तर –

1. जो ब्राह्मण को पर्याप्त दक्षिणा देने का वचन दे दे पर न दे। तो हर घड़ी उस धन का व्याज बड़ता है तथा पूजा पाठ का फल नहीं मिलता पर जो संध्यापूत न हो उसे कर्मकांड के लिए न चुनें यह पद्म पुराण और ब्रह्म वैवर्त पुराण में लिखा है।

2 . परायी नार का उपभोग करने वाला ब्राह्मण, संध्यापूत न हो वह , अग्निहोत्री न हो वह , गायत्री का एक पुरश्चरण न किया हो वह ब्राह्मण कर्मकांड के लिए अनुचित है। यदि तीन दिन भी संध्यापूत में अंतर कर दे तो उसे प्रायश्चित का विधान है।

वो अस्पृश्य व शूद्र के तुल्य हो जाता है ●

.किसका तेज अद्भुत है ?

उत्तर– ब्राह्मण काश्रेष्ठ द्विज उसे अपने यहाँ निमंत्रित न करे । वह दर्शन के अयोग्य है। यही पतितता है।

● 06.

143

शीघ्र ही पतन किसका होता है ?

उत्तर– जो पराये धन और पराई नार पर दृष्टि डालता है।

● 144.

शिव जी पर 30–35रुपये का दूध चढ़ाने से कौन मना करता है ?

उत्तर – जो महापापी हो तथा जो परायी नार से वासना की प्यास बुझाने के लिए होटल में एक रात के 1000₹ खर्च कर डालता है , पराई नार के ज़िस्म को देखने व भोगने या उसकी गंदगी चाटने के लिए दो घंटे के 2000₹ और शराब पर 500₹ पर उनका यह खर्च (3500₹) वे बसूलना भी चाहते हैं। अतः वे 35₹ रुपए का दूध 100 बार बचाना चाहते हैं और

पूजा पाठ में से ही पापी लोग धन बचाते है।

● प्रश्न 08 – गंगा जी परम पूज्यनीय कैसे हुई पर हम क्यों नहीं ? क्या गंगा जैसे हम कभी पवित्र नहीं हो सकती ?

उत्तर– गंगा भी पूर्व जन्म में ऋषिकुल्या नामक लड़की थी तथा द्रोपदी जो आज स्वर्ग की लक्ष्मी पद पर बैठी हैं वे भी पहले वेदवती थी, मनसा देवी ने भी पहले घोर तप किया है और इनका तप भी शास्त्रों में वर्णित है। अतः आप भी शम दम साधन चतुष्टय संपन्न हो जाईये अगले मन्वन्तर में आपको देवी बनाकर प्रतिष्ठित कर दिया जायेगा।

2 करोड़ शिवाय नमः से कोई भी युवती लक्ष्मी स्वरूप हो जाती है। या एक करोड़ मल्लिका पुष्प से लक्ष्मी स्वरूप।

●●

145 शीघ्र निष्पाप कैसे होते हैं?

उत्तर – परम ब्रह्मनिष्ठ के चरणोदक से।

शिव अथर्वशिर उपनिषद से

देवी अथर्वशीर्ष से।

पापप्रशमन स्तोत्र से

पापनष्ट का उपाय व्यपोहन स्तोत्र से

रोग दूर कैसे हों?

लोमश कृत मृत्युञ्जय स्तोत्र के 100 पाठ

147.दीर्घकालीन जीवन के लिए क्या करें?

उत्तर – मृतसंजीवन या श्रीभैरव कृत महामृत्युञ्जय कवच के 1000 पाठ।

तथा आठ चिरंजीवियों की नित्य मानसिक पूजन के बाद उनके नाम का सुमिरन करें।

प्रश्न 148

जो दिन रात धन का चिंतन करते रहता हैं या फिर यह सोचते है कि कोई उसे मुफ़्त में धन ला कर दे तो क्या उसकी दुर्दशा होती हैं।मूलतः जो लोभी हैं ।

उत्तर –

यदि वह आलसी है (कोई भी सेवा कार्य नहीं करता और घर बैठे बैठे मुफ्त का खाना चाहता है)तो पशु पक्षी की योनी को प्राप्त होगा ।

तथा यदि वह लोभी है पर परिश्रम भी करता है तो उसे पुनः मनुष्य योनी में जन्म मिलेगा।

धन का चिंतन कोई पाप की श्रेणी में नहीं आता पर यह राजसिक विचार कहलाता है जिससे वह न तो स्वर्ग का अधिकारी है न ही नरक का । बस पुनः मनुष्य योनी में इसे अवसर मिलता रहेगा।

और यदि यह सात्विक हो जाये और संतोषी तो स्वर्ग के लिए अधिकार प्राप्त कर लेगा। तथा ईश्वर के लिए मीरा सा सरेंडर कर दे तो सदा के लिए ईश्वर का धाम पा लेगा। और सरेंडर न करे पर तुलसी बिल्वपत्र आदि से सेवा करे या मंदिर निर्माण करा दे या गाय संत व ब्राह्मण आदि की यथासंभव कुछ तन मन धन से सेवा करे तो कुछ कालखण्ड तक क्षीरसागर या वैकुण्ठ अथवा शिवलोक में विधान है। ऐसा सदा के लिए शिवलोक का अधिकारी नहीं। सदा के लिए इष्ट लोक के लिए तो उसे स्वयं ही जितेन्द्रिय तपोनिष्ठ और साधु जैसा होना

होगा न कि मात्र उनकी औपचारिक सेवा।

प्रश्न 141 – कौन सेवनीय और पूजनीय है तथा दान किसको दें तो महा कल्याण हो।

उत्तर–

धर्मपरायण, वेदपाठी व संध्यापूत इन तीन गुणों से संपन्न ब्राह्मण, तपोनिष्ठ (जितेन्द्रिय अर्थात ब्राह्म या बृहत् ब्रह्मचारी) या ज्ञानयोगी (अपरोक्ष ज्ञान से संपन्न) ये तीनों ही शिव पुराण के अनुसार सेवनीय और पूजनीय हैं।

पर पुत्र अपने पिता का सदा सम्मान करे वह पिता यदि अनुचित या अधर्म युक्त आज्ञा दे तो न मानें फिर भले ही बद्दुआ मिल जाये । और गुरु भी अनुचित आज्ञा दे तो न मानें वह गुरु अति दुष्टता करे तो छोड़कर अन्य के पास चलते बनें। राजा बलि ने भी अपने गुरु की अनुचित आज्ञा नहीं मानी। ऐसे ही तम्बाकू चरकर मंत्र पाठ करने वाला ; बात बात पर गाली देने वाला और संध्याहीन ब्राह्मण नमन के योग्य नहीं। पर संध्यापूत जितेन्द्रिय ब्राह्मण का चरणोदक भी आपके कोटी कोटी जन्मों के पाप नष्ट कर डालेगा। यह भी सच है। और सौभाग्य से यदि अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभावी के दर्शन हो जायें तो उसके दर्शन मात्र से शिव दर्शन का फल मिल जाता है और उस ब्रह्मविद् को मात्र अन्न का एक दाना देने से भी (वह उस अन्न या भोजन का एक ग्रास भी खा ले तो) आपकी तीन पीढ़ियों का उद्धार हो जायेगा । यह हमने अपनी पुस्तक ग्रंथ रहस्य में भी बताया था और उस पुराण का नाम भी जिसमें यह सब कुछ लिखा है पर समयाभाव के कारण उस अध्याय को अभी न देख पाने से पुराण का नाम याद नहीं पर सार ही सत्य है जो हमने बता दिया। और एक बात ब्रह्म से एकरूप तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ को भोजन खिलाने से करोड़ो ब्राह्मणों को सविधि भोजन कराने के समान फल प्राप्त होता है यह भगवान शिव जी ने श्रीराम जी से शिव गीता में कहा है अतः जितेन्द्रिय ब्राह्मण या ब्रह्मनिष्ठ संत दोनों में से एक भी मिल जाये तो यह आपका सौभाग्य समझो।

इनका मिलना भी सौभाग्य है और मिल जाये तो सेवा करना परम सौभाग्य।

प्रश्न– जो पिता अपनी कन्या का विवाह उचित वर के साथ नहीं करता उसकी क्या गति होती है?

उत्तर– : जो व्यक्ति अपनी कन्या का विवाह जल्दबाजी में या बिना सोचे समझे अथवा अपनी पुत्री को बोझ समझकर या अन्य कारण से नास्तिक, अज्ञानी, रोगी, गुणहीन, दरिद्र, मूर्ख, कुरूप, क्रोधी या अंगहीन या नपुंसक से कर देता है उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। अतः प्रत्येक पिता का कर्त्तव्य है कि वह अपनी पुत्री का विवाह शांत, गुणी, नवयुवक, विद्वान तथा साधु स्वभाव वाले या अनन्य भक्त वर से ही करे परंतु स्मरण रहे यदि पिता ने अपनी पुत्री में संस्कार भक्ति आदि उत्तम गुणों का समावेश नहीं किया और उस कारण दामाद की भक्ति या अन्य क्रिया में विघ्न बाधा उपस्थित होती है तो भी उस पिता को घोर नरकों में भयंकर तीव्र वेदना का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न– सुखी कौन होता है?

समाधान : मुझ प्रभु की पूजा करके नैवेद्य को मुझे अर्पित कर प्रसाद रूप को बांटकर फिर बचे हुए प्रसाद को जो स्वीकार करता है वह शीघ्र ही सुखी हो जाता है। जो शुभ कर्मों को करके उसका श्रेय गुरूदेव (मेरे अनन्य स्वरूप) या मेरे अनन्य भक्तों को देते हैं, परायी नारी को नहीं देखते, ऋतुकाल को छोड़कर (ऋतुकाल में भी विशेष तिथि देखें) अन्य तिथियों में भी संयम से रहते है एवं दूषित अहंकार नहीं करते तथा जो महत्त्वाकांक्षी नहीं होते एवं माता–पिता, गुरू सेवा या सत्संग, स्वाध्याय स्तोत्रादि से पूर्णतः निष्पाप हो जाते है, वे कभी दुःखी नहीं होते।

प्रश्न– शीघ्र कामनापूर्ति हेतु उपाय बताइए?

समाधान : 1. नित्य 1008 बार एक ही मंत्र को 40 दिन तक या 3300 मंत्र 40 दिन अर्थात् सवा लाख मंत्र का महाअनुष्ठान या केवल 9 दिन नवदुर्गाओं के समय में नियम, संयम पूर्वक अनुष्ठान करने से शीघ्र कामना की पूर्ति होती है।

2. श्रीलक्ष्मी माला धारण कर इंटरव्यू देने से सफलता की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है।

3. मलमास में वासुदेव–द्वादश–अक्षरी मंत्र **(ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय)** का अनुष्ठान शीघ्र ही मनोकामना पूर्ण करता हैपरंतु कनिष्ट वर्ग के अभक्त लोग मात्र ''नमो भगवते वासुदेवाय'' ही जपे। यह मलमास अर्थात् अधिक मास हमेशा 32 माह, 16दिन, 3 घंटे, 12 मिनिट बाद आता है। यह मास शुक्ल पक्ष से आरंभ होकर कृष्ण पक्ष तक रहता है।

4. **परम धनवान हेतु**—सात मुखी रुद्राक्ष मंत्रपूर्वक धारण मात्र से व्यक्ति सुखी होकर परम धनवान हो जाता है।

5. जो कोई भी दीक्षित शिष्य श्री गुरुगीता जी को शिवरात्री, नवरात्री, जन्माष्टमी या गुरुपूर्णिमा को पश्चिम दिशा की ओर मुख करके भोजपत्र पर अष्टगंध या चंदन की स्याही से लिखकर नित्य मात्र मानसिक रूप से भी पूजा करता है वह **1 वर्ष में ही श्री संपन्न** हो जाता है; परंतु हर वर्ष सदगुरु के चरणो में मथ्था अवश्य टेके।

6. **दीर्घायु संतान हेतु**—तुलसी कवच के त्रिकाल पाठ से भयंकर पापी या बांझ स्त्री भी निष्पाप

होकर 12 माह के अंदर गुणवान, बुद्धिमान, कीर्तिवान एवं दीर्घायु संतान प्राप्त करती है। जिज्ञासा 4 में और भी उपाय है, जो अपना सके वह श्रद्धापूर्वक स्वीकार करे।

प्रश्न— मैं कुबेर का धन पाना चाहता हूँ क्या करूं?

:

(1) जो श्री गणेश अथर्वशीर्ष को सूर्यग्रहण के समय में सिद्ध करके 1000 बार भाद्रपद की गणेश चतुर्थी पर व्रतमय होकर अनुष्ठानपूर्वक 1000 दूर्वाओं को गौरीपुत्र को चढ़ाता है या एकादशी को अग्नि नहीं जलाता एवं उपवास कर द्वादशी को अनन्य भक्त, ज्ञाननिष्ठ या प्रभु को कर्मफल अर्पण करता हुआ मधुर भोजन अर्पित करता है वह कुबेर का धन शीघ्र ही पा लेता है।

प्रश्न—दामोदर अनुष्ठान महानतर महिमा :

जो बिना अन्य प्रयत्न के करोड़ों का स्वामी बनना चाहता है उसे स्कंदपुराणानुसार मात्र एक अनुष्ठान करना है और वह अनुष्ठान है श्री दामोदर महामंत्र (श्री दामोदराय नमः) का साढ़े तीन लाख मंत्र जाप का महान अनुष्ठान।

(3) **जे सकाम नर सुनहि जे गावहि।**

सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि।।

3300 मंत्र 40 दिनों या केवल 9 दिन नवदुर्गाओं के समय में या दिव्य अनुकंपा हेतु 6 माह तक मंदिर में बैठकर अथवा इस दोहे को संपुटित बनाकर राम चरित मानस युक्त नियम, संयम पूर्वक अनुष्ठान करने से व्यक्ति सुखी होकर परम सम्पत्तिशाली हो जाता है।

(4) अष्टसिद्धि—नवनिधियाँ प्राप्त करने हेतु :

सवा लाख मंत्र का महाअनुष्ठान 40 दिनों में **ब्रह्मचर्य पूर्वक** निश्चित दिशा, निश्चित समय, निश्चित मंत्र संख्या ,निश्चित आसन, बिना लवण प्रयोग के श्रीगुरु एवं श्रीगणेश की मानसिक पूजा'गन्ध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य—प्रसाद अर्पित कर जपे।

गुरुसन्तोषणादेव मुक्तो भवति पार्वती।

अणिमादिषु भोक्तृत्वं कृपया देवि जायते।।

(5) मनचाही कामना पूर्ति के लिए :

सवा लाख मंत्र का अनुष्ठान 40 दिनों में ब्रह्मचर्य पूर्वक निश्चित दिशा, निश्चित समय, निश्चित मंत्र संख्या ,निश्चित आसन, बिना नमक प्रयोग के श्रीगुरु एवं श्रीगणेश की मानसिक पूजा'गन्ध, पुष्प, धूप, दीप एवं प्रसाद अर्पित कर जपे।

सर्वपापप्रशमनं धर्मकामार्थमोक्षदम्।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।

बिन्दु 14 में अचल लक्ष्मी का श्री राम दूत संबंधी उपाय निहित है।

प्रश्न– सुना है कि ऋद्धि–सिद्धि जी के स्वामी श्री गणेश जी (विघ्नहर्ता) को जो भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को प्रसन्न कर लेता है वह संपूर्ण धन, यश एवं पदादि से संपन्न हो जाता है। कृपया उन्हें शीघ्र प्रसन्न करने का कोई दिव्य रहस्य बताइए?

समाधान : सच ही है कि जो ऋद्धि–सिद्धि जी के स्वामी श्री गणेश जी (विघ्नहर्ता) को भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को प्रसन्न कर लेता है वह संपूर्ण धन, यश एवं पदादि से संपन्न हो जाता है उनको शीघ्र प्रसन्न करने का सर्वोपरि दिव्य रहस्य है **विघ्न विनाशक गणेश कवच।** यह कवच श्री गणेश जी को परम प्रिय है इसके जप, श्रवण या लेखन कर धारण मात्र से दसों दिशाओं में रक्षा होती है एवं उस श्रीवक्रतुण्ड भक्त का कोई भी कुछ भी अनिष्ट नही कर सकता। इसके कई प्रयोग है जैसे–

जेल के बंधन से छूटने हेतु :

श्री गणेश जी को दूर्वा एवं स्वयं के द्वारा बने शुद्ध मोदक चढ़ाकर 21 दिन तक नित्य 21 पाठ। अन्य भी किसी के लिए यह जाप कर सकता है।

प्रश्न– क्षण की क्रिया से 10 हजार गाय का पुण्य फल कैसे प्राप्त होता है?

समाधान : श्रीमद्देवी भागवत में माँ भुवनेश्वरी की स्वरूपा (तुलसी माँ) की अद्भुत महिमा है इसमें बताया है कि जो कार्तिक मास में श्रीहरि को 1 तुलसी का पत्ता भी अर्पित करता है वह मात्र इसी उपाय से 10 हजार गायों के दान का पुण्य प्राप्त कर लेता है तथा साथ में हजारों घड़े अमृत कलश से प्रभु को स्नान कराने का जितना फल प्राप्त होता है वह भी प्राप्त कर लेता है परंतु कुछ तिथियों (द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य सक्रांति) एवं दोपहर, शाम, रात्रि, प्रातः का संध्याकाल अशौच के समय, बिना स्नान के एवं तेल लगाकर तुलसी नहीं तोड़ना चाहिए। जो मूर्ख व्यक्ति तेल लगाकर तुलसी पत्र तोड़ता है वह तुलसी पत्र न तोड़कर

हरि की गर्दन काटता है तथा नरक में जाता है अतः कोई भी पूजा यदि शास्त्रोक्त विधि से या निष्काम भाव से या मानसिक रूप से की जाये तो ही उत्तम है एवं श्रीहरि के 28 नाम से तो हजारों गायों के दान का पुण्य प्राप्त होता ही है।

प्रश्न— शनि पीड़ा दूर हेतु क्या करे?

समाधान : प्रभु पिप्पलाद (रूद्रावतार) जी ने शनैश्चर की पीड़ा को दूर करने हेतु वरदान दिया है कि जो भी कोई शिव भक्त होगा (या 16 वर्ष तक की आयु का होगा) उसे कभी भी शनि की पीड़ा नहीं हो सकती। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि शनि देव साक्षात् शिवजी के शिष्य हैं और शिष्य को सर्वाधिक प्रिय अपने गुरूदेव की स्तुति ही होती है अन्य नहीं। अतः आप चाहे प्रभु के किसी भी रूप के भक्त हो परंतु प्रत्येक अष्टमी एवं सोमवार को इष्ट (शक्ति, हरि, कृष्ण, राधा या अन्य रूप) की खुशी हेतु एक बार शिवलिंग पर जल अवश्य चढाएं या गुरूतत्त्व की कृपा हेतु नित्य श्री गुरू गीता जी का जाप करें।

प्रश्न— ब्राह्मण के 8 भेद क्या है ?

समाधान : (1) मात्र (2) ब्राह्मण (3) श्रोत्रिय (4) अनुचान (5) भ्रूण (6) ऋषिकल्प (7) ऋषि (8) मुनि।

यह श्रुति में वर्णित 8 प्रकार के ब्राह्मण समझने योग्य हैं। इनमें विद्या और सदाचार की दृष्टि से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ है। सर्वश्रेष्ठ मुनि पद धारी हैं विस्तार से देखे।

(1) मात्र ब्राह्मण, जो जन्म मात्र से ब्राह्मण कुल का है परंतु वेदपाठी नहीं है, गायत्री द्वारा त्रिकाल संध्या नहीं करता, उपनयन संस्कार से विहीन है वह नाम मात्र का होने से मात्र कहा जाता है।

(2) ब्राह्मण जो जाति से युक्त होकर सत्यवादी एवं दयालु है वह इस वर्ग के अंतर्गत आता है।

(3) वेद की किसी एक शाखा का जानकर और ब्राह्मणोचित 6 कर्मों में संलग्न

(4) 4 वेदों और वेदांगों का तत्त्वज्ञ, पापरहित, शुद्ध चित्त, श्रेष्ठ, श्रोत्रिय विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला अनुचान ब्राह्मण है।

(5) जो अनुचान के गुणों से युक्त होने पर घर में ही रहकर यज्ञ और स्वाध्याय (परम तत्त्व की जिज्ञासा वश) में स्थित है वह भ्रूण ब्राह्मण है।

(6) जो संपूर्ण ज्ञान पाकर आश्रम में निवास करता हो वह ऋषिकल्प है सत्य ही है। अधिक का फल अधिक ही है। घर में रहकर ब्रह्मज्ञान में स्थिति का अलग फल है। गुरू आश्रम में रहकर व ब्रह्मज्ञानी गुरू (दीक्षागुरू) की सेवा के साथ आश्रम में रहकर सेवा अलग बात है।

(7) **जो नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो, गुरू आश्रमी हो**, शाप और अनुग्रह में समर्थ हो, वेदों का ज्ञानी हो, भोजन नियमित करता हो, सत्यनिष्ठ हो **वह ऋषि नामक ब्राह्मण कहा जाता है।** परंतु स्मरण रहे गुरूगीता जी में

ऋषियों ने भी सूत जी से (जातिगत विलोमज परंतु ब्रह्मज्ञानी) प्रार्थना की है कि हमें कृपया गुरू रूपी ब्रह्म विद्या का विज्ञान प्रदान करो। अतः कहा जा सकता है कि नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से युक्त, शाप और अनुग्रह से समर्थ, सत्यनिष्ठ से भी वह अद्वैत वादी श्रेष्ठ है जो गुरू विद्या (गुरू में साक्षात् ब्रह्म रूपी सदाशिव विद्या या परमेष्ठी शिव विद्या का पालन कर सेवा मात्र उन्हीं में द्वैत बुद्धि से सेवा करने वाला आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी ऊँ कार रूपी सर्वमयता का जानकर) को जानता है और अभेद दृष्टा या अभिन्न भावी ब्रह्मभावी होने से ब्रह्मदाता है।

(8) जो गुरूमार्गी, **अद्वैतवादी होने के साथ निवृत्ति मार्गी** (नैष्ठिक ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, ब्रह्ममय मात्र) है। संपूर्ण तत्त्वों का ज्ञाता है मिट्टी और स्वर्ण को समान समझने वाला, कर्मफल त्यागी है वह महा मुनिपद धारी है।

प्रश्न–

शीतल जल दान का क्या फल है?

समाधान : जो प्यास से पीड़ित महात्मा पुरूष के लिए शीतल जल दान करता है वह इसी से 10 हजार राजसूय यज्ञों का फल पा लेता है एवं वैशाख मास मे जो चरण पादुका (ज्ञाननिष्ठ, सद्गुरू, ब्रह्मवेत्ता, मुनि, ऋषि, भक्त या योग्य ब्राह्मण को) दान करते हैं वह यमदूतों का तिरस्कार करके विष्णुलोक में जाते हैं।

प्रश्न जाति से श्रेष्ठ ब्राह्मण भी यदि दुराचारी हो, अजितेन्द्रिय हो तथा दयालुता से रहित, गुरू निन्दक हो तो उसको दान करना चाहिए या नहीं?

समाधान : जाति से श्रेष्ठ ब्राह्मण भी यदि दुराचारी हो, अजितेन्द्रिय हो तथा दयालुता से रहित, गुरू निन्दक हो तो उसको दान कभी नहीं करना चाहिए। इसका कोई फल नहीं मिलता। अपितु उस ब्राह्मण को दिया यह दान उसी को नष्ट करता है अतः ऐसा ब्राह्मण दान न ले यदि ऐसा ब्राह्मण–

(अ) भूमि लेता है तो उसका अंतःकरण नष्ट होता है।

(आ) गाय...............उसके भोगों की वस्तु नष्ट होती है।

(इ) स्वर्ण...............उसके शरीर का नाश करता है।

(ई) घोड़ा................उसके नेत्र का नाश करता है।

(उ) वस्त्र लेता है तो उसकी स्त्री का नाश होता है।

(ऊ) घी..........उसके तेज का नाश करता है।

(अं) तिल............उसकी सन्तान का नाश करता है।

मूर्ख और पापी ब्राह्मण थोड़ा भी दान लेकर कीचड़ में फंसी गाय की भांति कष्ट पाता है। इसी कारण शिवपुराण में कहा है कि ज्ञाननिष्ठ तथा तपोनिष्ठ या भक्त व्यक्ति (जो कि परम विप्र कहा जाता है) सदा ही पूजा एवं सेवा का परम पात्र है परंतु जातिगत ब्राह्मण को यदि भक्ति, तपोनिष्ठता, पराविद्या

(गुरूविद्या) या अद्वैत ज्ञाननिष्ठता प्राप्त नहीं हुई या त्रिकाल संध्या से रहित होकर 24 लाख गायत्री से भी रहित हो तो भी वह अपात्र ही है।

इस कारण हे अर्जुन! मैं नारद देश–देश घूमकर ब्राह्मणों की परीक्षा करता हूँ यदि वे मेरे प्रश्नों का सटीक उत्तर देते हैं तो ही पात्र समझकर दान करता हूँ अन्यथा छोड़ देता हूँ।

प्रश्न–प्रभु वास्तव में क्या कहना चाहते है?

समाधान : श्री हरि–हे अर्जुन! (अर्थात् हे नर!) मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा। इसके उपरान्त तू मुझमें ही निवास करेगा; इसमें कुछ भी संशय नहीं है। (12/8 गीता)

प्रश्न– मैं चाहता हूँ कि मेरे घर में साक्षात् प्रभु रहें परंतु तपस्या व्रतादि नहीं होते क्या करूं?

समाधान : साक्षात् श्री हरि जी ने कहा है कि–'जो अपने घर में सुंदर अक्षरों में श्रीमद् भागवत के मात्र एक श्लोक को लिखकर मात्र प्रणाम करता है। मैं सदा के लिए उस घर में प्रवेश कर जाता हूँ अतः चिन्ता न करो केवल स्नान कर लाल कलम चलाने की देर है और बस प्रभु आपके घर में....परंतु स्मरण रहे उस घर में मांस, मदिरापान या अन्य पापकर्म नहीं होना चाहिए अन्यथा........,समझ लेना।

प्रश्न– मैं सदा पापों से निर्लिप्त रहना चाहता हूँ क्या करूं?

समाधान : जो वैशाख या कार्तिक के मास के अंतिम तीन दिनो में गीता जी के संपूर्ण 700 श्लोकों का श्रवण या स्वाध्याय करता है वह शाब्दिक, मानसिक एवं छोटे मोटे पापों से कभी भी लिप्त नहीं होता ।

14 इंद्र बनने का सरलतम उपाय क्या है?

समाधान : किसी को यदि इंद्र पद चाहिए तो 100 अश्वमेध यज्ञ करने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि प्रभु ने पुराणों में एवं धर्म शास्त्रों में ऐसे–ऐसे उपाय बताए हैं जिनको करके कोई भी बिना करोड़ों धन खर्च किए देवताओं का स्वामी इंद्र (वर्तमान पुरन्दर की भांति) बन सकता है। उन उपायों में 2 उपाय निम्नलिखित हैं।

(अ) गीता (श्रीमद्भागवत) जी के 18वें अध्याय के मात्र 5 श्लोक (नित्य पाठ) से कोई भी सकामी व्यक्ति मृत्युपरांत स्वर्ग में भोग्यकाल के बाद पुरन्दर इन्द्र की आयु पूर्ण होने के बाद एवं राजा बलि (भावी इन्द्र) का समय पूर्ण होने के बाद इन्द्र पद पर बैठ सकता है क्योंकि मात्र 5 श्लोकों का प्रतिदिन पाठ 100 अश्वमेध यज्ञों से भी अधिक फल देता है। गीता माहात्म्य के अनुसार (18वें अध्याय के अंतर्गत) भूतकाल में इस उपाय से एक भक्त इंद्र बन भी चुका। आगे और भी सकामी बनते रहेंगे।

(आ) जहाँ श्रीमद्भागवत महापुराण विराजमान होती है वहाँ तक पहुँचने में यदि 100 कदम पूर्ण हो जाते हैं तो भी 100 अश्वमेध यज्ञों का फल तत्क्षण प्राप्त हो जाता है। कहने का तात्पर्य है कि श्रीमद्भागवत महापुराण के समीप जाने हेतु प्रत्येक पग पर 1–1 अश्वमेध यज्ञ का पुण्य साधक को प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न– क्या जप, स्वाध्याय आदि का कोटि गुना फल घर पर भी प्राप्त किया जा सकता है?

उत्तर : नहीं; क्योंकि जप, स्वाध्याय पूजा आदि के फल स्थान, माला, समय और दिशादि पर निर्भर करते है, मात्र घर पर नहीं।

यज्ञ, पूजा, जाप, स्वाध्याय, दान, तपादि हेतु–घर में 1 गुना फल, गौ शाला (या जहाँ गाय बंधी हो) का 10 गुना फल, जलाशय (तालाब) का तट 100 गुना फल जहाँ बिल्व, तुलसी या पीपल वृक्ष का मूल हो वह स्थान 1000 गुना, देवालय (मंदिर) 10 हजार गुना, तीर्थ भूमि का तट जहाँ भले नदी न हो 1 लाख गुना, नदी का किनारा 10 लाख गुना, तीर्थ नदी का फल (गंगा जैसे पवित्र न हो फिर भी) 1 करोड़ गुना और सप्त गंगा नामक नदियों (गंगा, गोदावरी, कावेरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू और नर्मदा) का तीर्थ 10 करोड़ गुना फलदायी है। ब्रह्मज्ञानी सद्गुरू के समीप से अनंत गुना (अक्षय फल) फल प्राप्त होता है।

अर्थात् घर पर ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः या ऊँ नमः शिवाय जपने पर, पूजा करने पर 1 गुना फल प्राप्त होगा परंतु गंगा नदी के किनारे (हरिद्वार में, या नासिक में, इलाहाबाद या काशी जहाँ सप्त गंगा में से एक गंगा है।) वही प्रक्रिया की जाए तो 10 करोड़ बार ऊँ नमः शिवाय का फल प्राप्त होता है। मकर संक्रांति, चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण के समय पर सैकड़ों, लाखों गुना फल (उपर्युक्त गणना की तुलना में) यथा स्थानों के प्रतिशत अनुसार बढ़ जाता है। जन्म नक्षत्र के दिन भी सूर्यग्रहण के सदृश फल प्राप्त होता है।

प्रश्न– साक्षात् श्री राम सा एवं शिव सा पुत्र पाने हेतु क्या उपाय है ?

समाधान : मार्गशीर्ष के महीने में कन्द, मूल, फल मय उपवास करे एवं शुद्ध जल के भीतर खड़ा होकर एक लाख **रां रामाय नमः** जपे एवं अग्नि में खीर की आहुति दे तो साक्षात् श्री राम सा पुत्र पाकर श्री दशरथ जी जैसा पावन हो जाता है। शिवपुराण एवं स्कंद पुराण काशीखण्ड में वर्णित "**अभिलाषाष्टक नामक** पवित्र अद्वैतमय स्तोत्र" को तीनों समय लगातार एक वर्ष तक स्वाध्याय/जप करने मात्र से शिव सा सर्वोत्तम पुत्र रत्न प्राप्त होता है जो अनन्य भक्त एवं **परम अद्वैत ज्ञाननिष्ठ होकर सर्वज्ञ हो जाता है।**

वास्तव में अध्यात्म ही एक मात्र कल्याणकर्ता, सभी आशाओं एवं कामनाओं को पूर्ण करने वाला है और अंत में अनासक्ति रूपी सिद्धि देकर कैवल्या दाता भी है।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

जगत में नही है कोई किसी का,

दारा सुत के फेरे में

दुनिया पूरी धोखा खायी।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

एक पल के भी चिन्तन ने,

चिता में ही चिन्ता जलायी।

दिव्य महिमा नटवर की,

और मेरे प्रियवर की,

आत्मा दुल्हन सी सजाई।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

सर्वमय अद्वैत पाकर भी,

द्वैतमय गुरुता पायी।

होकर सर्वज्ञ सोऽहं से,

अहम् ब्रह्मास्मि निजता से,

भूली शक्ति पुनः ही पायी।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

कृष्ण कान्हा बनकर शम्भु,

विश्रान्ति हेतु गीता बनायी,

हे शिव भोले करो सहाई ।

आशुतोष की अनन्त दया से,

अखियाँ मेरी भर–भर आयी।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

अभिन्न तत्त्व से राधा होकर,

हृदय–वेदना विरहता पायी।

दिल में काहे आग लगायी,

कर्ण प्यारे भी सकुचित से,

अभी भी क्यों न मुरली बजाई।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

अंशभूत शिव नित्य पुकारता ,

अपरोक्ष ज्ञान से प्रभुता पाई।

क्षणिक–सुख–सौन्दर्य में क्या रखा है,

जीव तू करले शिव–सगाई ,

माया करेगी क्या भलाई।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

जीवन शैली महान बनायी।

प्रश्न–ऋतुकाल–नियम क्या है?

समाधान : यह गृहस्थ को स्वर्ग अथवा नरक में डालने वाला 16 दिवस युक्त रात्रि का काल है, जिसमें आरम्भ के ऋतुचक्र के 4 दिनों का समय स्त्री–संसर्ग हेतु वर्जित है। इस चौथी अशुद्ध रात्रि में भी सहवास करने वाले का पुत्र 25 वर्ष से अधिक जिन्दा नहीं रहता; क्योंकि नारी की इस भयंकर अशुद्धावस्था में ब्रह्महत्या रहती है। ऋतुचक्र के आरंभ की तिथि से छटवीं, आठवीं, 10,12,14 एवं सोलहवीं रात्रि के पत्नि

संसर्ग से (परंतु रेवती, मूल, आश्लेषा, तथा मघा नक्षत्र न हो एवं निर्वस्त्रयुक्त क्रिया न हो) सदैव बेटे का ही जन्म होता है तथा अयुग्म रात्रि 5वीं, 7,9,11,13,15वीं रात्रि के सहवास से बिटिया का जन्म होता है, परंतु यह सभी अयुग्म रात्रि सुलक्षणा कन्या नहीं देती अपितु 7वीं रात से जो पुत्री होती है वह तो भविष्य में कभी माता भी नहीं बन सकती, 11वीं रात के संभोग से विकलांग पुत्री पैदा होकर दुख देती हैं अतः इस रात को प्रजा/संतान के विषय में भूलकर भी न सोचे और जीवन का परम लक्ष्य शिव, हरि या पराशक्ति की भक्ति में मन लगाये, अन्यथा वह आपको ही भयंकर तनाव देगी) या व्यर्थ क्षणिक सुखों की क्रियाएं छोड़कर मदालसा जी के अनुसार एवं गीता 18/66 सारानुसार मात्र अनन्यभक्ति ही करे तो परम बेहतर होगा।

इन 16 दिनों "इनमें भी चार दिन ऋतुचक्र को त्याग दे" के अतिरिक्त शेष 12 दिनों में व्यक्ति भूलकर भी परायी तो क्या अपनी पत्नि के नाशवान शरीर को भी वासना की दृष्टि से न देखे क्योंकि शेष 12 दिनों में नारी संसर्ग से नरक की प्राप्ति होती है। पर्व, नवदुर्गा, शिवरात्रि, होली, दीपावली, कान्हा जयंती तथा संध्याकाल में, सुबह एवं तीर्थो के स्थान में भी संयम से रहे। कल्याण का महामन्त्र यही है। यही है। यही है। –मार्कण्डेय पुराण

वर्ष भर ऐसा ही होगा परंतु कैसा होगा?

समाधान : कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (वैष्णवी) अर्थात् दीपावली के अगले दिन अर्थात् गोवर्धन पूजा के दिन में मनुष्य जिस रूप या स्थिति में होता है वर्ष भर उसी के अनुसार रमण करता है अर्थात् आज की घटना के समान ही अगले वर्ष तक की घटनाएं घटती हैं। अतः इस दिन पाप न करें, अन्यथा अगली गोवर्धन पूजा तक पापात्मक क्रियाएं ही होती रहेंगी। गो का दूध दुहने का काम भी न करे। पशुओं पर बोझ न ढोएं (एकादशी को भी यह कार्य न करे) स्वाध्याय करे।

स्तोत्र या कवच का पाठ करे। गणेश जी का एक पाठ अवश्य करे। गो, गंगा तथा गुरू सेवा करें।

●●●●●●●

सार–

1.अनाज अर्थात धान्य से शिवलिंग पूजा का फल – शिव चरित मानस भाग प्रथम पृष्ठ 472

2. दुर्गा अष्टभुजी के आठ आयुध (दुर्गा 32 नाम माहात्म्य के अंतर्गत; गदा, खड्ग, त्रिशूल, वाण, धनुष, कमल, ढाल(खेट) तथा मुद्गर

3. आंवला माहात्म्य– पद्मपुराण 214 पेज (ग्राह्म और निषेध तिथि भी)

4. अवधूत उपनिषद (यथार्थ पराविज्ञान; 108 उपनिषद नामक पुस्तक में)

5. अपराध नाशक दुर्गा देवी की स्तुति– 7//28//22–26

6. अवतार कब कब हुये – पद्‌मपुराण 959 (राम लक्ष्मण आदि)

7. अखाड़ा जानकरी 81 पृष्ठ डायरी

8. अभिषेक के लिए उत्तम 11 श्लोकी स्तोत्र, शिव चरित मानस भाग प्रथम अध्याय 30 तथा

171 तथा 475 पेज शिव चरित मानस

9. अरुन्धति कथा (पति की रक्षा व सौभाग्य के वर हेतु) – 246 पेज शिव चरित मानस भाग प्रथम (इनका शिवमयी तप भी)

10. अद्वैत तत्त्व– ब्रह्म विद्या उपनिषद तथा गरुड पुराण आचार काण्ड अध्याय 235–240 में उत्तम

11. अवंतिका माहात्म्य– शिव चरित मानस भाग प्रथम 409 पेज

12.अनुष्ठान पंचाक्षरी का – नियम शिव पुराण विद्येश्वर संहिता 125 पेज , माघ और भाद्रपद मास में विशेष फल, शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष की चौदस तक

13. आस्तिक मुनि की कथा – श्रीमद्देवीभागवत महापुराण 590 पेज

14. आषाढ़ माह की संक्रांति पर देवी मनसा को पूजने का अद्वितीय माहात्म्य 9/48/131; पृष्ठ 593 भाग द्वितीय श्रीमद्देवीभागवत ।

15. अभिषेक के लिए मात्रा अग्नि पुराण 195 पेज

इतने घी से शिव अभिषेक करने पर देवत्व प्राप्त।

भयंकर संकटों से मुक्ति हेतु क्या करें?

समाधान : भयंकर संकटों से मुक्ति हेतु उपाय

अ भगवान कार्तिकेय जी के 108 नाम (विश्वामित्र रचित स्कन्द–नाम) जो भी ब्रह्मचर्य पूर्वक 1 मास (30 दिन) तक जपेगा वह भयंकर संकटों से दूर हो जाएगा।

—स्कंद पुराण......कुमारिका खण्ड

आ शिवसहस्त्रनाम स्तोत्र के 108 पाठ जो स्वयं करता या योग्य ब्राह्मण से कराता है वह भयंकर संकटों से दूर हो जाता है।नवदुर्गा समय में 12 पाठ नित्य **9 दिन** तक या 3 पाठ,36 दिनों तक भी कर सकते है। परंतु जितने दिनों का संकल्प हो उतने दिनों तक ब्रह्मचर्य अनिवार्य एवं जीवों की हिंसा,मांस,मदिरा निन्दा आदि भी वर्जित है।

इ एक एव परो बन्धुविषमे समुपस्थिते।

गुरुः सकलधर्मात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।।

जो भी ब्रह्मचर्य पूर्वक **21 दिन** नित्य 11 माला जपता है, वह भयंकर संकटों से दूर हो जाता है।

ई गणेश अथर्वशीर्ष पाठ को जो ब्रह्मचर्य पूर्वक **21 दिन** तक नित्य 21 पाठ करता है वह भयंकर संकटों से दूर हो जाता है।

उ जो भी श्री हनुमान चालीसा का 108 पाठ कम से कम नित्य 11 दिनो तक पवित्रता पूर्वक करता है वह भी भयंकर संकटों से मुक्त हो जाता है।

ऊ एवं देश पर आए भयंकर संकट से रक्षा हेतु एक करोड़ बार मृत्युंजय मंत्र का जाप योग्य ब्राह्मणों द्वारा अनिवार्य है।दस लाख मंत्र इष्ट मंत्र लेखन भी यदि पवित्रतापूर्वक किया जाये या करवाया जाये तो भी रक्षा प्राप्त होती है; परंतु जो भी इस अनुष्ठान को करे वह यदि 10 लाख मंत्र होने तक संयम, ब्रह्मचर्य का पालन करे तो ही महान सिद्धि होती है।

जिज्ञासा 23 जो विवाह का इच्छुक हो उसे किससे विवाह करना चाहिए?

समाधान : पतिव्रता के पुण्य से पिता, माता और पति के कुलों की 3–3 पीढ़ियों के लोग स्वर्ग लोक में सुख भोगते हैं। बिना पतिव्रता स्त्री के गृहस्थ का घर श्मशान के तुल्य होता है। पतिव्रता नारी एवं गंगा में कोई भेद नहीं है।

इसलिए **नारद पुराण** में कहा है कि जो विवाह का इच्छुक हो उसे भोगी, रोगी, ओछे विचारों की, कामी,निन्दक, अभक्त, महत्त्वाकांक्षी, वाचाल,कलहप्रिया एवं अपतिव्रताभावी स्त्री से भूलकर भी विवाह नहीं करना चाहिए। ऐसी न मिले तो **शिवपुराण** के अनुसार 'भगवान की वाणी के अनुसार' समझे कि उस महत्त्वाकांक्षी नारी के रूप में उसे साक्षात् राक्षसी ही प्राप्त हुई है।

देवी भागवत में श्रीहरि के अनुसार दुर्गणों से युक्त पत्नि के लिये बताया है कि वह सिंह आदि हिंसक जीवों से भी खतरनाक, नित्य तिल–तिल कर मारने वाला भयंकर पशु प्राप्त हुआ है न कि पत्नि ।आगे यह भी कहा गया हे कि 'अतः घर की अपेक्षा **ऐसे शादीशुदा को** वन ही अधिक लाभदायक है।'; परंतु भक्तिमती तो मीरा की भांति और भी महान होती है। वैराग्यवान, अनासक्त स्त्री अथवा वैराग्यवान पुरूष को मात्र 1 कल्प तक ब्रह्मलोक प्राप्त होता है; परन्तु भक्त को दिव्यतम पद।

जिज्ञासा 24 यदि वैराग्य हो जाए तथा मुमुक्षा जाग जाए तो क्या करना चाहिए?

समाधान : यदि वैराग्य हो जाए तथा मुमुक्षा जाग जाए तो ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे ही (श्री रामानन्द, शंकराचार्य, विवेकानन्द, कार्तिकेय जी की भांति) संन्यास धर्म स्वीकार किया जा सकता है। श्रीमद्भागवत जी में भी बताया है कि नैष्ठिक ब्रह्मचर्य वाला सीधे ही मूर्तिमान वेदों के लोक (सत्यलोक) को जाता है।

श्री हरि ने कहा है कि–श्रेष्ठ बुद्धिमान साधक को गुरूसेवा की स्वतंत्रता के लिए तथा अनन्य भक्ति की प्राप्ति हेतु (चैतन्य महाप्रभु की भांति) धातु (रूपया आदि), स्त्री (पत्नि, अन्य युवती) चंचलता को मृगतृष्णा रूप समझकर तथा भयंकर विघ्न रूप जानकर त्याग देना चाहिए। श्रीमद्भागवत् दशम स्कंध के अस्सीवें अध्याय के चौतीसवें श्लोक का सार भी मात्र कैवल्य पद की आधार शिला अद्वैत ज्ञाननिष्ठता है न कि व्यर्थ के क्रियाकलाप। वैसे भी हृदय की ग्रन्थि का छेदन करने वाला अमृत वाक्य अथवा वाक्यों का संग्रह ही ग्रन्थ कहलाता है न कि ऐसा वाक्य जो भवरोग, जो पुनर्जन्म का हेतु हो।

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है

हृदय–ग्रन्थि जो छिन्न करदे,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

जीव को जो शिव बना दे,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

द्वैतमय जो भेद मिटा दें ,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

जिसमें प्रकाश की जीवन ज्योति,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

एक बार जो मरना सिखा दे,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

अनासक्त, अपरिग्रही जो बना दे,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

सिखाता संयम ब्रह्मचर्य का,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

अभिन्नता का दाता जो,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

तृष्णा को जो भष्म कर दे,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

शिवत्व के जो रंग में रंग दे,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

रामेश्वर की जो भक्ति दे दें

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

शाश्वतता् की जो याद दिला दें,

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

जिज्ञासा 25 जो पति अपनी विनीत पत्नि का सम्मान/आदर नहीं करता अपितु उसके साथ अभद्रता का व्यवहार करता है उसकी क्या गति होती है?

समाधान : जो गृहस्थ मानव अपनी विनीत पत्नि का अनादर करता है एवं तन, मन और धन से पीड़ित रखता है वह स्कंद पुराण के अनुसार अगले 15 जन्मों तक नपुंसक बनता है एवं दुःखी होकर त्रिविध तापों से युक्त रहता है अतः जो कर्त्तव्य एक आदर्श पति के लिए शास्त्रों में बताए गए हैं उनका पालन प्रत्येक गृहस्थ मानव को करना ही चाहिए। ऐसा नहीं कि संपूर्ण नियम मात्र पतिव्रता स्त्रियों के लिए ही बनाए गए हैं।

पत्नि को पति का अर्धांग बताया गया है इस कारण जो 50 फीसदी नियम पत्नि के लिए है उतने ही 50 फीसदी नियम पति के लिए बनाए गए हैं। दोनों का सम्मिश्रण ही गृहस्थ के लिए पूर्ण नियम माना जाता है। जिस प्रकार नारी यदि कोई पाप करती है तो उसके पाप का अधिकांश भाग पति को भी भोगना

पड़ता है क्योंकि पति को एक प्रकार से पत्नि के कर्मों का कंट्रोलर एवं पत्नि को पति के अर्धांग के कारण सलाहकार रूप के कारण पति के कुछ विशेष कर्मों का कंट्रोलर माना जा सकता है।

जिज्ञासा 26 सबसे श्रेष्ठ देव कौन है?

समाधान : शरीर से जिसके निकल जाने पर शरीर गिर जाता है उसकी क्रिया विधि बंद हो जाती है और शरीर सड़ने लगता है, जिसके प्रवेश करने पर शरीर पुनः उठकर खड़ा हो जाता है उसमें नव चेतना आ जाती है जो एक मात्र कर्ता, हर्ता, एवं भर्ता है एकमात्र वही परम साक्षी दृष्टा एवं सर्वज्ञ है। वही तत्त्व श्रेष्ठ देवता है। यह तत्त्व सर्वमय है इस तत्त्व से बड़ा न तो कोई है और न ही कोई होगा। यह तत्त्व मात्र एक है दूजा नहीं और यह प्रणव मात्र है। विभिन्न–विभिन्न नाम और रूपों में एक मात्र यही सर्वव्याप्त है। शिव, राम, कृष्ण, शक्ति, अथवा अन्य कोई भी रूप हो सबका तत्त्व मात्र प्रणव ही है।

जिज्ञासा 27 ऐसा कौन सा व्रत है जिससे पति की आयु लंबी होती है, संतान नहीं मरती, संपूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं, दीर्घायु एवं सुदंरता बढ़ती है तथा प्रत्येक कामना पूर्ण होती है।

समाधान : यह व्रत पुंसवन व्रत कहलाता है; परंतु यह व्रत 1 वर्ष का होता है इसमें नियम लेकर इसे छोड़ा जा सकता। यदि इस व्रत की पूजा को किसी विशेष परिस्थिति अथवा अशुद्ध अवस्था के कारण पत्नि न कर सके तो पति भी कर सकता है। इस व्रत से अभागन स्त्री भी साक्षात् सीता और पार्वती जैसी परम् सौभाग्यवती हो जाती है। वह संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली धन, यश, कीर्ति से संपन्न हो जाती है। उसके पति की आयु दीर्घ हो जाती है। उसकी संतान किसी भी प्रकार से पतन को प्राप्त नहीं होती। यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल पडवा से आरंभ होकर वर्ष भर पूर्ण नियम संयम का पालन करने से सिद्धि देता है। परंतु यह व्रत पत्नि अपनी पति की आज्ञा लेकर ही करे; क्योंकि इस व्रत में पवित्रता अनिवार्य है। इसमें इष्ट लक्ष्मीनारायण (जोड़ा) की पूजा सेवा नित्य होती है। विस्तार से जानने के लिए श्रीमद्भागवत पुराण के प्रथम खण्ड का स्वाध्याय करें; एवं योग्य ब्राह्मण से विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

प्रश्न

नरक(दुखों की परिस्थित) में कौन जाता है ?

उत्तर– तमोगुणी अपने वर्तमान के कुकर्मों (मारकाट , लूट , कुदृष्टि, बलात्कार, अति मैथुन, या नास्तिकतावाद, चोरी , नारी को भोग का साधन समझना आदि)से बार बार जाता है और रजोगुणी अपने लोभ और मोह से दुखी होता है हालांकि यह अति कामी नहीं कहलाता पर इसका चित्त भी धन और स्त्री में लगा ही रहता है ये रजोगुणी भी अपने धन की वृद्धि के लिए सदा सोचते हैं और ये कंजूस भी बने रहते हैं तथा अपने विवाह को मात्र बलात्कार का लाईसेंस समझते हैं।

इस कारण यह मानसिक तनाव रूपी आंतरिक बीमारी का शिकार होता है। इन दोनों दुर्गुणों (रजो और तमो) की चपेट में आजकल चारों वर्ण के 99.99.–99.99प्रतिशत लोग हैं और ये लोग इस बीमारी का शिकार होने पर भी अपने आपको होशियारपुर के होशियार चंद समझकर सतोगुणी (संत की एक श्रेणी) पर अधिकार जताने का भरसक जतन करते हैं।

तीनों गुणों में तमोगुणी ही महामूर्ख है और रजोगुणी कम मूर्ख फिर वे चाहे नर हो या नारी अथवा देववर्ग या गंधर्व यक्ष वर्ग के ही क्यों न हो पर सभी वर्गों में सतोगुणी ही पूजा और सम्मान के अधिक पात्र हैं पर ब्रह्मनिष्ठ गुणातीत के आगे सतोगुणी आदि सब बच्चे हैं।

प्रश्न– 151

क्या गृहस्थ का कर्तव्य मात्र पालन पोषण है ?क्या आजीवन गृहस्थ आश्रम ही ठीक है ?

यदि नहीं तो मनुष्य आजीवन इसी गृहस्थ आश्रम में ही क्यों रहना चाहता है ?

उत्तर–

50–55 वर्ष के बाद या पुत्र पुत्री के विवाह के बाद यह कर्त्तव्य समाप्त हो जाता है । उस अवधि के बाद वानप्रस्थ जैसा जप तप व्रत–उपवास और भक्ति पर ध्यान दें अन्यथा (55 के बाद भी)अति पारिवारिक चिन्ता नष्ट कर डालती है न ही मोक्ष मार्ग प्रशस्त हो पाता है न ही पाप नष्ट।
अतः जो लोग 55 के बाद भी कर्म को ही पूजा मानकर कमाई , कमाई और कमाई या औपचारिक भक्ति करते हैं वे अज्ञानी यूँ ही जीवन नष्ट कर देते हैं और दूसरी बात– 50 के

बाद जो मनुष्य अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहता है वही कल्याण को प्राप्त कर कृतकृत्य होता है। शेष सब पुनर्जन्म ही पायेंगे।

आधुनिक समय में सब लोग मनगढ़ंत उपदेश दिये जा रहे हैं।

जो अनुचित है। यथार्थ ज्ञान के लिए उपनिषद देखें।

आजीवन केवल एक आश्रम पर मोहर लगाने वाले अज्ञानी हैं।

25 तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना अनिवार्य है।

तदोपरान्त 26 से प्राजापत्य व्रत के साथ ब्रह्मचर्य का आंशिक पालन फिर 50 के लगभग के बाद वानप्रस्थ सा तप।

(प्रश्न एक ग्रुप से लिया है पर वहाँ अलग दिशा में यह गृहस्थ का भाव जा रहा था ऐसा लगा और उसको पढ़कर 60 वर्ष के कुछ विवाहित भी खुश हो रहे थे कि ठीक है)

पर हमारा मानना है कि 55 के बाद हर मनुष्य अधिक से अधिक तीर्थवास करके वहाँ रहे। तीर्थ में रहने का ही अद्वितीय माहात्म्य है। आपने 26–50 तक खूब भोग भोगे अब तो बंद करो। अब तो आलीशान महल को छोड़कर कुटिया में रहकर भजन करके देखो। अथवा अधिक धन हो तो वहाँ दो रूम बनाकर तपोनिष्ठ की तरह रहो। इसकी फलश्रुति भी अलग है। मन की शुद्धि और तीर्थ स्थल पर तन इन दोनों की महिमा अलग अलग है।

ऐसा नहीं कि हम यह कहें कि – मन तो शुद्ध है फिर तीर्थ स्थल पर क्यों रहें।

अनेक साधु संत व गृहस्थ ऋषि भी तीर्थ स्थल पर रहने गये थे ये मत भूला करो महानुभावों।

प्रश्न – 152

तीन ऋण कब तक जीव को परे'शान करते हैं ?

तीन ऋण कब तक जीव को परेशान करते हैं ?

उत्तर–

तीन ऋण हैं: ऋषि ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण पर श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार मुमुक्षु, वीतरागी , एक रूप का अनन्य भक्त , नैष्ठिक ब्रह्मचारी और ब्रह्मनिष्ठ को न तो कुछ कर्तव्य है न ही अकर्तव्य । न ही विहित न ही अविहित । (जो आत्म समर्पण कर शम दमयुक्त भी हो तथा परायी नार व पराये धन पर नियत न डाले और गृहस्थ हो तो 50 के बाद वानप्रस्थ जैसा जीवन अर्थात जप तप व्रत–उपवास सहित जिये ; तथा 32 अपराधों से दूर रहे , पत्नि के व्रत–उपवास पर संसर्ग न करे , श्राद्ध पक्ष में व जयंती , चतुर्थी , अष्टमी , पूर्णिमा , अमावस्या आदि पर नव विवाहित भी रतिभोग से मुक्त रहे , रिश्वत चोरी लूट खसोट से दूर रहे , द्विज हो तो संध्यापूत भी रहे।

ध्यान रहे औपचारिक राम राम जपने से अपने आपको भक्त मानने वाला अंधविश्वास में जी रहा है।

प्रश्न–

एक ग्रुप से प्राप्त प्रश्न–

क्या इस विश्व में कोई ब्रह्मज्ञानी है या कलि के प्रभाव से कोई नहीं बचा ?

उत्तर –

इस विश्व में सब हैं भूत प्रेत भी , मनुष्य भी, बलात्कारी भी पुण्यात्मा भी। पतिव्रता भी और कुलटा भी।

भक्ति–योग के भक्त भी और ज्ञानयोग की चरम वाले ब्रह्मज्ञानी भी। अर्थात अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभावी ब्रह्मनिष्ठ भी ।

यहाँ जीवभावी द्वैतात्मक भी जो अपने आपको अंश या अंशभूत मानते हैं या परिपूर्ण होते हुये भी अंशभूत नाम रखकर लीला करते हुए दिखायी देते हैं। वे अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ भी जो महावाक्यों को यथार्थ आत्मसात करके मैं ब्रह्म हूँ के भाव और भावातीत भी से युक्त हैं।

सब कुछ है यहाँ। जब तक महा पुण्यात्मा यहाँ रहेंगे तब तक उनके घर महावाक्यों के लक्ष्यार्थ व कृपा से अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ भी लोककल्याण के लिए देह धारण करते रहेंगे।

प्रश्न 142 एकाध शास्त्रोक्त विधान और मर्यादा बतायें ?

उत्तर–

इन फोटोज (गुरु के चरणों में शिष्य, माता पिता के चरणों में शिष्य का फोटोज) को देखकर शिष्य तो कुछ नहीं कहता , पुत्र भी पिता के चरणों में झुककर शान्ति का अनुभव करता है और पतिव्रता स्त्री भी पति का चरणामृत और चरण सेवा करके अपने आपको भाग्यशाली मानती है। क्षत्रिय, वैश्य आदि भी

जितेन्द्रिय व संध्यापूत ब्राह्मण या तद्भावित ब्रह्मनिष्ठ के चरणों में झुककर भाग्यशाली मानते हैं

पर तमोगुणी या स्वार्थी पत्नी को यह पति के चरणों की सेवा या चरणोदक अनुचित लगता है वह कहती है कि जब श्रीकृष्ण स्वयं राधा के चरणों की सेवा करते हुए फोटो में दिखाई देते हैं तो हमारे पति भी हमारे चरण स्पर्श करें। जब पति और पति समान है तो हम क्यों पति के चरणों की सेवा करें। पति कमाता है तो हम भी तो घर में बहुत मेहनत करते हैं।

"ध्यान दो कि – गुरु क्यों पूज्यनीय है , पिता क्यों ?

और क्यों पति ? इस पर बारीकी से अध्ययन करो तो सब कुछ सामने आ जायेगा। जो स्त्री महान देवी लक्ष्मी और पार्वती से ही शिक्षा नहीं ले पा रही तो वह किसकी सुनेगी।

नोट – ऐसी पोस्ट से ऐसी नारी पुनः भड़क जाती है जिसके अहंकार को ठेस लग रही हो। पर यह सब वेद और शास्त्रोक्त है मनगढ़ंत नहीं।

यह पोस्ट नारी विरोधी नहीं पर तमोगुणी नारी के कुभाव का समर्थन भला कौन करेगा।

पति यदि पातकी (महापापी) हो तो उसे छोड़कर चली जाओ पर उससे विद्रोह करना या वहीं रहकर उसको ही पीड़ित करना शास्त्र की आज्ञा नहीं। पति या पराई औरत से संबंध स्थापित कर रहा हो और पत्नि के कहने पर न माने तो ऐसे पति का त्याग भी पत्नी कर सकती है पर वहाँ रहकर या छोड़कर भी बुराई न करें। बुराई तो पुरुष भी किसी की न करें। स्कन्दपुराण के अनुसार निन्दा से उस पापी के पाप का आठवां भाग भोगना पड़ता है।

Question 143

I am a rich man but I cannot do penance and prayers but I want God to be pleased with me- Please suggest a solution-

& Ramesh k- singh

उत्तर– आप अपने घर के आसपास 3–3 लाख के दो हॉल बनाएं वहाँ भागवत जी व वक्ता के लिए एक एक भव्य सिंहासन ।

और कथा वक्ताओं के संदर्भ में घोषणा करवा दें कि आपके क्षेत्र में जो भी यजमान कथा करना चाहें वे सब इस महाकक्ष का प्रयोग निशुल्क करें। तथा कथा वक्ताओं (हर कार्यक्रम के सात आठ लोग) के भोजन के लिए जो धन लगेगा वह भी मैं वहन करने का माध्यम बनूँगा।

नोट – ऐसी घोषणा करने पर कोई कथा कराये या न कराये आपको इतना पुण्य मिलेगा कि चित्रगुप्त भी इस फल को बताने में समर्थ नहीं।

और आपको वैकुण्ठ या शिवलोक (इष्ट के अनुसार) अवश्य मिल जायेगा। पर धन के बल पर आप अन्याय या पाप , परायी नार से संसर्ग न करे अन्यथा पाप पुण्य के मिश्रण से स्वर्ग नरक व मनुष्य योनी में ही सुख दुख दोनों मिलेगे ।

दान भी कल्याणप्रद है पर आचरण भी अनिवार्य है।

नोट – यदि ये धन आपकी कमाई का हो तो ही ये फल मिलेगा पर रिश्वत, अति ब्याज , शोषण, लूट , शासन के अधिकार का हो तो इन सबका फल आपको पशु योनी में मिलेगा।

अन्य उपाय –अति समीपस्थ एक मंदिर में नित्य पुष्प माला भिजवाने का आर्डर किसी फूलमाली को दे दें। तथा हर माह दीपक के लिए किसी गाँव से एक किलो या आधा किलो घी या तिली का तेल यह भी महान उपाय है इस उपाय को मध्यम वर्ग का मनुष्य भी कर सकता है।

तिली का तेल तो 220रू प्रति किलो मिल जाता है।

प्रश्न 152 तीन ऋण कब तक जीव को परेाान करते हैं ?

उत्तर–

तीन ऋण हैं –

देव ऋण –

पितृ ऋण –

पर श्रीमद्‌भागवत महापुराण के अनुसार मुमुक्षु ,वीतरागी, अनन्य भक्त (नैिष्ठक ब्रह्मचारी और ब्रह्मनिष्ठ को न तो कुछ कर्तव्(है न ही अकर्तव्य न ही विहित न ही अविहित । (जो आत्म समर्पण कर 'ाम दमु्क्त भी हो तथा परा(ी नार व परा(धन पर नि(त न डाले और •ृहस्थ हो तो 50 के बाद वानप्रस्थ जैसा जीवन अर्थात जप तप व्रत–उपवास सहित जि(तथा 32 अपराधों से दूर रहे) पत्नि के व्रत–उपवास पर संस• न करे) श्रा) प(ा में व ज(ती) चतुर्थी) अ"टमी) पूर्िामा) अमावस(ा आदि पर नव विवाहित भी रतिभो• से मुक्त रहे) रिश्वत चोरी लूट (ासोट से दूर रहे) ि)ज हो तो संध(ापूत भी रहे।

ध्(ान रहे औपचारिक राम राम जपने से अपने आपको भक्त मानने वाला अंधविश्वास में जी रहा ह

प्रश्न–श्री गुरु पादुका पंचकम् में क्या है?

उत्तर– अद्भुत खजाना

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो ।

नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।।

आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो ।

नमोस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः।।

सभी गुरुओं को नमस्कार सभी गुरुओं की पादुकाओं को नमस्कार

श्री गुरुदेव जी के गुरुओं अथवा परगुरुओं एवं उनकी पादुकाओं को नमस्कार

आचार्यों एवं सिद्ध विद्याओं के स्वामी की पादुकाओं को नमस्कार बारंबार श्री गुरुपादुकाओं को नमस्कार।

कामादि सर्प व्रजगारुडाभ्यां ।

विवेक वैराग्य निधि प्रदाभ्यां ।।

बोध प्रदाभ्यां द्रुत मोक्षदाभ्यां ।

नमो नमः श्री गुरु पादुकाभ्यां ।।

यह अंतः करण के काम क्रोध आदि महा सर्पों के विष को उतारने वाली विष वैद्य है विवेक अर्थात अन्तरज्ञान एवं वैराग्य का भंडार देने वाली है द्य जो प्रत्यक्ष ज्ञान प्रदायिनी एवं शीघ्र मोक्ष प्रदान करने वाली हैं द्य श्री गुरुदेव की ऐसी पादुकाओं को नमस्कार है नमस्कार है।

अनंत संसार समुद्रतार,

नौकायिताभ्यां स्थिर भक्तिदाभ्यां।।

जाक्याब्धि संशोषण बाड़याभ्यां,

नमो नमः श्री गुरु पादुकाभ्यां ।।

अंतहीन संसार रूपी समुद्र को पार करने के लिये जो नौका बन गई है अविचल भक्ति देने वाली आलस्य प्रमाद और अज्ञान रूपी जड़ता के समुद्र को भस्म करने के लिये जो

वडवाग्नि समान है ऐसी श्री गुरुदेव की चरण की चरण पादुकाओं को नमस्कार हो, नमस्कार हो।

ऊँकार ह्रींकार रहस्ययुक्त

श्रींकार गुढ़ार्थ महाविभुत्या

ऊँकार मर्मं प्रतिपादिनीभ्यां

नमो नमः श्री गुरु पादुकाभ्यां

जो वाग बीज ऐं कार माया बीज ह्रीं कार के रहस्य से युक्त षोडशी बीज श्रींकार के गुढ़ अर्थ को महान ऐश्वर्य से ॐ कार के मर्मस्थान को प्रगट करनेवाली हैं द्य ऐसी श्री गुरुदेव की चरण पादुकाओं को नमस्कार हो,

नमस्कार हो

होत्राग्नि, हौत्राग्नि हविष्य होतृ

होमादि सर्वकृति भासमानम्

यद ब्रह्म तद वो धवितारिणीभ्यां,

नमो नमः श्री गुरु पादुकाभ्यां

होत्र और हौत्र ये दोनों प्रकार की अग्नियों में हवन

सामग्री होम करने वाला होता हैं और होम आदि रूप में भासित एक ही परब्रह्म तत्त्व का साक्षात अनुभव कराने वाले श्री गुरुदेव की चरण पादुकाओं को नमस्कार हो,

नमस्कार हो ।

आत्मज्ञान को कौन उपलब्ध हो पाता है?
समाधान–
गुरुप्रादतः स्वात्मन्यात्मारामनिरिक्षणात्।
समता मुक्तिमर्गेण स्वात्मज्ञानं प्रवर्तते ।।

श्री गुरुदेव की कृपा से अपने भीतर ही आत्मानंद प्राप्त करके समता और मुक्ति के मार्ग द्वार शिष्य आत्मज्ञान को उपलब्ध होता है।
....
तुम कौन हो?
समाधान–
अजोऽहममरोऽहं च ह्यनादिनिधनोह्यहम्।
अविकारश्चिदानन्दो ह्यणियान् महतो महान् ।।

मैं अजन्मा हूँ, मैं अमर हूँ, मेरा आदि नहीं है, मेरी मृत्यु नहीं है मैं निर्विकार हूँ, मैं चिदानन्द हूँ, मैं अणु से भी छोटा हूँ और महान् से भी महान् हूँ।

....
ब्रह्म को कैसे समझें? समझ ही नहीं आता?
समाधान–
अपूर्वमपरं नित्यं स्वयं ज्योतिर्निरामयम् ।
विरजं परमाकाशं ध्रुवमानन्दमव्ययम् ।।
अगोचरं तथाऽगम्यं नामरूपविवर्जितम्।
निःशब्दं तु विजानीयात्स्वाभावाद् ब्रह्म पार्वति ।।
सुनें–
1. ब्रह्म को स्वभाव से ही अपूर्व (जिससे पूर्व कोई नहीं ऐसा),
2. अद्वितीय,
3. नित्य,
4. ज्योतिस्वरूप,
5. निरोगी,
6. निर्मल,
7. परम आकाशस्वरूप,
8. अचल,
9. आनन्दस्वरूप,
10. अविनाशी,
11. अगम्य,
12. अगोचर,

13. नाम–रूप से रहित तथा
14. निःशब्द जानना चाहिए। इसी भाव वाला ही ब्रह्मज्ञानी है।
15. शाश्वतता–यथा गन्धस्वभावत्वं कर्पूरकुसुमादिषु। शीतोष्णस्वभावत्वं तथा ब्रह्मणि शाश्वतम्।। अर्थात् जिस प्रकार कपूर, फूल इत्यादि में गन्धत्व, (अग्नि में) उष्णता और (जल में) शीतलता स्वभाव से ही होते हैं उसी प्रकार ब्रह्म में शाश्वतता भी स्वभावसिद्ध है ।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

प्रश्न–
सोऽहम् में अहम् कौन है इसका तात्पर्य क्या है?
उत्तर–
यथा निजस्वभावेन कुंडलकटकादयः।
सुवर्णत्वेन तिष्ठन्ति तथाऽहं ब्रह्म शाश्वतम् ।।

जिस प्रकार कटक, कुण्डल आदि आभूषण स्वभाव से ही सुवर्ण हैं उसी प्रकार मैं स्वभाव से ही शाश्वत ब्रह्म हूँ ।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

प्रश्न–
कोटि कोटि दंडवत प्रांणाम करू जी हे अंशभूत!
रुद्राक्ष की माला या एक ही दाना धारण कर सकते हैं
एक तो ये है रही बात पर त्रिपुण्ड्र की तो वो नहीं लगता हूँ जी क्या फल नही मिलेगा?
उत्तर–
शिव भजन का संपूर्ण फल बिना त्रिपुण्ड्र के नही मिलता।
और एक रुद्राक्ष की अपेक्षा माला 100 गुना अधिक श्रेष्ठ है।
पर माला न हो तो एक रुद्राक्ष धारण अवश्य करें।
और भस्म का त्रिपुण्ड्र न लगा सकें तो शुद्ध मिट्टी या जल से भी वर्ण के अनुसार मंत्र का उच्चारण कर त्रिपुण्ड्र लगा लें। वर्णातीत आत्मभावी के लिए चारों वर्ण का मंत्र नहीं।
शिव भजन के लिए ये दोनों अनिवार्य समझो।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

प्रश्न–अक्षयरुद्र अंशभूतशिव जी नमस्कार!
मेरी पूजा का क्रम यह था जो मैं पिछले सात आठ साल से करता हूँ।
यदि कुछ अतिरिक्त आज्ञा या राय देना हो तो कहने की की कृपा करें।
उत्तर–
1. ठीक है पर सबसे पहले गुरु पूजा या उनकी चरण पादुकाओं की पूजा करके गुरु पादुका स्तोत्र जपें,
2. फिर गणपति स्तोत्र
3. तदोपरान्त इष्ट की पत्नी का स्तोत्र और

4. अब इष्ट स्तोत्र, इष्ट मंत्र व इष्ट गुप्त विद्या अर्थात् कवच।
5. अब शेष कुछ करना हो तो इष्ट की प्रसन्नता के लिए ही अतिरिक्त किसी अन्य रूप की आराधना (दो चार स्तोत्र)
6. अब श्री स्वधा देवी का तीन बार उच्चारण,
7. दक्षिणा देवी का तीन बार उच्चारण और लास्ट में अग्निदेव की पत्नि स्वाहा देवी के 16 नामों का अद्भुत स्तोत्र–यह शीघ्र सफलता के सूत्र हैं पर कम से कम 100दिन तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक ऐसा करने पर महासफलता की चाबी मिल जाती है।
8. और सात्विक आहार का पालन हो व
9. अधर्म का त्याग भी शत दिवसों तक अनिवार्य समझें।
10. गणपति जी व इष्ट की मूर्ति को स्नान कराके उनको टीका भी लगायें (टीका अर्थात तिलक किस चंदन का लगेगा या केसर या कैसी भस्म आदि आदि का वह हम इस पुस्तक में बता ही चुके तथा शिव चरितमानस में भस्म धारण नामक अध्याय में बता चुके और आसन धन आदि के लिए पीत कंबल या ज्ञान के लिए भूरा कंबल व दिशा आदि भी देखें । यह 100प्रतिशत सफलता देता है।
11. स्नान के बाद भगवान को स्नान तथा तिलक आदि सबके लिए अनिवार्य है। अतः घर में सीमित मूर्ति रखें ताकि उनको स्नान कराने में तनाव उत्पन्न न हो। नौकरी वालों को 10–20 मूर्ति शान्ति नहीं देती अपितु तत्काल दुख पैदा करती हैं उनको देखकर ही दुख होता है कि आफिस जाना है इतनी मूर्तियों के वस्त्र निकालकर कैसे स्नान करायें और कैसे पुनः धारण। अतः गणपति और इष्ट की मूर्ति उनकी पत्नि सहित ही रखें शेष सब मंदिर में रखके आ जायें या गंगा में विसर्जित कर दें।

प्रश्न–

काम पर जाने और वापस आने के समय ,जूते पहने हुए क्या स्तोत्र एवं मंत्र का जप किया जा सकता है? कृपया समाधान करें। – निखिल रंजन

उत्तर–

मार्ग में जब जूते चप्पल पहने हुए हो तब रक्षा के लिए केवल इष्ट का नाम जपें। श्री लगाकर ही। या नाममयी स्तोत्र जप सकते हो। जिसमें मात्र नाम ही नाम हो।

जैसे पार्वती (संकटा देवी) के आठ नाम वाला स्तोत्र, द्वादश नाम , 11, 18, 24 नाम आदि नाम वाले स्तोत्र।

प्रश्न– ब्रह्म स्वरूप होने के लिए क्या करें?

उत्तर– महावाक्यों का सेवन।

स्वयं तथाविधो भूत्वा स्थातव्यं यत्रकुत्रचित् ।
कीटो भृंग इव ध्यानात् यथा भवति तादृशः ।।

अर्थ–स्वयं वैसा होकर किसी–न–किसी स्थान में रहना जैसे कीडा भ्रमर का चिन्तन करते–करते भ्रमर हो जाता है वैसे ही साधक अभिन्नभाव से ब्रह्म का ध्यान करते–करते ब्रह्मस्वरूप हो जाता है

अन्य शब्दों में–

गुरोर्ध्यानेनैव नित्यं देही ब्रह्ममयो भवेत् ।

स्थितश्च यत्रकुत्रापि मुक्तोऽसौ नात्र संशयः ।।
सदा ज्ञानी गुरु का ध्यान करने से जीव ब्रह्ममय हो जाता है, वह किसी भी स्थान में रहता हो फ़िर भी मुक्त ही है इसमें कोई संशय नहीं है।

....,......

प्रश्न–परम गुरु को भगवान क्यों कहते हैं?

समाधान–

छः गुणरूप होने के कारण। अर्थात 6 ऐसे ऐश्वर्य जिनके कारण भगवान की उपमा कोई भी पा सकता है उन ऐश्वर्यात्मक शक्तियों के कारण शिष्य अथवा हर कोई उन दिव्य भगधारी को भगवान कहते हैं ह

ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं यशः श्री समुदाहृतम्।षड्गुणैश्वर्ययुक्तो हि भगवान् श्री गुरुः प्रिये।।

भगवत्स्वरूप श्री गुरुदेव ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, यश, लक्ष्मी और मधुरवाणी, ये छः गुणरूप ऐश्वर्य से संपन्न होते हैं ।

इसी कारण–

गुरुः शिवो गुरुर्देवो गुरुर्बन्धुः शरीरिणाम ।
गुरुरात्मा गुरुर्जीवो गुरोरन्यन्न विद्यते।।

मनुष्य के लिए गुरु ही शिव हैं, गुरु ही देव हैं, गुरु ही बांधव हैं गुरु ही आत्मा हैं और गुरु ही जीव हैं (सचमुच) गुरु के सिवा अन्य कुछ भी नहीं है

प्रश्न–हे अक्षयरुद्र जी! ब्रह्मानंद से परिपूर्ण अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभाव से भावित ब्रह्मज्ञानी के लक्षण बतायें?

उत्तर– इसका उत्तर भी हम श्रीगुरुगीता के अनुसार ही श्रीमहादेव (गुरुदेव)की वाणी रूप में व्यक्त कर रहे हैं।

सुनों–

1. एकाकी
2. निस्पृहः
3. शान्तः
4. चिंतासूयादिवर्जितः।
5. बाल्यभावेन यो भाति........ ब्रह्मज्ञानी स उच्यते।।

अर्थ–

अकेला, कामनारहित, शांत, चिन्तारहित, ईर्ष्यारहित और बालक की तरह जो शोभता है वह ब्रह्मज्ञानी कहलाता है।

प्रश्न– सच्चा सुख कहाँ है?
न सुखं वेदशास्त्रेषु न सुखं मंत्रयंत्रके ।
गुरोः प्रसादादन्यत्र सुखं नास्ति महीतले।।

वेदों और शास्त्रों में सुख नहीं है, मंत्र और यंत्र में सुख नहीं है इस पृथ्वी पर गुरुदेव के कृपाप्रसाद (महावाक्यों के लक्ष्यार्थ होने से और वीतरागस्य रूपया के कारण उन निर्मोही) के सिवा अन्यत्र कहीं भी सुख नहीं है।
चावार्कवैष्णवमते सुखं प्रभाकरे न हि ।
गुरोः पादान्तिके यद्वत्सुखं वेदान्तसम्मतम् ।।
गुरुदेव के श्री चरणों में जो वेदान्तनिर्दिष्ट सुख है वह सुख न चावार्क मत में, न वैष्णव मत में और न प्रभाकर (सांखय) मत में है।

0000000000000000000000000000000000000

सबसे उत्तम सुख इस भूलोक में या प्रत्येक।
ब्रह्मांड में किसको मिलता है?
समाधान–
न तत्सुखं सुरेन्द्रस्य न सुखं चक्रवर्तिनाम् ।
यत्सुखं वीतरागस्य मुनेरेकान्तवासिनः ।।
एकान्तवासी वीतराग मुनि (जो यथार्थ एकत्व को
समझकर एकाकी अर्थात द्वैतहीन होकर स्वयं पूर्णत्व में रमण कर रहा है जो 100 प्रतिशत अमरता के कारण ,
ब्रह्म रूप व अचिन्त्य हो गया उसको)
जो सुख मिलता है वह सुख न इन्द्र को और न चक्रवर्ती राजाओं को मिलता है
नित्यं ब्रह्मरसं पीत्वा तृप्तो यः परमात्मनि ।
इन्द्रं च मन्यते रंकं नृपाणां तत्र का कथा।।

हमेशा ब्रह्मरस का पान करके जो परमात्मा में तृप्त हो गया है वह (मुनि) इन्द्र को भी गरीब मानता है तो राजाओं की तो बात ही क्या ?

00000000000000000000000000000000000000000000000000
कैवल्यमय होने के लिए अध्यात्म में परम आज्ञा क्या है जप तप ध्यान या तीर्थ स्थल पर उपासना या अन्य?
उत्तर–
यतः परमकैवल्यं गुरुमार्गेण वै भवेत्।

गुरुभक्तिरतिः कार्या सर्वदा मोक्षकांक्षिभिः।।

कैवल्यमयता की आकांक्षा करनेवालों को (सात प्रकार के गुरुओं में से छः प्रकारों का त्याग करके , पहली से तीसरी भूमिकाधारी गुरु कात्याग करके चतुर्थ से सप्तम् भूमिका वाले) परमगुरु की ही भक्ति खूब करनी चाहिए, क्योंकि गुरुदेव के द्वारा ही परम मोक्ष की प्राप्ति होती है द्य और शिव पुराण के अनुसार द्वितीय भूमिका वाला दीक्षागुरु ब्रह्मज्ञानी नहीं होता मात्र बोधक गुरु होता है अतः जब भी उच्च स्तरीय भूमिका वाला गुरु (100 प्रतिशत तद्भाव से युक्त) मिल जाए तो इसकी सेवा का परित्याग करके और बिना द्रोह किये बिना निंदा किये ब्रह्मानंद से परिपूर्ण अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ अभिन्नभावी की सेवा सुश्रुषा आरंभ कर देना चाहिए।..

0000000000000000000000000000000000000000000

सर्वज्ञ कौन?

उत्तर –

सर्वज्ञपदमित्याहुर्देही सर्वमयो भुवि।
सदाऽनन्दः सदा शान्तो रमते यत्र कुत्रचित् ।।
जो जीव इस जगत में सर्वमय, आनंदमय और शान्त होकर सर्वत्र विचरता है उस जीव को सर्वज्ञ कहते हैं।
यत्रैव तिष्ठते सोऽपि स देशः पुण्यभाजनः।
मुक्तस्य लक्षणं देवी तवाग्रे कथितं मया ।।
ऐसा (सर्वज्ञ)पुरुष जहाँ रहता है वह स्थान पुण्यतीर्थ है, हे देवी ! तुम्हारे सामने मैंने मुक्त पुरूष का लक्षण कहा।
यद्यप्यधीता निगमाः षडंगा आगमाः प्रिये ।
आध्यामादिनि शास्त्राणि ज्ञानं नास्ति गुरुं विना।।
हे प्रिये ! मनुष्य चाहे चारों वेद पढ़ ले, वेद के छः अंग पढ़ ले, आध्यात्मशास्त्र आदि अन्य सर्व शास्त्र पढ़ ले फ़िर भी उच्च स्तरीय परमगुरु के बिना ज्ञान नहीं मिलता और यह सर्वज्ञता परम भूमिका से युक्त ब्रह्मनिष्ठ की कृपा से ही संभव है।

किसको स्वर्णिम अवसर है?–

नैष्ठिकब्रह्मचारी को तो यह स्वर्णिम अवसर है कि वह 45 तक अखंड ब्रह्मचर्य पूर्वक किसी अपरोक्ष ज्ञाननिष्ठ गुरु की सेवा करे (न कि कामी, संध्याहीन , लोभी या अज्ञानी गुरु की) तदोपरान्त गुरु की आज्ञा से 5 वर्ष तक किसी शिवालय में घोर तप करे और त्रिपुण्ड्र रुद्राक्ष धारण करके किसी ज्योतिर्लिंग के समीप या शिवालय में उत्तराभिमुख होकर मृत्युञ्जय स्तोत्र या मृत्युञ्जय कवच का गुरु आज्ञा से सेवन करें ।
गुरु भी अपने अति योग्य शिष्य को साधना की आज्ञा दे न कि अपनी सेवा में ही रखने की आज्ञा दे इससे उस गुरु को भी परम दादा गुरु का विशेष अनुग्रह मिलता है मरना सब

गुरुओं की देह को है अतः गुरु भी अपने शिष्यों को अपनी चरण सेवा में बांधकर न रखें जो शिष्य अधिक जप तप न कर सके उसे ही अपनी सेवा में लगायें। और अन्य शिष्य को 5 वर्ष की आराधना से सिद्ध होने पर अपने आश्रम में रहने की आज्ञा दे सकते हैं या 8 दिशाओं में अपने आठ चेलों को देश की रक्षा के लिए भेज दें और एक को मध्य क्षेत्र में ।

प्रश्न–
मैं मेरे इष्ट माधव के अलावा किसी भी रूप के स्तोत्र का पाठ नहीं करना चाहता पर ग्रहस्थ हूँ पंचदेवों को कैसे प्रसन्न करूँ सुना है कि ग्रहस्थ का परिवार पंचदेव पूजन और पितृ पूजन से ही खुश रह सकता है ।
उत्तर–सुनें–
1. गणपति जी की मानसिक पूजा तो रो रोकर भी करना पड़ेगा फिर चाहे आप किसी के भी भक्त क्यों न हो।
अब सुनें–
2.आप एक पाठ राधा प्रीत्यर्थे श्री माधव के लिए करें (राधा जी को प्रसन्न किये बिना माधव का गोलोक सपने में भी नहीं मिलता यह माधव श्री कृष्ण जी ने राधे के प्रेम के सम्मान हेतु उनको वरदान दिया है।
3. शक्ति दुर्गा के प्रीत्यर्थे कान्हा का एक पाठ करें इससे शक्ति की कृपा 100 गुनी प्राप्त होगी।
4. शिव जी के प्रीत्यर्थे एक पाठ (वही पाठ या अन्य स्तोत्र) पुनः करें।
5. यही कार्य एक बार सूर्य देव के प्रीत्यर्थे करें।
बस हो गया आपका मंगल
(हरि तो माधव हो ही गये, गणपति पूजा हो ही गई और तीन देव यह हो गये)
और सुनों– यदि पितर और स्वधा देवी को प्रसन्न करना हो तो उनके प्रीत्यर्थे अपना चेहरा दक्षिण की और घुमाकर एक माला या स्तोत्र माधव की करें। इससे ये भी प्रसन्न हो जायेगें।ऐसा करने से आप ग्रहस्थी के लिए विधान बनाये गये पंचदेवों की परम कृपा 100 गुनी पा लोगे और अनन्य भक्ति का रस भी बड़ जायेगा।
एक साधे सब सधे
सब साधे
सब जायें।
पर एक बात अवश्य ही कहना चाहते हैं। जिस प्रकार आप डॉ., सब्जी वाला, दूध वाला, या अन्य को बार बार नमनकहते हो उसी प्रकार इन पंचदेवों के साथ अग्निदेव, वायुदेव, वरुण देव को भी धन्यवाद देते ही रहना क्योंकि ये सभी आपके जीवन की रक्षा करते हैं।
कल्पना करो कि यदि सूर्य का अस्तित्व खत्म हो जाये या मात्र 3दिन सूर्य उदित न हो तो क्या होगा या रसोई में अग्नि और जल न हो तो क्या होगा और वायु न हो तो आपका क्या होगा अतः सभी को माधव की खुशी के लिए और आभार हेतु थेंक्स नित्य एक बार अवश्य ही प्रणाम करके दो।
यथा –

ॐ सूर्याय नमः

ॐ वरुणाय नमः

आदि

दैहिकवासनाक्या है? महाकामी को क्षणिक वैराग्य कब होता है क्या है?
समाधान–दैहिकवासना वास्तव में कुछ भी नहीं मात्र माँस पिण्डों को भोगकर जो सुख मिलता है उस सुख को पाने की एक इच्छा मात्र है, पर उस माँस पिण्ड से जीवात्मा निकल जाये तो भयंकर कामी भी निर्वस्त्र

परायी नारी के शव को देखकर भी (उस रूप से अनासक्त होकर) उस नारी से उदास या भयग्रस्त होकर क्षणिक जितेन्द्रिय हो जाता है डर के कारण उसके भोग से वैराग्य पा जाता है।

यह कामी का वैराग्य या क्षणिक वैराग्य जाता है जो शव के भय से उत्पन्न होता है तथा स्वयं के शरीर में कोई गंभीर रोग हो जाए और मरणासन्न स्थिति हो जाए तो भी क्षणिक वैराग्य आ ही जाता है।

कामवासना एक प्रकार से इंद्रिय जनित सुखों की इच्छा ही होती है अर्थात यह वासना सेक्सुअल विचारों का पर्याय है।

ऐसी प्रबल इच्छा जिसका चरम परिणाम मात्र सम्भोग हो वही कामवासना कहलाती है जो इन्द्रियों के सुख तक सीमित होती है न कि भावना, स्नेह या पवित्र प्रेम तक। काम वासना से रहित मानव नारी की पूजा कर सकता है पर दैहिक सुख की कामना नहीं करता।

सार यही है कि विषयभोग की कामना ही कामवासना है जिसे स्त्री संसर्ग या की चाह भी कहते हैं. जो विपरीत लिंगी के शरीर के उपभोग की इच्छा प्रदर्शित करती है. पर यह प्रेम नहीं कहलाता।

प्रेम तो मात्र पूर्णतः पवित्रतासे संबंधित होता है जिसका भोग से कोई ताल्लुक नहीं पर कामवासना देह को भोगने की कामना मात्र ही है. जब यह अति हो तो लालसा बन जाती है.

कामवासना का काम शब्द मात्र रति कर्म का संकेत है जिसका चरम योनीसुख है,पर अन्य क्षेत्र के नॉर्मल वर्क को भी काम बोला जाता है पर सामान्य कार्य का सम्बंध सेक्स रिलेटेड नहीं होता।

श्रद्धा और विश्वास न भी हो तो क्या तीर्थ या साधु के दर्शन सभी को समान फल देते हैं?

उत्तर– नहीं, महान फल के लिए भाव भी महान होना चाहिए मात्र देखने से अल्प पुण्य और दर्शन के साथ यदि संतत्व भाव हो तो और भी महा फल तथा उन संत में श्री शिव बुद्धि या श्री विष्णु बुद्धि हो तो और भी श्रेष्ठ परिणाम तथा उनकी वाणी को सुन कर सपमि में विससवू करो तो और भी महान फल अवश्य ही प्राप्त होता हैं ।

श्रद्धा का फल महान है पर बिना श्रद्धा के भी मानव यदि तीर्थ स्नान या संतों के दर्शन करता है तो कल्याण ही होता है। गंगा या नर्मदा जल या संतों के चरण अमृत की मात्रा एक बूंद भी किसी मनुष्य के मस्तक को छू जाए तो भी भयंकर पाप नष्ट हो जाते हैं फिर चाहे श्रद्धा हो या न हो, यद्यपि विनम्रता, विश्वास और श्रद्धा से अनेक गुना
लाभ मिलता है इसमें कोई शक नहीं।

कुछ जिज्ञासाएं और समाधान

जिज्ञासा 1 जो पिता अपनी कन्या का विवाह उचित वर के साथ नहीं करता उसकी क्या गति होती है?
समाधान : जो व्यक्ति अपनी कन्या का विवाह जल्दबाजी में या बिना सोचे समझे अथवा अपनी पुत्री को बोझ समझकर या अन्य कारण से नास्तिक, अज्ञानी, रोगी, गुणहीन, दरिद्र, मूर्ख, कुरूप, क्रोधी या अंगहीन या नपुंसक से कर देता है उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। अतः प्रत्येक पिता का कर्त्तव्य है कि वह अपनी पुत्री का विवाह शांत, गुणी, नवयुवक, विद्वान तथा साधु स्वभाव वाले या अनन्य भक्त वर से ही करे परंतु स्मरण रहे यदि पिता ने अपनी पुत्री में संस्कार भक्ति आदि उत्तम गुणों का समावेश नहीं किया और उस

कारण दामाद की भक्ति या अन्य क्रिया में विघ्न बाधा उपस्थित होती है तो भी उस पिता को घोर नरकों में भयंकर तीव्र वेदना का सामना करना पड़ता है।

जिज्ञासा 2 सुखी कौन होता है?
समाधान : मुझ प्रभु की पूजा करके नैवेद्य को मुझे अर्पित कर प्रसाद रूप को बांटकर फिर बचे हुए प्रसाद को जो स्वीकार करता है वह शीघ्र ही सुखी हो जाता है। जो शुभ कर्मों को करके उसका श्रेय गुरूदेव (मेरे अनन्य स्वरूप) या मेरे अनन्य भक्तों को देते हैं, परायी नारी को नहीं देखते, ऋतुकाल को छोड़कर (ऋतुकाल में भी विशेष तिथि देखें) अन्य तिथियों में भी संयम से रहते है एवं दूषित अहंकार नहीं करते तथा जो महत्त्वाकांक्षी नहीं होते एवं माता–पिता, गुरू सेवा या सत्संग, स्वाध्याय स्तोत्रादि से पूर्णतः निष्पाप हो जाते है, वे कभी दुःखी नहीं होते।

जिज्ञासा 3 शीघ्र कामनापूर्ति हेतु उपाय बताइए?
समाधान : 1. नित्य 1008 बार एक ही मंत्र को 40 दिन तक या 3300 मंत्र 40 दिन अर्थात् सवा लाख मंत्र का महाअनुष्ठान या केवल 9 दिन नवदुर्गाओं के समय में नियम, संयम पूर्वक अनुष्ठान करने से शीघ्र कामना की पूर्ति होती है।
2. श्रीलक्ष्मी माला धारण कर इंटरव्यू देने से सफलता की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है।
3. मलमास में वासुदेव–द्वादश–अक्षरी मंत्र **(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)** का अनुष्ठान शीघ्र ही मनोकामना पूर्ण करता हैपरंतु कनिष्ट वर्ग के अभक्त लोग मात्र ''नमो भगवते वासुदेवाय'' ही जपे। यह मलमास अर्थात् अधिक मास हमेशा 32 माह, 16दिन, 3 घंटे, 12 मिनिट बाद आता है। यह मास शुक्ल पक्ष से आरंभ होकर कृष्ण पक्ष तक रहता है।
4. **परम धनवान हेतु**–सात मुखी रुद्राक्ष मंत्रपूर्वक धारण मात्र से व्यक्ति सुखी होकर परम धनवान हो जाता है।
5. जो कोई भी दीक्षित शिष्य श्री गुरुगीता जी को शिवरात्री, नवरात्री, जन्माष्टमी या गुरुपूर्णिमा को पश्चिम दिशा की ओर मुख करके भोजपत्र पर अष्टगंध या चंदन की स्याही से लिखकर नित्य मात्र मानसिक रूप से भी पूजा करता है वह **1 वर्ष में ही श्री संपन्न** हो जाता है; परंतु हर वर्ष सदगुरु के चरणो में मथ्था अवश्य टेके।
6. **दीर्घायु संतान हेतु**–तुलसी कवच के त्रिकाल पाठ से भयंकर पापी या बांझ स्त्री भी निष्पाप होकर 12 माह के अंदर गुणवान, बुद्धिमान, कीर्तिवान एवं दीर्घायु संतान प्राप्त करती है। जिज्ञासा 4 में और भी उपाय है, जो अपना सके वह श्रद्धापूर्वक स्वीकार करे।

जिज्ञासा 4 मैं कुबेर का धन पाना चाहता हूँ क्या करूं?
समाधान :
(1) जो श्री गणेश अथर्वशीर्ष को सूर्यग्रहण के समय में सिद्ध करके 1000 बार भाद्रपद की गणेश चतुर्थी पर व्रतमय होकर अनुष्ठानपूर्वक 1000 दूर्वाओं को गौरीपुत्र को चढ़ाता है या एकादशी को अग्नि नहीं जलाता एवं उपवास कर द्वादशी को अनन्य भक्त, ज्ञाननिष्ठ या प्रभु को कर्मफल अर्पण करता हुआ मधुर भोजन अर्पित करता है वह कुबेर का धन शीघ्र ही पा लेता है।
(2) दामोदर अनुष्ठान महानतर महिमा :
जो बिना अन्य प्रयत्न के करोड़ों का स्वामी बनना चाहता है उसे स्कंदपुराणानुसार मात्र एक अनुष्ठान करना है और वह अनुष्ठान है श्री दामोदर महामंत्र (श्री दामोदराय नमः) का साढ़े तीन लाख मंत्र जाप का महान अनुष्ठान।
(3) **जे सकाम नर सुनहि जे गावहि।**
सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि।।
3300 मंत्र 40 दिनों या केवल 9 दिन नवदुर्गाओं के समय में या दिव्य अनुकंपा हेतु 6 माह तक मंदिर में बैठकर अथवा इस दोहे को संपुटित बनाकर राम चरित मानस युक्त नियम, संयम पूर्वक अनुष्ठान

करने से व्यक्ति सुखी होकर परम सम्पत्तिशाली हो जाता है।

(4) अष्टसिद्धि–नवनिधियाँ प्राप्त करने हेतु :

सवा लाख मंत्र का महाअनुष्ठान 40 दिनों में **ब्रह्मचर्य पूर्वक** निश्चित दिशा, निश्चित समय, निश्चित मंत्र संख्या ,निश्चित आसन, बिना लवण प्रयोग के श्रीगुरु एवं श्रीगणेश की मानसिक पूजा'गन्ध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य–प्रसाद अर्पित कर जपे।

गुरुसन्तोषणादेव मुक्तो भवति पार्वती।
अणिमादिषु भोक्तृत्वं कृपया देवि जायते।।

(5) मनचाही कामना पूर्ति के लिए :

सवा लाख मंत्र का अनुष्ठान 40 दिनों में ब्रह्मचर्य पूर्वक निश्चित दिशा, निश्चित समय, निश्चित मंत्र संख्या ,निश्चित आसन, बिना नमक प्रयोग के श्रीगुरु एवं श्रीगणेश की मानसिक पूजा'गन्ध, पुष्प, धूप, दीप एवं प्रसाद अर्पित कर जपे।

सर्वपापप्रशमनं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।

बिन्दु 14 में अचल लक्ष्मी का श्री राम दूत संबंधी उपाय निहित है।

जिज्ञासा 5 सुना है कि ऋद्धि–सिद्धि जी के स्वामी श्री गणेश जी (विघ्नहर्ता) को जो भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को प्रसन्न कर लेता है वह संपूर्ण धन, यश एवं पदादि से संपन्न हो जाता है। कृपया उन्हें शीघ्र प्रसन्न करने का कोई दिव्य रहस्य बताइए?

समाधान : सच ही है कि जो ऋद्धि–सिद्धि जी के स्वामी श्री गणेश जी (विघ्नहर्ता) को भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को प्रसन्न कर लेता है वह संपूर्ण धन, यश एवं पदादि से संपन्न हो जाता है उनको शीघ्र प्रसन्न करने का सर्वोपरि दिव्य रहस्य है **विघ्न विनाशक गणेश कवच।** यह कवच श्री गणेश जी को परम प्रिय है इसके जप, श्रवण या लेखन कर धारण मात्र से दसों दिशाओं में रक्षा होती है एवं उस श्रीवक्रतुण्ड भक्त का कोई भी कुछ भी अनिष्ट नही कर सकता। इसके कई प्रयोग है जैसे–

जेल के बंधन से छूटने हेतु :

श्री गणेश जी को दूर्वा एवं स्वयं के द्वारा बने शुद्ध मोदक चढ़ाकर 21 दिन तक नित्य 21 पाठ। अन्य भी किसी के लिए यह जाप कर सकता है।

जिज्ञासा 6 1 क्षण की क्रिया से 10 हजार गाय का पुण्य फल कैसे प्राप्त होता है?

समाधान : श्रीमद्देवी भागवत में माँ भुवनेश्वरी की स्वरूपा (तुलसी माँ) की अद्भुत महिमा है इसमें बताया है कि जो कार्तिक मास में श्रीहरि को 1 तुलसी का पत्ता भी अर्पित करता है वह मात्र इसी उपाय से 10 हजार गायों के दान का पुण्य प्राप्त कर लेता है तथा साथ में हजारों घड़े अमृत कलश से प्रभु को स्नान कराने का जितना फल प्राप्त होता है वह भी प्राप्त कर लेता है परंतु कुछ तिथियों (द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, सूर्य सक्रांति) एवं दोपहर, शाम, रात्रि, प्रातः का संध्याकाल अशौच के समय, बिना स्नान के एवं तेल लगाकर तुलसी नहीं तोड़ना चाहिए। जो मूर्ख व्यक्ति तेल लगाकर तुलसी पत्र तोड़ता है वह तुलसी पत्र न तोड़कर हरि की गर्दन काटता है तथा नरक में जाता है अतः कोई भी पूजा यदि शास्त्रोक्त विधि से या निष्काम भाव से या मानसिक रूप से की जाये तो ही उत्तम है एवं श्रीहरि के 28 नाम से तो हजारों गायों के दान का पुण्य प्राप्त होता ही है।

जिज्ञासा 7 शनि पीड़ा दूर हेतु क्या करे?

समाधान : प्रभु पिप्पलाद (रूद्रावतार) जी ने शनैश्चर की पीड़ा को दूर करने हेतु वरदान दिया है कि जो भी कोई शिव भक्त होगा (या 16 वर्ष तक की आयु का होगा) उसे कभी भी शनि की पीड़ा नहीं हो सकती। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि शनि देव साक्षात् शिवजी के शिष्य हैं और शिष्य को सर्वाधिक प्रिय अपने गुरूदेव की स्तुति ही होती है अन्य नहीं। अतः आप चाहे प्रभु के किसी भी रूप के भक्त हो परंतु प्रत्येक अष्टमी एवं सोमवार को इष्ट (शक्ति, हरि, कृष्ण, राधा या अन्य रूप) की खुशी हेतु एक बार

शिवलिंग पर जल अवश्य चढाएं या गुरूतत्त्व की कृपा हेतु नित्य श्री गुरू गीता जी का जाप करें।

जिज्ञासा 8 ब्राह्मण के 8 भेद क्या है ?
समाधान : (1) मात्र (2) ब्राह्मण (3) श्रोत्रिय (4) अनुचान (5) भ्रूण (6) ऋषिकल्प (7) ऋषि (8) मुनि।

यह श्रुति में वर्णित 8 प्रकार के ब्राह्मण समझने योग्य हैं। इनमें विद्या और सदाचार की दृष्टि से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ है। सर्वश्रेष्ठ मुनि पद धारी हैं विस्तार से देखे।
(1) मात्र ब्राह्मण, जो जन्म मात्र से ब्राह्मण कुल का है परंतु वेदपाठी नहीं है, गायत्री द्वारा त्रिकाल संध्या नहीं करता, उपनयन संस्कार से विहीन है वह नाम मात्र का होने से मात्र कहा जाता है।
(2) ब्राह्मण जो जाति से युक्त होकर सत्यवादी एवं दयालु है वह इस वर्ग के अंतर्गत आता है।
(3) वेद की किसी एक शाखा का जानकर और ब्राह्मणोचित 6 कर्मों में संलग्न
(4) 4 वेदों और वेदांगों का तत्त्वज्ञ, पापरहित, शुद्ध चित्त, श्रेष्ठ, श्रोत्रिय विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला अनुचान ब्राह्मण है।
(5) जो अनुचान के गुणों से युक्त होने पर घर में ही रहकर यज्ञ और स्वाध्याय (परम तत्त्व की जिज्ञासा वश) में स्थित है वह भ्रूण ब्राह्मण है।
(6) जो संपूर्ण ज्ञान पाकर आश्रम में निवास करता हो वह ऋषिकल्प है सत्य ही है। अधिक का फल अधिक ही है। घर में रहकर ब्रह्मज्ञान में स्थिति का अलग फल है। गुरू आश्रम में रहकर व ब्रह्मज्ञानी गुरू (दीक्षागुरू) की सेवा के साथ आश्रम में रहकर सेवा अलग बात है।
(7) **जो नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो, गुरू आश्रमी हो**, शाप और अनुग्रह में समर्थ हो, वेदों का ज्ञानी हो, भोजन नियमित करता हो, सत्यनिष्ठ हो **वह ऋषि नामक ब्राह्मण कहा जाता है।** परंतु स्मरण रहे गुरूगीता जी में ऋषियों ने भी सूत जी से (जातिगत विलोमज परंतु ब्रह्मज्ञानी) प्रार्थना की है कि हमें कृपया गुरू रूपी ब्रह्म विद्या का विज्ञान प्रदान करो। अतः कहा जा सकता है कि नैष्ठिक ब्रह्मचर्य से युक्त, शाप और अनुग्रह से समर्थ, सत्यनिष्ठ से भी वह अद्वैत वादी श्रेष्ठ है जो गुरू विद्या (गुरू में साक्षात् ब्रह्म रूपी सदाशिव विद्या या परमेष्ठी शिव विद्या का पालन कर सेवा मात्र उन्हीं में द्वैत बुद्धि से सेवा करने वाला आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी ऊँ कार रूपी सर्वमयता का जानकर) को जानता है और अभेद दृष्टा या अभिन्न भावी ब्रह्मभावी होने से ब्रह्मदाता है।
(8) जो गुरूमार्गी, **अद्वैतवादी होने के साथ निवृत्ति मार्गी** (नैष्ठिक ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, ब्रह्ममय मात्र) है। संपूर्ण तत्त्वों का ज्ञाता है मिट्टी और स्वर्ण को समान समझने वाला, कर्मफल त्यागी है वह महा मुनिपद धारी है।

जिज्ञासा 9 शीतल जल दान का क्या फल है?
समाधान : जो प्यास से पीड़ित महात्मा पुरूष के लिए शीतल जल दान करता है वह इसी से 10 हजार राजसूय यज्ञों का फल पा लेता है एवं वैशाख मास मे जो चरण पादुका (ज्ञाननिष्ठ, सद्गुरू, ब्रह्मवेत्ता, मुनि, ऋषि, भक्त या योग्य ब्राह्मण को) दान करते हैं वह यमदूतों का तिरस्कार करके विष्णुलोक में जाते हैं।

जिज्ञासा 10 जाति से श्रेष्ठ ब्राह्मण भी यदि दुराचारी हो, अजितेन्द्रिय हो तथा दयालुता से रहित, गुरू निन्दक हो तो उसको दान करना चाहिए या नहीं?
समाधान : जाति से श्रेष्ठ ब्राह्मण भी यदि दुराचारी हो, अजितेन्द्रिय हो तथा दयालुता से रहित, गुरू निन्दक हो तो उसको दान कभी नहीं करना चाहिए। इसका कोई फल नहीं मिलता। अपितु उस ब्राह्मण को दिया यह दान उसी को नष्ट करता है अतः ऐसा ब्राह्मण दान न ले यदि ऐसा ब्राह्मण–
(अ) भूमि लेता है तो उसका अंतःकरण नष्ट होता है।
(आ) गाय.........उसके भोगों की वस्तु नष्ट होती है।
(इ) स्वर्ण............उसके शरीर का नाश करता है।
(ई) घोड़ा.............उसके नेत्र का नाश करता है।
(उ) वस्त्र लेता है तो उसकी स्त्री का नाश होता है।
(ऊ) घी..........उसके तेज का नाश करता है।

(अं) तिल...........उसकी सन्तान का नाश करता है।

मूर्ख और पापी ब्राह्मण थोड़ा भी दान लेकर कीचड़ में फंसी गाय की भांति कष्ट पाता है। इसी कारण शिवपुराण में कहा है कि ज्ञाननिष्ठ तथा तपोनिष्ठ या भक्त व्यक्ति (जो कि परम विप्र कहा जाता है) सदा ही पूजा एवं सेवा का परम पात्र है परंतु जातिगत ब्राह्मण को यदि भक्ति, तपोनिष्ठता, पराविद्या (गुरूविद्या) या अद्वैत ज्ञाननिष्ठता प्राप्त नहीं हुई या त्रिकाल संध्या से रहित होकर 24 लाख गायत्री से भी रहित हो तो भी वह अपात्र ही है।

इस कारण हे अर्जुन! मैं नारद देश–देश घूमकर ब्राह्मणों की परीक्षा करता हूँ यदि वे मेरे प्रश्नों का सटीक उत्तर देते हैं तो ही पात्र समझकर दान करता हूँ अन्यथा छोड़ देता हूँ।

जिज्ञासा 11 प्रभु वास्तव में क्या कहना चाहते है?

समाधान : श्री हरि–हे अर्जुन! (अर्थात् हे नर!) मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा। इसके उपरान्त तू मुझमें ही निवास करेगा; इसमें कुछ भी संशय नहीं है। (12/8 गीता)

जिज्ञासा 12 मैं चाहता हूँ कि मेरे घर में साक्षात् प्रभु रहें परंतु तपस्या व्रतादि नहीं होते क्या करूं?

समाधान : साक्षात् श्री हरि जी ने कहा है कि–'जो अपने घर में सुंदर अक्षरों में श्रीमद् भागवत के मात्र एक श्लोक को लिखकर मात्र प्रणाम करता है। मैं सदा के लिए उस घर में प्रवेश कर जाता हूँ अतः चिन्ता न करो केवल स्नान कर लाल कलम चलाने की देर है और बस प्रभु आपके घर में....परंतु स्मरण रहे उस घर में मांस, मदिरापान या अन्य पापकर्म नहीं होना चाहिए अन्यथा.........,समझ लेना।

जिज्ञासा 13 मैं सदा पापों से निर्लिप्त रहना चाहता हूँ क्या करूं?

समाधान : जो वैशाख या कार्तिक के मास के अंतिम तीन दिनो में गीता जी के संपूर्ण 700 श्लोकों का श्रवण या स्वाध्याय करता है वह शाब्दिक, मानसिक एवं छोटे मोटे पापों से कभी भी लिप्त नहीं होता ।

जिज्ञासा 14 इंद्र बनने का सरलतम उपाय क्या है?

समाधान : किसी को यदि इंद्र पद चाहिए तो 100 अश्वमेध यज्ञ करने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि प्रभु ने पुराणों में एवं धर्म शास्त्रों में ऐसे–ऐसे उपाय बताए हैं जिनको करके कोई भी बिना करोड़ों धन खर्च किए देवताओं का स्वामी इंद्र (वर्तमान पुरन्दर की भांति) बन सकता है। उन उपायों में 2 उपाय निम्नलिखित हैं।

(अ) गीता (श्रीमद्भागवत) जी के 18वें अध्याय के मात्र 5 श्लोक (नित्य पाठ) से कोई भी सकामी व्यक्ति मृत्युपरांत स्वर्ग में भोग्यकाल के बाद पुरन्दर इन्द्र की आयु पूर्ण होने के बाद एवं राजा बलि (भावी इन्द्र) का समय पूर्ण होने के बाद इन्द्र पद पर बैठ सकता है क्योंकि मात्र 5 श्लोकों का प्रतिदिन पाठ 100 अश्वमेध यज्ञों से भी अधिक फल देता है। गीता माहात्म्य के अनुसार (18वें अध्याय के अंतर्गत) भूतकाल में इस उपाय से एक भक्त इंद्र बन भी चुका। आगे और भी सकामी बनते रहेंगे।

(आ) जहाँ श्रीमद्भागवत महापुराण विराजमान होती है वहाँ तक पहुँचने में यदि 100 कदम पूर्ण हो जाते हैं तो भी 100 अश्वमेध यज्ञों का फल तत्क्षण प्राप्त हो जाता है। कहने का तात्पर्य है कि श्रीमद्भागवत महापुराण के समीप जाने हेतु प्रत्येक पग पर 1–1 अश्वमेध यज्ञ का पुण्य साधक को प्राप्त हो जाता है।

जिज्ञासा 15 क्या जप, स्वाध्याय आदि का कोटि गुना फल घर पर भी प्राप्त किया जा सकता है?

समाधान : नहीं; क्योंकि जप, स्वाध्याय पूजा आदि के फल स्थान, माला, समय और दिशादि पर निर्भर करते है, मात्र घर पर नहीं।

यज्ञ, पूजा, जाप, स्वाध्याय, दान, तपादि हेतु–घर में 1 गुना फल, गौ शाला (या जहाँ गाय बंधी हो) का 10 गुना फल, जलाशय (तालाब) का तट 100 गुना फल जहाँ बिल्व, तुलसी या पीपल वृक्ष का मूल हो वह स्थान 1000 गुना, देवालय (मंदिर) 10 हजार गुना, तीर्थ भूमि का तट जहाँ भले नदी न हो 1 लाख गुना, नदी का किनारा 10 लाख गुना, तीर्थ नदी का फल (गंगा जैसे पवित्र न हो फिर भी) 1 करोड़ गुना

और सप्त गंगा नामक नदियों (गंगा, गोदावरी, कावेरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू और नर्मदा) का तीर्थ 10 करोड़ गुना फलदायी है। ब्रह्मज्ञानी सद्‌गुरू के समीप से अनंत गुना (अक्षय फल) फल प्राप्त होता है।

अर्थात् घर पर ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः या ऊँ नमः शिवाय जपने पर, पूजा करने पर 1 गुना फल प्राप्त होगा परंतु गंगा नदी के किनारे (हरिद्वार में, या नासिक में, इलाहाबाद या काशी जहाँ सप्त गंगा में से एक गंगा है।) वही प्रक्रिया की जाए तो 10 करोड़ बार ऊँ नमः शिवाय का फल प्राप्त होता है। मकर संक्रांति, चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण के समय पर सैकड़ों, लाखों गुना फल (उपर्युक्त गणना की तुलना में) यथा स्थानों के प्रतिशत अनुसार बढ़ जाता है। जन्म नक्षत्र के दिन भी सूर्यग्रहण के सदृश फल प्राप्त होता है।

जिज्ञासा 16 साक्षात् श्री राम सा एवं शिव सा पुत्र पाने हेतु क्या उपाय है ?
समाधान : मार्गशीर्ष के महीने में कन्द, मूल, फल मय उपवास करे एवं शुद्ध जल के भीतर खड़ा होकर एक लाख **रां रामाय नमः** जपे एवं अग्नि में खीर की आहुति दे तो साक्षात् श्री राम सा पुत्र पाकर श्री दशरथ जी जैसा पावन हो जाता है।

शिवपुराण एवं स्कंद पुराण काशीखण्ड में वर्णित ''**अभिलाषाष्टक नामक** पवित्र अद्वैतमय स्तोत्र'' को तीनों समय लगातार एक वर्ष तक स्वाध्याय/जप करने मात्र से शिव सा सर्वोत्तम पुत्र रत्न प्राप्त होता है जो अनन्य भक्त एवं **परम अद्वैत ज्ञाननिष्ठ होकर सर्वज्ञ हो जाता है।**

वास्तव में अध्यात्म ही एक मात्र कल्याणकर्ता, सभी आशाओं एवं कामनाओं को पूर्ण करने वाला है और अंत में अनासक्ति रूपी सिद्धि देकर कैवल्या दाता भी है।

अध्यात्म ने ही आस जगाई

अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।
जगत में नही है कोई किसी का,
दारा सुत के फेरे में
दुनिया पूरी धोखा खायी।
अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।

एक पल के भी चिन्तन ने,
चिता में ही चिन्ता जलायी।
दिव्य महिमा नटवर की,
और मेरे प्रियवर की,
आत्मा दुल्हन सी सजाई।
अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।

सर्वमय अद्वैत पाकर भी,
द्वैतमय गुरुता पायी।
होकर सर्वज्ञ सोऽहं से,
अहम् ब्रह्मास्मि निजता से,
भूली शक्ति पुनः ही पायी।
अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।

कृष्ण कान्हा बनकर शम्भु,
विश्रान्ति हेतु गीता बनायी,

हे शिव भोले करो सहाई ।
आशुतोष की अनन्त दया से,
अखियाँ मेरी भर–भर आयी।
अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।

अभिन्न तत्त्व से राधा होकर,
हृदय–वेदना विरहता पायी।
दिल में काहे आग लगायी,
कर्ण प्यारे भी सकुचित से,
अभी भी क्यों न मुरली बजाई।
अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।

अंशभूत शिव नित्य पुकारता ,
अपरोक्ष ज्ञान से प्रभुता पाई।
क्षणिक–सुख–सौन्दर्य में क्या रखा है,
जीव तू करले शिव–सगाई ,
माया करेगी क्या भलाई।
अध्यात्म ने ही आस जगाई
जीवन शैली महान बनायी।

जिज्ञासा 17
ऋतुकाल–नियम क्या है?

समाधान : यह गृहस्थ को स्वर्ग अथवा नरक में डालने वाला 16 दिवस युक्त रात्रि का काल है, जिसमें आरम्भ के ऋतुचक्र के 4 दिनों का समय स्त्री–संसर्ग हेतु वर्जित है। इस चौथी अशुद्ध रात्रि में भी सहवास करने वाले का पुत्र 25 वर्ष से अधिक जिन्दा नहीं रहता; क्योंकि नारी की इस भयंकर अशुद्धावस्था में ब्रह्महत्या रहती है। ऋतुचक्र के आरंभ की तिथि से छटवीं, आठवीं, 10,12,14 एवं सोलहवीं रात्रि के पत्नि संसर्ग से (परंतु रेवती, मूल, आश्लेषा, तथा मघा नक्षत्र न हो एवं निर्वस्त्रयुक्त क्रिया न हो) सदैव बेटे का ही जन्म होता है तथा अयुग्म रात्रि 5वीं, 7,9,11,13,15वीं रात्रि के सहवास से बिटिया का जन्म होता है, परंतु यह सभी अयुग्म रात्रि सुलक्षणा कन्या नहीं देती अपितु 7वीं रात से जो पुत्री होती है वह तो भविष्य में कभी माता भी नहीं बन सकती, 11वीं रात के संभोग से विकलांग पुत्री पैदा होकर दुख देती हैं अतः इस रात को प्रजा/संतान के विषय में भूलकर भी न सोचे और जीवन का परम लक्ष्य शिव, हरि या पराशक्ति की भक्ति में मन लगाये, अन्यथा वह आपको ही भयंकर तनाव देगी) या व्यर्थ क्षणिक सुखों की क्रियाएं छोड़कर मदालसा जी के अनुसार एवं गीता 18/66 सारानुसार मात्र अनन्यभक्ति ही करे तो परम बेहतर होगा।

इन 16 दिनों "इनमें भी चार दिन ऋतुचक्र को त्याग दे" के अतिरिक्त शेष 12 दिनों में व्यक्ति भूलकर भी परायी तो क्या अपनी पत्नि के नाशवान शरीर को भी वासना की दृष्टि से न देखे क्योंकि शेष 12 दिनों में नारी संसर्ग से नरक की प्राप्ति होती है। पर्व, नवदुर्गा, शिवरात्रि, होली, दीपावली, कान्हा जयंती तथा संध्याकाल में, सुबह एवं तीर्थो के स्थान में भी संयम से रहे। कल्याण का महामन्त्र यही है। यही है। यही है। –मार्कण्डेय पुराण

जिज्ञासा 18 वर्ष भर ऐसा ही होगा परंतु कैसा होगा?

समाधान : कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (वैष्णवी) अर्थात् दीपावली के अगले दिन अर्थात् गोवर्धन पूजा के दिन में मनुष्य जिस रूप या स्थिति में होता है वर्ष भर उसी के अनुसार रमण करता है अर्थात् आज की घटना के समान ही अगले वर्ष तक की घटनाएं घटती हैं। अतः इस दिन पाप न करें, अन्यथा अगली गोवर्धन पूजा

तक पापात्मक क्रियाएं ही होती रहेंगी। गो का दूध दुहने का काम भी न करे। पशुओं पर बोझ न ढोएं (एकादशी को भी यह कार्य न करे) स्वाध्याय करे।

स्तोत्र या कवच का पाठ करे। गणेश जी का एक पाठ अवश्य करे। गो, गंगा तथा गुरू सेवा करें।

जिज्ञासा 22 भयंकर संकटों से मुक्ति हेतु क्या करें?
समाधान : भयंकर संकटों से मुक्ति हेतु उपाय

अ भगवान कार्तिकेय जी के 108 नाम (विश्वामित्र रचित स्कन्द–नाम) जो भी ब्रह्मचर्य पूर्वक 1 मास **(30 दिन) तक** जपेगा वह भयंकर संकटों से दूर हो जाएगा।

–स्कंद पुराण......कुमारिका खण्ड

आ शिवसहस्त्रनाम स्तोत्र के 108 पाठ जो स्वयं करता या योग्य ब्राह्मण से कराता है वह भयंकर संकटों से दूर हो जाता है।नवदुर्गा समय में 12 पाठ नित्य **9 दिन** तक या 3 पाठ,36 दिनों तक भी कर सकते है। परंतु जितने दिनों का संकल्प हो उतने दिनों तक ब्रह्मचर्य अनिवार्य एवं जीवों की हिंसा,मांस,मदिरा निन्दा आदि भी वर्जित है।

इ एक एव परो बन्धुविषमे समुपस्थिते।
गुरुः सकलधर्मात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।।

जो भी ब्रह्मचर्य पूर्वक **21 दिन** नित्य 11 माला जपता है, वह भयंकर संकटों से दूर हो जाता है।

ई गणेश अथर्वशीर्ष पाठ को जो ब्रह्मचर्य पूर्वक **21 दिन** तक नित्य 21 पाठ करता है वह भयंकर संकटों से दूर हो जाता है।

उ जो भी श्री हनुमान चालीसा का 108 पाठ कम से कम नित्य 11 दिनो तक पवित्रता पूर्वक करता है वह भी भयंकर संकटों से मुक्त हो जाता है।

ऊ एवं देश पर आए भयंकर संकट से रक्षा हेतु एक करोड़ बार मृत्युंजय मंत्र का जाप योग्य ब्राह्मणों द्वारा अनिवार्य है।दस लाख मंत्र इष्ट मंत्र लेखन भी यदि पवित्रतापूर्वक किया जाये या करवाया जाये तो भी रक्षा प्राप्त होती है; परंतु जो भी इस अनुष्ठान को करे वह यदि 10 लाख मंत्र होने तक संयम, ब्रह्मचर्य का पालन करे तो ही महान सिद्धि होती है।

जिज्ञासा 23 जो विवाह का इच्छुक हो उसे किससे विवाह करना चाहिए?
समाधान : पतिव्रता के पुण्य से पिता, माता और पति के कुलों की 3–3 पीढ़ियों के लोग स्वर्ग लोक में सुख भोगते हैं। बिना पतिव्रता स्त्री के गृहस्थ का घर श्मशान के तुल्य होता है। पतिव्रता नारी एवं गंगा में कोई भेद नहीं है।

इसलिए **नारद पुराण** में कहा है कि जो विवाह का इच्छुक हो उसे भोगी, रोगी, ओछे विचारों की, कामी,निन्दक, अभक्त, महत्त्वाकांक्षी, वाचाल,कलहप्रिया एवं अपतिव्रताभावी स्त्री से भूलकर भी विवाह नहीं करना चाहिए। ऐसी न मिले तो **शिवपुराण** के अनुसार 'भगवान की वाणी के अनुसार' समझे कि उस महत्त्वाकांक्षी नारी के रूप में उसे साक्षात् राक्षसी ही प्राप्त हुई है।

देवी भागवत में श्रीहरि के अनुसार दुर्गणों से युक्त पत्नि के लिये बताया है कि वह सिंह आदि हिंसक जीवों से भी खतरनाक, नित्य तिल–तिल कर मारने वाला भयंकर पशु प्राप्त हुआ है न कि पत्नि ।आगे यह भी कहा गया हे कि 'अतः घर की अपेक्षा **ऐसे शादीशुदा को** वन ही अधिक लाभदायक है।'; परंतु भक्तिमती तो मीरा की भांति और भी महान होती है। वैराग्यवान, अनासक्त स्त्री अथवा वैराग्यवान पुरूष को मात्र 1 कल्प तक ब्रह्मलोक प्राप्त होता है; परन्तु भक्त को दिव्यतम पद।

जिज्ञासा 24 यदि वैराग्य हो जाए तथा मुमुक्षा जाग जाए तो क्या करना चाहिए?
समाधान : यदि वैराग्य हो जाए तथा मुमुक्षा जाग जाए तो ब्रह्मचर्य आश्रम से सीधे ही (श्री रामानन्द, शंकराचार्य, विवेकानन्द, कार्तिकेय जी की भांति) संन्यास धर्म स्वीकार किया जा सकता है। श्रीमद्भागवत जी में भी बताया है कि नैष्ठिक ब्रह्मचर्य वाला सीधे ही मूर्तिमान वेदों के लोक (सत्यलोक) को जाता है।

श्री हरि ने कहा है कि–श्रेष्ठ बुद्धिमान साधक को गुरूसेवा की स्वतंत्रता के लिए तथा अनन्य भक्ति

की प्राप्ति हेतु (चैतन्य महाप्रभु की भांति) धातु (रूपया आदि), स्त्री (पत्नि, अन्य युवती) चंचलता को मृगतृष्णा रूप समझकर तथा भयंकर विघ्न रूप जानकर त्याग देना चाहिए। श्रीमद्भागवत् दशम स्कंध के अस्सीवें अध्याय के चौतीसवें श्लोक का सार भी मात्र कैवल्य पद की आधार शिला अद्वैत ज्ञाननिष्ठता है न कि व्यर्थ के क्रियाकलाप। वैसे भी हृदय की ग्रन्थि का छेदन करने वाला अमृत वाक्य अथवा वाक्यों का संग्रह ही ग्रन्थ कहलाता है न कि ऐसा वाक्य जो भवरोग, जो पुनर्जन्म का हेतु हो।

वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है

हृदय–ग्रन्थि जो छिन्न करदे,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।
जीव को जो शिव बना दे,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

द्वैतमय जो भेद मिटा दें ,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।
जिसमें प्रकाश की जीवन ज्योति,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

एक बार जो मरना सिखा दे,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।
अनासक्त, अपरिग्रही जो बना दे,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

सिखाता संयम ब्रह्मचर्य का,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।
अभिन्नता का दाता जो,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

तृष्णा को जो भष्म कर दे,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।
शिवत्व के जो रंग में रंग दे,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

रामेश्वर की जो भक्ति दे दें
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।
शाश्वतता् की जो याद दिला दें,
वही वाक्य ग्रन्थ कहलाता है।

जिज्ञासा 25 जो पति अपनी विनीत पत्नि का सम्मान/आदर नहीं करता अपितु उसके साथ अभद्रता का व्यवहार करता है उसकी क्या गति होती है?

समाधान : जो गृहस्थ मानव अपनी विनीत पत्नि का अनादर करता है एवं तन, मन और धन से पीड़ित रखता है वह स्कंद पुराण के अनुसार अगले 15 जन्मों तक नपुंसक बनता है एवं दुःखी होकर त्रिविध तापों से युक्त रहता है अतः जो कर्त्तव्य एक आदर्श पति के लिए शास्त्रों में बताए गए हैं उनका पालन प्रत्येक गृहस्थ मानव को करना ही चाहिए। ऐसा नहीं कि संपूर्ण नियम मात्र पतिव्रता स्त्रियों के लिए ही बनाए गए हैं।

पत्नि को पति का अर्धांग बताया गया है इस कारण जो 50 फीसदी नियम पत्नि के लिए है उतने ही 50 फीसदी नियम पति के लिए बनाए गए हैं। दोनों का सम्मिश्रण ही गृहस्थ के लिए पूर्ण नियम माना

जाता है। जिस प्रकार नारी यदि कोई पाप करती है तो उसके पाप का अधिकांश भाग पति को भी भोगना पड़ता है क्योंकि पति को एक प्रकार से पत्नि के कर्मों का कंट्रोलर एवं पत्नि को पति के अर्धांग के कारण सलाहकार रूप के कारण पति के कुछ विशेष कर्मों का कंट्रोलर माना जा सकता है।

जिज्ञासा 26

सबसे श्रेष्ठ देव कौन है?

समाधान : शरीर से जिसके निकल जाने पर शरीर गिर जाता है उसकी क्रिया विधि बंद हो जाती है और शरीर सड़ने लगता है, जिसके प्रवेश करने पर शरीर पुनः उठकर खड़ा हो जाता है उसमें नव चेतना आ जाती है जो एक मात्र कर्ता, हर्ता, एवं भर्ता है एकमात्र वही परम साक्षी दृष्टा एवं सर्वज्ञ है। वही तत्त्व श्रेष्ठ देवता है। यह तत्त्व सर्वमय है इस तत्त्व से बड़ा न तो कोई है और न ही कोई होगा। यह तत्त्व मात्र एक है दूजा नहीं और यह प्रणव मात्र है। विभिन्न–विभिन्न नाम और रूपों में एक मात्र यही सर्वव्याप्त है। शिव, राम, कृष्ण, शक्ति, अथवा अन्य कोई भी रूप हो सबका तत्त्व मात्र प्रणव ही है।

जिज्ञासा 27

ऐसा कौन सा व्रत है जिससे पति की आयु लंबी होती है, संतान नहीं मरती, संपूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं, दीर्घायु एवं सुदंरता बढ़ती है तथा प्रत्येक कामना पूर्ण होती है।

समाधान : यह व्रत पुंसवन व्रत कहलाता है; परंतु यह व्रत 1 वर्ष का होता है इसमें नियम लेकर इसे छोड़ा जा सकता। यदि इस व्रत की पूजा को किसी विशेष परिस्थिति अथवा अशुद्ध अवस्था के कारण पत्नि न कर सके तो पति भी कर सकता है। इस व्रत से अभागन स्त्री भी साक्षात् सीता और पार्वती जैसी परम् सौभाग्यवती हो जाती है। वह संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली धन, यश, कीर्ति से संपन्न हो जाती है। उसके पति की आयु दीर्घ हो जाती है। उसकी संतान किसी भी प्रकार से पतन को प्राप्त नहीं होती। यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल पडवा से आरंभ होकर वर्ष भर पूर्ण नियम संयम का पालन करने से सिद्धि देता है। परंतु यह व्रत पत्नि अपनी पति की आज्ञा लेकर ही करे; क्योंकि इस व्रत में पवित्रता अनिवार्य है। इसमें इष्ट लक्ष्मीनारायण (जोड़ा) की पूजा सेवा नित्य होती है। विस्तार से जानने के लिए श्रीमद्भागवत पुराण के प्रथम खण्ड का स्वाध्याय करें; एवं योग्य ब्राह्मण से विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

देवी रहस्य
(भाग प्रथम)
शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र
ऋग्वेद
शीघ्र कल्याणकारी
कालखण्ड

ग्रंथ रहस्य

ग्रंथ रहस्य

शंकराचार्यांश ब्रह्मानंद अक्षयरुद्र

प्रकाशित पुस्तकें–

1.अक्षय आनन्द
2.ग्रंथ रहस्य
3.भैरव गीता
4.स्तोत्र निधिवन भाग एक
5.स्तोत्र निधिवन भाग द्वितीय
6.महिमा
7.जिज्ञासा और समाधान
8.नारी जीवन एक संघर्ष
9. संसार में कितना सुख
10. संभोग से समाधि किस किसकी लगी (मिथ्या या सत्य)
11. शिव चरित मानस भाग प्रथम
12.शिव चरित मानस भाग द्वितीय
13. दुष्कर्म और नरक की यातनाएं
14. ब्राह्मण गीता
15.शास्त्रों के अद्भुत रहस्य
16.शीघ्र कल्याणकारी कालखण्ड
17. मैं ब्रह्म हूँ
18. देवी रहस्य महाग्रंथ
19. आपके प्रश्न
20.अक्षयरुद्रस्य समाधान सरिता
21.परब्रह्म विश्वनाथशिव स्तोत्रम्
22.ज्ञानहीनो गुरुत्याज्यो